हिन्द पॉकेट बुक्स की परम्परा रही है कि अपने लाखों-करोड़ों पाठकों को सुन्दर, सस्ती एवं सुरुचिपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध कराते रहें। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए प्रगति पुस्तक माला का आयोजन किया गया है जिसमें ज्ञानवर्द्धक, प्रेरणाप्रद, रोचक एवं मनोरंजक पुस्तकों का विशिष्ट आकार एवं नयनाभिराम रूपसज्जा में सतत् प्रकाशन किया जा रहा है।

चंद्रलोक की यात्रा

100 साल से भी अधिक समय से जो कहनियां पाठकों के मन-मस्तिष्क में छाई रहती हैं। अमेरिका में जन्मे और सारी दुनिया में जिस लेखक को लोकप्रियता मिली। जिसकी कहानियों को साहित्यिक रचना होने का गौरव मिला।

प्रगति पुस्तक माला

Rs. 15/-

हिन्द पॉकेट बुक्स

ISBN 81-216-0505-9
AHW HPB HINDI SERIES

चंद्रलोक की यात्रा
एडगर एलन पो
HP-2508

एडगर एलन पो

चंद्रलोक की यात्रा



एडगर एलनपो

चन्द्रलोक की यात्रा

हिन्द पॉकेट बुक्स

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

चन्द्रलोक की यात्रा (आत्म-विकास)

प्रथम संस्करण : 1996
आवरण : धर्मवीर
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
दिलशाद गार्डन, जी.टी. रोड (शाहदरा), दिल्ली-110 095
टाइप सेटिंग : एस.पी. प्रिंटेक, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110 092
मुद्रक : कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

CHANDRA LOKE KI YATRA (Stories of Suspense)
EDGAR ALLANPOE
ISBN 81-216-0499-10

क्रम

काल की हंसिया

वह एक निस्तब्ध और शान्त दोपहरी थी, जब मैं एडिना की सुन्दर नगरी में चहलकदमी करने को निकल पड़ी। सड़कों पर भयानक अस्तव्यस्तता और कोलाहल था। पुरुष बात कर रहे थे। औरतें चीख रही थीं। बच्चों का दम घुट रहा था। शूकर के छौने सिसकारी दे रहे थे। छकड़े चड़घड़ा रहे थे। बैल हुंकारते थे। गाएं रंभा रही थीं। घोड़े हिनहिनाते थे। बिल्लियां म्याऊं कर रही थीं। कुत्तें नाच रहे थे। *नाच रहे थे!* क्या वह सम्भव था! *नाच रहे थे!* हाय! मैंने सोचा, मेरे नाचने के दिन बीत गए। सदा से ऐसा ही होता है। कैसी दुःखद स्मृतियां ऐसे प्रतिभावान और कल्पनाशील मानस में सदा पैदा होती रहेंगी—विशेषतः ऐसी प्रतिभा में जो अनन्त, शाश्वत, और अविराम, और जिसे कोई कह सकता है, *जारी रहने वाली*, हां जारी रहने वाली और सनातन, तीक्ष्ण, संतापकारी, विघ्नकारी शक्ति के

वश में हो और यदि मुझे कहने दिया जाए तो कहूंगा, कि जगत् की अत्यन्त स्पृहणीय, सचमुच सपृहणीय, बल्कि अत्यन्त सुन्दर तथा अत्यन्तस्वादिष्ट एवं सुकुमार शक्ति के भव्य एवं देवोपम, एवं स्वर्गोपम एवं गौरवकारी तथा उच्च एवं अत्यन्त विघटनकारी प्रभाव से आक्रान्त हो। किन्तु मैं अपनी भावनाओं में बही जा रही हूं। तो मैं दोहराती हूं कि ऐसे मन में, ज़रा-सी बात देखकर कितने स्मृतिपुंज उठ खड़े होते हैं। कुत्ते नाचते थे। मैं, मैं नहीं नाच सकती! वे किलोल करते थे। मैं रो पड़ी। वे उछलते थे। मैं ज़ोर से सिसक उठी। कैसी हृदयद्रावक थीं ये परिस्थितियां– परिस्थितियां, जो पाठक के मन में उस सुन्दर लेखांश की स्मृति जागरित कर देती हैं जिसे प्रशंसनीय एवं सम्मानित चीनी उपन्यास 'जो-गो-स्लो' के तृतीय भाग के आरम्भ में देखा जा सकता है।

नगर के बीच मेरे एकान्त भ्रमण में मेरे साथ थे दो तुच्छ किन्तु निष्ठावान संगी। मेरी बिल्ली! प्राणियों में मृदुतम! उसकी एक आंख पर वालों का गुच्छा था, कण्ठ में सुन्दर ढंग से एक नीली पट्टी बंधी थी। डायना (बिल्ली) ऊंचाई में पांच इंच से अधिक नहीं थी, किन्तु उसका सिर उसके शरीर की अपेक्षा कुछ बड़ा ही था, और उसकी दुम, शरीर के निकट से कटी होने के कारण व्यथापूर्ण निर्दोषता का परिचय देती थी। इसीलिए वह सबकी प्रिय हो गई थी।

और पाम्पी, मेरा नीग्रो सेवक–भले पाम्पी! मैं तुझे कैसे भूल सकूंगी! मैं पाम्पी के कन्धे का सहारा लेकर चल रही थी। ऊंचाई में वह तीन फुट था (मैं ठीक-ठीक लिखना चाहती हूं) और उम्र में सत्तर, या शायद अस्सी का रहा होगा। वह धनुष्पदी और स्थूलकाय था। उसके मुंह को छोटा नहीं कहा जा सकता; न उसके कान ही छोटे थे। उसके दांत तो मोती जैसे थे और उसकी बड़ी-बड़ी आंखें रसीली और शुभ्र थीं। प्राकृति ने उसे कण्ठ दिया ही नहीं था; उसके टखने तो उसके पांव के ऊर्ध्वभाग में स्थित थे। वह अत्यन्त सादी पोशाक में था। उसकी कुल पोशाक थी, 9 इंच ऊंचा जांघिया, और लगभग नया बादामी ओवरकोट जो पहिले लम्बे, शानदार और भव्य डा. मनीपेनी की सेवा में आ चुका था। अच्छा ओवरकोट था वह, अच्छी तरह कटा और बना हुआ। धूल में लिथड़ने से बचाने के लिए पाम्पी उसे दोनों हाथों से उठाए हुए चल रहा था।

हमारे दल में तीन प्राणी थे, जिनमें से दो का वर्णन किया जा चुका। एक तीसरा प्राणी था और वह तीसरा प्राणी मैं ही थी। मैं हूं सिनोरा साइक ज़िनोबिया। मैं सूकी स्नाब्स नहीं हूं। मेरा रूप-रंग शानदार है। जिस स्मरणीय अवसर की मैं बात कर रही हूं उस अवसर पर मैं अरुण साटिन की पोशाक तथा नीलाकाश के रंग का गाउन पहिने हुए थी और मेरी पोशाक में हरित मोतियों एवं नारंगी

रंगवाले लघु घोंघों की सप्त झालरें लंगी थीं। इस रूप में मैं दल का तृतीय प्राणी थी। वहां मेरी म्याऊं थी; वहां मेरा पाम्पी था। वहां मैं स्वयं थी। हम *तीन* थे। इसी प्रकार कहा जाता है कि मूलतः तीन ही देवियां थीं—मेल्टी, निम्मी एवं हेत्ती—उपासना, स्मृति, एवं संगीत।

साहसी पाम्पी के कंधे का सहारा लिए हुए मैं एडिना की एक जनाकीर्ण एवं सुखद संड़क से जा रही थी। मुझसे कुछ दूरी पर डायना चली आ रही थी। एकाएक मेरी निगाह एक चर्च, एक गाथिक गिर्जाघर पर पड़ी। वह विशाल, सम्मानाई और एक ऊंची मीनार से, जो आकाश में सिर ऊंचा किए खड़ी थी, युक्त था। मुझपर न जाने कैसा पागलपन छा गया। क्या उन्माद था वह? मैं खुद अपने दुर्भाग्य की ओर क्यों दौड़ पड़ी? उस चकरा देने वाले शिखर पर चढ़कर नगर के विस्तार का निरीक्षण करने की अदम्य कामना मेरे ऊपर सवार हो गई। गिर्जे का खुलाद्वार मानो मुझे बुला रहा था। मेरी नियति की चल गई। मैंने गुम्बदाकार मार्ग में प्रवेश किया। उस समय मेरा रक्षक देवदूत कहा था? यदि ऐसे देवदूत होते हैं, यदि! कैसा विपद्जनक लघु शब्द। तेरे दो अक्षरों के अन्दर भेद एवं अर्थ, एवं संशय, एवं अनिश्चय की कैसी एक दुनिया छिपी है। मैं उस अशुभ गुम्बद-मार्ग में प्रविष्ट हुई, और अपनी नारंगी रंग की पोशाक को जरा भी क्षति पहुंचाए बिना मुख्य द्वार पारकर गलियारे में पहुंच

गई। तभी तो कहा गया है कि अलफियस नदी बिना किसी क्षति और अशुद्धता के समुद्र के नीचे से जाकर फिर निकल आई।

मेरे मन में आया कि इन सीढ़ियों का कभी अन्त न होगा। *गोल!* हां, गोल-गोल ऊपर जाती सीढ़ियां। गोल और ऊपर जाती। फिर गोल और ऊपर जाती। मैं प्रारम्भिक प्रीति के सम्पूर्ण विश्वास के साथ बुद्धिमान पाम्पी के कंधे का सहारा लिए बढ़ती जाती थी किन्तु सीढ़ियों का खात्मा न होते देख अन्त में मेरे मन में यह कल्पना उठने लगी कि शायद किसी घटना के कारण या जान बूझकर इन चक्करदार सीढ़ियों का अन्तिम ऊपरी छोर हटा दिया गया है। मैं दम लेने के लिए रुक गई। इसी बीच नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से एक महत्त्वपूर्ण घटना घट गई। मुझे ऐसा लगा—नहीं, मुझे पूरा विश्वास हो गया था क्योंकि मैं कुछ देर तक सावधानी और उत्कण्ठा के साथ डायना की गतिविधि देख रही थी और मैं कहती हूं कि *मैं गलती पर नहीं हो सकती—कि डायना को किसी* चूहे *की* गंध लगी है। मैने इस विषय पर पाम्पी का ध्यान आकर्षित किया और वह भी मुझसे सहमत था। तब तो सन्देह की गुंजाइश ही नहीं रह गई। निश्चय ही चूहे की गंध लगी है—डायना को। हे ईश्वर! क्या मैं कभी उस क्षण की गहरी उत्तेजना को भूल पाऊंगी। हाय! मनुष्य की शेखी-भरी बुद्धि क्या है? चूहा!... वह वहां था, कहने

का मतलब यह कि वहीं कहीं था। डायना ने चूहे को सूंघ लिया था। मैं नहीं सूंघ सकी। तभी तो कहा गया है कि ईरानी श्वेतदूर्वा में कुछ लोगों को तो तीव्र सुगन्ध मिलती है, तब दूसरों के लिए वह पूर्णतः निर्गन्ध होती है।

सीढ़ियां पराजित हो गईं; अब ऊपर की तरफ हमारे एवं शिखर के बीच केवल तीन या चार सीढ़ियां और रह गई थीं। हम चढ़ते ही गये, और अब सिर्फ एक सीढ़ी रह गई। एक सीढ़ी! एक लघु, लघु सीढ़ी! मानव-जीवन के आरोहरण-मार्ग में एक लघु सीढ़ी पर न जाने कितना मानवीय सुख दुःख निर्भर करता है। तब मैंने अपने बारे में सोचा; फिर पाम्पी की बात सोची; और फिर उस रहस्यपूर्ण तथा अनिर्वचनीय नियति के बारे में सोचने लगी जिसने हमें घेर रखा था। मैंने पाम्पी के बारे में सोचा। हाय, मैंने प्रेम के बारे में सोचा। मैंने उन अनेक गलत *पगों* के बारे में सोचा और जो धरे जा चुके हैं। और आगे धरे जाएंगे। मैंने निश्चय किया कि अब और सावधान, और गम्भीर रहूंगी। मैंने पाम्पी का कंधा छोड़ दिया, और उसकी सहायता के बिना ही रही-सही वह एक सीढ़ी भी पार कर गई। अब मैंने घण्टाघर में प्रवेश पा लिया था। मेरी म्याऊं ने भी मेरा अनुसरण किया। अब सिर्फ पाम्पी पीछे रह गया था। मैं सीढ़ी के ऊपर खड़ी उसे ऊपर चढ़ जाने को उत्साहित कर रही

थी। उसने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया, और दुर्भाग्वश ऐसा करते हुए ओवरकोट पर से उसका नियन्त्रण जाता रहा। क्या देवगण अपनी दण्ड-शृंखला कभी समाप्त नहीं करते? ओवरकोट गिर गया और पाम्पी का एक पांव ओवरकोट की झूलती हुई झालरों में फंस गया। वह लड़खड़ाया और गिर पड़ा–यह परिणाम अवश्यंभावी था। वह आगे की ओर गिरा और गिरते हुए मेरी छाती में उसका ऐसा धक्का लगा कि मैं भी उसके साथ ही घण्टाघर की कठोर, गन्दी तथा घृणाजनक फर्श पर सिर के बल गिरी। किन्तु मेरी प्रतिहिंसा भी निश्चित, आकस्मिक और पूर्ण थी। मैंने गुस्से में दोनों हाथों से उसे पकड़कर उससे काले घुंघराले केशपुंज को उखाड़ लिया और धक्का देकर उससे दूर फेंक दिया। बाल जाकर घण्टे की रस्सियों के बीच गिरे। पाम्पी उठ खड़ा हुआ, एक शब्द भी नहीं बोला, किन्तु अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से करुणापूर्वक मुझे देखता रहा। उसने एक आह की! हे ईश्वर–वह दृश्य! वह मेरे कलेजे में उतर गया। और वे बाल! यदि मैं उन्हें पा जाती तो अपने दुःख के प्रमाणस्वरूप आंसुओं से भिगो देती। किन्तु अब वे मेरी पहुंच से दूर थे। उनको रस्सियों के ढेर में चकमते हुए मैं देख रही थी; मुझे प्रतीत हुआ वे अब भी जीवित हैं। मुझे लगा, जैसे वे अपने सिरों पर असन्तोष के साथ खड़े हो गए हैं। इस प्रकार जो बात जावा के एपीडेण्ड्रम फ्लोज़

ऐरिस पौधे के बारे में कही गयी थी वह यहां सत्य सिद्ध हो गयी–यह बात कि उसमें सुन्दर फूल लगता है तथा उसे जड़ से उखाड़ कर लोग छत से टांग देते हैं और वर्षों तक उसकी सुगन्ध का उपभोग करते रहते हैं।

खैर, हमारा झगड़ा खत्म हो गया और हम कमरे में ऐसे सूराख़ की खोज़ करने लगे जिससे एडिना नगरी का सर्वेक्षण किया जा सके। उसमें एक भी खिड़की न थी। उस उदासी-भरे कमरे में प्रकाश आने का एक मात्र साधन था, एक चौकोर छिद्र। इसका व्यास एक फुट का रहा होगा और यह फर्श से लगभग सात फुट ऊपर था किन्तु सच्ची प्रतिभा की ऊर्जा क्या नहीं कर सकती? मैंने उस छिद्र तक ऊपर चढ़ जाने का निश्चय कर लिया। छेद के पास जमीन पर बहुत-सा अंगड़-खंगड–पहिये, दांतेदार टेकुए आदि–रखा था। और मशीनरी का एक लौह-दण्ड उस छेद के अंदर चला गया था। छेद के नीचे पहियों एवं दीवार के बीच इतना ही स्थान था कि मैं मुश्किल से खड़ी हो सकती थी–किन्तु मैं निराशा से उन्मत्त हो रही थी, इसलिए जिस तरह भी हो वहां तक पहुंचने का निश्चय कर लिया। मैंने पाम्पी को अपने पास बुलाया।

"पाम्पी, तुम वह छेद देख रहे हो न। मैं उसी के अन्दर से झांकना चाहती हूं। तुम उसके नीचे यहां खड़े हो जाओ। हां, इसी

तरह। अब अपना एक हाथ फैलाओ, और मुझे उस पर चढ़ने दो–हां, इस तरह। अब दूसरा हाथ, पाम्पी, और उसके सहारे मैं तुम्हारे कन्धे पर खड़ी हो जाऊंगी।"

जो कुछ मैंने कहा, वह सब करता गया। उसके कंधे पर चढ़कर मैंने देखा कि मैं आसानी से अपना सिर और कण्ठ उस छेद से बाहर निकाल सकती हूं। सम्भावना बड़ी सुन्दर लगी। इससे अच्छा और क्या हो सकता था। मैंने क्षण-भर रुककर डायना को ठीक तरह बैठने को कहा और पाम्पी को भी विश्वास दिलाया कि मैं उसका ख़्याल रखूंगी और उसके कन्धे पर जितना भी कम भार दे सकूंगी, दूंगी। मैंने उससे कहा कि उसकी भावनाओं के प्रति मृदु व्यवहार करूंगी–"ओसीतेंद्र कुः जाईर"–जाईर की भांति कोमल। अपने निष्ठावान मित्र के प्रति ऐसा न्याय करने के बाद मैंने अत्यन्त उत्साहपूर्वक उस दृश्य का उपभोग करना शुरू किया जो मेरी आंखों के आगे अनुग्रहपूर्वक फैला हुआ था।

किन्तु इसके बारे में मैं ज़्यादा विस्तार न करूंगी। मैं एडिनबर्ग नगर का वर्णन न करूंगी। हर आदमी एडिनवर्ग हो आया है–पुरातन एडिना को देख चुका है। मैं अपने ही दुःखद दुस्साहस के महत्त्वपूर्ण ब्यौरों तक सीमित रहूंगी। नगर के विस्तार, स्थिति और सामान्य दर्शन के सम्बन्ध में अपनी उत्कण्ठा तृप्त कर लेने के बाद अब

भी मेरे पास इतना अवकाश था कि जिस चर्च में उस समय थी उसका और उसके मीनार के सूक्ष्म स्थापत्य कला का सर्वेक्षण करती। मैंने देखा कि जिस छेद में मैंने अपना सिर डाल रखा है वह वस्तुतः विशाल घड़ी के 'डायलप्लेट' (मुंह) का छेद है, जो सड़क से चाबी देने वाले छेद की भांति दिखता होगा। निस्सन्देह इसका वास्तविक उद्देश्य तो यह रहा होगा कि आवश्यकता पड़ने पर सेवक अन्दर ही से हाथ डालकर सुइयों को ठीक स्थिति में कर सके। मैंने आश्चर्यपूर्वक देखा कि घड़ी की वे सुइयां भी बड़े विशाल आकार की हैं; सबसे बड़ी तो लम्बाई में दस फुट से कम न होगी; सबसे ज़्यादा चौड़ाई भी 8-9 इंच होगी। वे ठोस फौलाद की बनी प्रतीत हुईं, उनकी नोक भी बड़ी तीखी थी। इन तथा दूसरे कुछ ब्यौरों को देखने के बाद मैंने फिर नीचे के शानदार दृश्य की ओर आंखें घुमा दीं और विचार-मग्न हो गई।

कुछ देर बाद पाम्पी की आवाज़ से मेरा ध्यान भंग हो गया। उसने कहा कि अब उससे बोझ सहन नहीं हो रहा है। और मुझसे अनुरोध किया कि कृपापूर्वक मैं नीचे आ जाऊं। यह बेजा बात थी और मैंने लम्बी वक्तृता देकर उसे यह बात समझा दी। किन्तु उसने मेरी बात न समझकर, कुछ गलतफहमी से जवाब दिया। इससे मैं नाराज़ हो गई और उससे साफ शब्दों में कह दिया कि "वह मूर्ख

है और 'इग्नोरमस ई-क्लेंच-आई' यानी 'अज्ञान भेंगा' है। उसके विचार मूर्ख की लंतरानी मात्र हैं, और उसके शब्द निःसार हैं।" इतने से वह सन्तुष्ट प्रतीत हुआ और मैं पुनः ध्यान में डूब गई।

इस तकरार के आधे घण्टे बाद की बात होगी; मैं नीचे के स्वर्गीय दृश्यों में खो गई थी कि कोई बहुत ठण्डी चीज़ मेरे कण्ठ को पीछे से दबाती सी मालूम हुई। कहने की ज़रूरत नहीं कि मैं अकथनीय रूप से घबड़ा गई। मैं जामती थी कि पाम्पी मेरे पैरों के नीचे है और डायना मेरे आदेशों के अनुसार, कमरे के सुदूर कोने में अपने पिछले पैरों के सहारे बैठी है। तब यह क्या चीज़ हो सकती है? उफ! बहुत जल्दी मैंने पता लगा लिया। अपना सिर धीरे-धीरे एक ओर घुमाकर मैंने अत्यन्त भयपूर्वक देखा कि घड़ी की विशाल, चमकती हुई, वक्रखंग-सी मिनट की सुई, अपनी प्रति घण्टे की चक्रगति में मेरे गले पर आ गई है। मैं समझ गई कि एक क्षण भी नष्ट करने को मेरे पास नहीं है। मैंने तुरन्त अपना सिर हटाने की कोशिश की, किन्तु इस समय तक बहुत ज़्यादा देर हो चुकी थी। अब उस भयानक फंदे से, जिसमें वह पूरी तरह फंस चुका था, अपना सिर निकाल लेने का कोई उपाय न था। अकल्पनीय भयानकता के साथ वह फंदा क्षण-क्षण संकरा-छोटा होता जा रहा था। उस समय मेरी जान कैसी सांसत में थी, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। मैंने अपने हाथों से पूरा ज़ोर

लगाकर उस भारी लौहदण्ड को ऊपर उठाने की कोशिश की परन्तु मुझे अनुभव हुआ कि उसे ऊपर उठाना खुद गिर्जाघर को ही ऊपर उठाने के समान (असंभव) है। सुई नीचे, नीचे और नीचे, निकट, और निकट आती जा रही थी। मैंने चीखकर पाम्पी को सहायता के लिए पुकारा, किन्तु उसने कहा कि 'अज्ञान भेंगा' कहकर उसकी भावनाओं को चोट पहुंचाई गई है। मैंने डायना को पुकारा किन्तु वह भों-भों करके रह गई, मानो कह रही हो कि मैंने ही तो उसे कोने से न हटने का आदेश दे रखा है। इस तरह मुझे अपने दोनों साथियों से सहायता पाने की कोई आशा न रही।

इस बीच वह भारी एवं भयावनी 'काल की हंसिया' (अब मुझे उस प्राचीन पद का शाब्दिक अर्थ मालूम हो गया था) रुकी नहीं थी, न उसकी चाल रुकने की कोई सम्भावना ही थी। वह नीचे, और नीचे चली आ रही थी अब तक वह अपनी तेज़ नोक मेरे मांस में पूरी एक इंच घुसा चुकी थी। मेरे दिमाग की हालत ठीक न थी। कभी मैं अपने फिलाडेल्फिया में भव्य डा. मनीपेनी के साथ होने की कल्पना करती, कभी सोचती कि मि. ब्लैकउड के पीछे के कक्ष में बैठी उनकी बहुमूल्य हिदायतें प्राप्त कर रहीं हूं। इसके बाद एक बार फिर अच्छे और प्रारम्भिक दिनों की मधुर स्मृतियां मेरे मन में उभरने लगीं, और मैं उस सुखी ज़माने की बात सोचने

लगी जब दुनिया इस प्रकार मरुभूमि नहीं थी और पाम्पी ऐसा निर्दयी नहीं था।

मशीनरी (घड़ी) की टिक-टिक से मैं मुदित हुई। हां, मैं कहती हूं, मैं मुदित हुई, क्योंकि अब मेरे मनोद्वेग पूर्ण आनन्द की सीमा को छू रहे थे और संकटपूर्ण परिस्थितियां मुझे आह्लादित कर रही थीं। घड़ी की शाश्वत टिक-टैक, टिक-टैक में मेरे कान अत्यन्त मधुर संगीत का स्वाद ले रहे थे, बल्कि कभी-कभी उनमें डा. मार्फाइन (मर्फिया-अफीम का सत) के कृतज्ञतापूर्ण, उपदेशात्मक भाषणें का आनन्द भी आ जाता था। फिर घड़ी के डायल-प्लेट (चक्रतल) पर बड़ी-बड़ी संख्याएं भी मौजूद थीं इस समय वे कैसी विलक्षण, कैसी बुद्धिमत्तापूर्ण मालूम पड़ रही थीं। अरे, वे तो नृत्य कर रही हैं, मेरी समझ से वी (पांच का निशान) का नृत्य सबसे ज़्यादा सन्तोषजनक था। निश्चय ही वह कोई कुलीन महिला होगी। मैंने देखा कि वह थक गई है इसलिए उसे कुर्सी देने की चेष्टा की। किन्तु, अब मैं अपनी शोचनीय परिस्थिति के प्रति सजग हो उठी। निश्चित रूप से शोचनीय! सुई अब तक मेरे गले में दो इंच नीचे तक घुस गई थी। मुझे गहरी वेदना हो रही थी। मैंने मृत्यु के लिए प्रार्थना की, और उस क्षण की वेदना के बीच भी स्पेनी कवि माइगुएल दे सेरवान्तीज़ के सुन्दर छन्द याद आ गए–

Van muerte tan escondida
Que no te sienta vemir
Porque el plazer del morir
No me torne a dar la Vida

("ओ मृत्यु! जल्द आ। किन्तु इतना ज़रूरकर लेना कि तुम्हें आते हुए मैं न देखूं, नहीं तो तुम्हारे दर्शन से मुझे जो आनन्द होगा वह दुर्भाग्यवश पुनः मुझे जीवन में ला देगा।")

किन्तु अब एक नया आतंक सामने आ गया, ऐसा जो साहसी से साहसी की स्नायुओं को भी उत्तेजित कर देने के लिए पर्याप्त था। मशीन के निष्ठुर दवाब के कारण, मेरी आंखें कोटर के बाहर निकली आ रही थीं। मैं सोच ही रही थी कि उनके बिना मेरा काम कैसे चलेगा कि एक सचमुच, मेरे सिर से निकलकर शिखर के ढालुई बाजू से होती हुई वर्षा के लिए बनी नाली में जा गिरी। आंख का नुकसान मुझे उतना नहीं खला जितना स्वतन्त्रता एवं घृणा की वह घृष्ट चितवन खली जिसके साथ मेरे सिर से निकलने के बाद वह मुझे देख रही थी। वहां वह नाली में ठीक मेरी नाक के नीचे पड़ी इस तरह से चकमती और मिचमिचाती थी, जो मैंने पहले कभी देखी न थी। नाली में पड़ी मेरी आंख का यह आचरण, अपनी स्पष्ट धृष्टता एवं लज्जाजनक कृतघ्नता के कारण न केवल खीझ पैदा

करने वाला था वंर एक सिर की दो आंखों में, अलग होते हुए भी, एक-दूसरे के लिए जो सहानुभूति एवं समवेदना होती है, उसके कारण भी बड़ा ही असुविधाजनक था। मुझे भी विवश होकर उसी तरह आंख नचाना एवं मिचमिचाना पड़ता था। किन्तु बाद में उस दूसरी आंख के भी निकल कर गिर पड़ने के कारण, मेरा वह संकट दूर हो गया। गिर कर इस दूसरी आंख ने भी वही रास्ता अपनाया ज़ो पहली ने अपनाया था। (सम्भवतः दोनों ने पहले से ही षड्यन्त्र कर रखा था।)। फिर दोनों साथ-साथ नाली से उठकर चल दीं। मुझे उनसे मुक्ति पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

अब तक सुई मेरे गले में साढ़े तीन इंच गहरी घुस चुकी थी, और अब थोड़ी ही चमड़ी कटने से बची थी। मेरी मनोदशा पूर्ण प्रसन्नता की थी, क्योंकि मैं अनुभव कर रही थी कि चंद ही मिनटों में मैं इस अप्रिय परिस्थित से छूट जाऊंगी। और इस आशा में मुझे धोका नहीं हुआ। तीसरे पहर ठीक पांच बजकर पच्चीस मिनट हुए थे कि मिनट की वह विशाल सुई मेरे गले का बचा-खुचा भाग काट देने को अपनी भयानक चक्रगति में काफी दूर तक बढ़ आई। जिस सिर ने मुझे इतनी आफत में डाला था, उसे अपने शरीर से सदा के लिए अलग होते देख मैं दुखीः नहीं था। वह कटकर पहले शिखर की ओर गिरा, फिर लुढ़कता हुआ गटर–नाली–में पहुंचा,

फिर कूदकर सड़क के बीच पहुंच गया।

मैं बिल्कुल स्वीकार करती हूं कि इस समय मेरी भावनाएं विलक्षण प्रकार की, बल्कि बड़ी रहस्यमयी,अत्यन्त भ्रामक और अचिन्त्य हो रही थीं। एक ही समय मेरी चेतना यहां और वहां, दो प्रतिकूल स्थितियों में, थी। अपने सिर के साथ कभी मैं कल्पना करती कि मैं, सिर, ही असली सिग्नोरी साइक ज़िनोबिया हूं, दूसरे क्षण मुझे पूरा विश्वास हो जाता कि मैं, यानी (सिर-रहित) शरीर ही वास्तविक व्यक्ति हूं। इस विषय पर अपनी धारणाओं को स्पष्ट करने के लिए मैंने अपनी जेब से सुंघनी की डिबिया निकाली किन्तु जब उसकी कृतज्ञ सामग्री की एक चुटकी साधारण तरीके पर (नाक में) लगाने के लिए हाथ उठाया तो तुरन्त मुझे अपने विचित्र अभाव का पता चल गया (कि नाक तो है ही नहीं)। मैंने नीचे पड़े सिर पर वह डिबिया दे मारी। उसने बड़े सन्तोष के साथ उससे एक चुटकी सुंघनी निकाली और प्राप्ति स्वीकार के रूप में मेरी ओर मुस्कराकर देखा। इसके बाद उसने मुझे एक स्पीच झाड़ दी–जिसे कानरहित होने के कारण मैं अस्पष्ट रूप में ही सुन सकी। फिर भी जीने की मेरी कामना पर उसे आश्चर्य हो रहा है। अपनी वक्तृता के अन्तिम वाक्यों में उसने एरिओस्तो के उस नायक से मेरी तुलना की, जो युद्ध के जोश में यह भूल गया कि वह मर चुका है और

मृत होने पर भी लड़ता ही रहा। उसने ठीक उन्हीं पंक्तियों का प्रयोग किया–

'I' I pover huomo che non s'en era accorto,

Andava Combattende, e era morto

(महावीर युद्ध के जोश में भूल जाता है कि वह मर चुका है और मृत होने पर शूरतापूर्वक लड़ता जाता है।)

अब ऊपर से नीचे उतरने में बाधा देने वाली कोई चीज़ तो रह नहीं गई थी, इसलिए मैं नीचे उतर आई। पाम्पी ने मेरी शक्ल-सूरत में कौन-सी विचित्रता पाई, यह मैं अभी तक नहीं जान पाई हूं। बेचारा दोनों कानों तक फैला मुंह बाये खड़ा रहा; उसने अपनी दोनों आंखें भी इतने ज़ोर से बन्द कर लीं मानो पलकों से बादाम फोड़ने की कोशिश कर रहा हो। अन्त में अपना ओवरकोट फेंककर वह सीढ़ी की ओर कूद गया–और मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। मैं उस बदमाश पर दिमोस्थेनीज़ के उन उत्तेजक शब्दों की वर्षा करती रह गई–

आज भाग तुम खड़े हुए जीवन के मंथर पथ पर।

इसके बाद मैं अपनी प्यारी पुंछकटी, एकाक्षी, झबरी डायना की ओर मुड़ी। हाय ! कैसा भयावना दृश्य मेरे सामने था? क्या वह चूहा था जो उसकी खोपड़ी को अपने बिल में खींच रहा था? क्या

ये उस लघु फरिश्ते की हड्डियां थीं जिसे किसी राक्षस ने निर्दयतापूर्वक खा डाला था? हे भगवान! मैं क्या देख रही हूं?–क्या वह मेरी प्यारी कुतिया की आत्मा, छाया या प्रेत है, जिसे मैं कोने में शालीनतापूर्वक शोकमग्न मुख लटकाये बैठी देख रही हूं? सुनो! क्योंकि वह बोल रही है, और हे ईश्वर, वह भी शिलर की जर्मन कविता में–

Und sterb'ich doch, so sterb'ich denn
Durch sie-durch sie!

('यदि मैं मर रही हूं तो कम से कम मर रही हूं तुम्हारे लिए–तुम्हारे लिए!')

आह! क्या उसके शब्द बिलकुल सत्य नहीं हैं?

मंजुल प्राणी! उसने भी अपने को मेरे लिए उत्सर्ग कर दिया। अब कुक्कुर-रहित, नीग्रो-रहित, सिर-रहित दुखिया सिग्नोरा साइक ज़िनोबिया के लिए क्या बचा है?–हाय, कुछ भी तो नहीं। बस, समाप्त करती हूं।

पागल एन्तिओकस

एन्तिओकस एपीफेनिस को आमतौर से पैगम्बर एज़ेकाइल के गण के रूप में याद किया जाता है, यद्यपि यह सम्मान साइरस के पुत्र कैम्बीसस के अधिक उपयुक्त जान पड़ता है। सच पूछिए तो सीरियाई बादशाह के चरित्र को किसी बाह्य अलंकरण की आवश्यकता ही नहीं है। ईसा के जन्म के एक सौ इकहत्तर वर्ष पहले सिंहासन पर उसका आरोहण, बल्कि बादशाहत का बलात् अपहरण, एफीसस स्थित डायाना के मन्दिर को लूटने का उसका यत्न, यहूदियों के प्रति उसकी निर्दय शत्रुता, उसका परम पवित्र तीर्थ का भ्रष्टीकरण, और ग्यारह वर्ष के तूफानी शासन के बाद तबा में उसका दुखःदायी मरण वे महत्वपूर्ण घटनाएं हैं जिनपर समसामयिक इतिहासकारों ने आमतौर से ध्यान दिया है, और उसकी उन अपवित्र कायरतापूर्ण, निर्दय, बेहूदा और सनकों से भरी उपलब्धियों को छोड़ दिया है

जो उसके वैयक्तिक जीवन एवं ख्याति का प्रमुख रूप से निर्माण करती हैं।

• •

सहृदय पाठक, आइए, हम कल्पना करें कि यह विश्व का तीन हज़ार आठ सौ तीसवां वर्ष है। कुछ देर के लिए यह भी कल्पना कर लें कि हम मनुष्य के सबसे विलक्षण आवास एन्तिओक नगर में उपस्थित हैं। वैसे तो बात यह है कि सीरिया तथा अन्य देशों में हमारे उस नगर के अलावा, जिसकी ओर विशेषरूप से हम संकेत कर रहे हैं, इस नाम के सोलह और नगर थे। किन्तु इस समय हम उस एन्तिओक नगरी की बात कर रहे हैं जो एन्तिओकिया एपिदाफने के नाम से विख्यात थी। उसका यह नाम उसके दाफने नामक छोटे से गांव के पास होने के कारण पड़ गया। इस दाफने में इसी नाम की देवी का एक मन्दिर था। इस नगर का निर्माण सिकन्दर महान के बाद उस देश के प्रथम बादशाह सिल्यूकस निकानोर ने अपने पिता एन्तिओकस की स्मृति में कराया था और तब से यह सीरियाई राजवंश का निवासस्थान बन गया। जब रोम-साम्राज्य के अच्छे दिन थे तो यह पूर्वी प्रदेशों के शासनाधिकारी का सामान्य आवास-मात्र था; रोम के अनेक सम्राटों ने (जिनमें विशेषरूप से वीरस एवं वेलेंस का उल्लेख किया जा सकता है) अपना अधिकांश समय यहां बिताया था। किन्तु अब हम कल्पना करते हैं कि हम लोग स्वयं इस नगरी में आ पहुंचे हैं। आइए, हम किले की दीवार पर चढ़ चलें और नगर तथा समीपवर्ती स्थानों पर नज़र डालें।

वह चौड़े घाट और तेज़ धारावाली कौन-सी नदी है जो पार्वत्य अंचलों के बीच असंख्य प्रपातों के रूप में और अन्त में इमारतों के इस विजन में अपना रास्ता बनाती हुई बह रही है?

वह ओरन्तीज़ है; भूमध्यसागर के अतिरिक्त एक पात्र जलाशय। वह दक्षिण की ओर, लगभग बारह मील की दूरी पर, एक चौड़े दर्पण की भांति फैली हुई है। भूमध्यसागर को तो हर एक ने देखा है, किन्तु, मुझे कहने दीजिए, ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जिन्होंने एन्तिओक की झांकी ली हो। बहुत ही कम से मेरा अभिप्राय उन थोड़े लोगों से है, जिनको, मेरी और आपकी तरह, आधुनिक शिक्षा का भी लाभ मिला है। इसलिए आइए, सागर से आंखें हटाकर जो गृह-पुंज हमारे नीचे दूर तक फैले हुए हैं, उन पर ध्यान दें। आपको याद होगा कि यह विश्व का तीन हज़ार आठ सौ तीसवां साल है। यदि यह बाद का वर्ष, उदाहरणार्थ अभाग्यवश हमारे प्रभु ईसा का 1839 वां, वर्ष होता तो हमें यह असाधारण दृश्य देखने को न मिला

होता। उन्नीसवीं सदी में एन्तिओक ह्रास की दुःखद स्थिति में है–मतलब होगा। उस समय तक वह तीन युगों में, तीन अनुवर्ती भूकम्पों द्वारा पूर्णतः विनष्ट हो चुका होगा। बल्कि सच्ची बात तो यह है, कि उस समय तक उसके पूर्व अस्तित्व का जो कुछ अंश बचा होगा, वह भी ऐसे निर्जन भग्नावशेषों के रूप में पड़ा होगा कि खलीफा ने वहां से हटकर दमिश्क को अपना निवासस्थान बना लिया होगा। अच्छा ही है। मैं देख रहा हूं कि आप मेरी सलाह से लाभ उठा रहे हैं, और अपना अधिकांश समय उस स्थान के निरीक्षण में लगा रहे हैं तथा शेक्सपीयर के शब्दों में–

और नयनों की पीपासा
देखकर उन स्मारकों, विख्यात चीज़ों को मिटाते
कर रही श्रंगार जो है इस नगर का।

पर मुझे क्षमा कीजिए, मैं भूल ही गया कि अभी आगामी सत्रह सौ पचास वर्षों तक शेक्सपीयर नहीं पैदा होगा। किन्तु क्या एपीदाफने का दर्शन उसे विलक्षण कहने का औचित्य नहीं सिद्ध करता?

यह भलीभांति दुर्गबद्ध है–और इस रूप में वह प्रकृति के प्रति भी उतना ही ऋणी है, जितना कला के प्रति है।

बिल्कुल ठीक।

शानदार महलों की पर्याप्त संख्या यहां है।

हां, है।

और विशाल तथा भव्य असंख्य मन्दिर हैं जिनकी पुरातत्व के श्रेष्ठ उदाहरणों से तुलना की जा सकती है।

मुझे यह सब स्वीकार करना ही चाहिए। फिर भी यहां असंख्य मिट्टी के झोंपड़े और निन्दनीय छप्पर दिखाई दे रहे हैं। हर नाले में मल का ढेर है और यदि मूर्तिपूजकों की उग्र अगुरू-गन्ध यहां फैल न रही होती तो हमें निश्चय ही असहनीय दुर्गन्ध का सामना करना पड़ता। क्या आपने कभी असहनीय रूप से संकरी ऐसी सड़कें देखी हैं, या आश्चर्यजनक रूप से ऊंचे ऐसे मकान देखें हैं? उनकी परछाइयां धरती पर कैसा धुंध पैदा कर रही हैं? यह अच्छा ही है कि उन अन्तहीन छज्जों से लटकते हुए प्रदीप दिन भर जलते रहते हैं, नहीं तो भग्नावस्था के मिस्त्र का अन्धकार यहां फैला होता।

निश्चय ही यह विचित्र स्थान है। उधर वह जो विलक्षण-सी इमारत दीख रही है, उसका क्या मतलब है? देखो! यह और सब इमारतों के ऊपर तक सिर उठाए खड़ी है; वह शाही महल के पूरब की ओर।

वह सूर्य का नवीन मन्दिर है–सूर्य का जिसे सीरिया में 'इलहगवाल' नाम से पूजा जाता है। आगे चलकर एक बहुत बदनाम रोमी सम्राट इस पूजा को रोम में चलाएगा और उसके

कारण हेलियोगबालस वंशनाम धारण करेगा। मैं समझता हूं, आप मन्दिर के देवमूर्ति की दर्शन करना चाहेंगे। इसके लिए आपको आकाश की ओर देखने की आवश्यकता नहीं है; उसका सूर्यत्व वहां नहीं है–कम से कम सीरियाइयों-द्वारा पूजित सूर्यत्व। वह देवता अगली इमारत के अन्दर है। उसमें एक बड़ा प्रस्तरस्तम्भ है जो शिखर पर शुंडाकार हो गया है और उस (शिखर) पर अग्नि का निवास है। इसी की पूजा होती है।

सुनो!–देखो! वे हास्यास्पद प्राणी कौन हो सकते हैं–वे अधनंगे हैं–उनके चेहरे रंगे हुए हैं–और वे शोर कर रहे हैं तथा भीड़ की ओर अंग-संचालन द्वारा संकेत कर रहे हैं?

उनमें से कुछ नकली दवाफरोश है; दूसरे कुछ तत्वज्ञानियों की जाति के हैं। किन्तु अधिकांश,–विशेषतः वे जो लोगों पर सोंटे बरसा रहे हैं–महल के प्रमुख दरबारी हैं और बादशाह के लिए प्रशंसनीय कौतुक का प्रदर्शन कर रहे हैं।

किन्तु हम यहां क्या देख रहे हैं? हे ईश्वर। शहर खूंखार पशुओं से भर गया है। कैसा भयानक दृश्य है! कैसी खतरनाक विलक्षणता है!

हां, भयानक, आप चाहें तो कह सकते हैं किन्तु खतरनाक ज़रा भी नहीं। यदि आप ध्यान से देखने का कष्ट उठावें तो प्रत्येक पशु,

बड़ी शान्ति के साथ, अपने मालिक का पदानुसरण कर रहा है। थोड़े से ऐसे हैं जिनके गले में रस्सी बंधी हुई है और उसी से वे खींचकर लाए जा हरे हैं, किन्तु ये न्यूनाधिक बोदी प्रजातियों के पशु हैं। शेर, बाघ, चीता बिल्कुल निर्बन्ध हैं। बिना कठिनाई के वे अपने वर्तमान पेशे के लिए प्रशिक्षित कर लिए गए हैं, और अपने मालिकों के लिए घरेलू खितमतगार की भांति काम करते हैं। यह सच है कि ऐसे भी अवसर आ जाते हैं जब रुद्ध प्रकृति अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर उठती है, किन्तु किसी पहरेदार का खा लिया जाना या किसी उत्सर्गित सांड़ का गला मरोड़ दिया जाना ऐसी महत्वरहित बातें हैं जिनपर एपीदाफने में ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता।

किन्तु यह असाधारण कोलाहल कैसा है? निश्चय ही, एन्तिओक के लिए भी इसे प्रबल शोर कहा जा सकता है। यह किसी असमान्य आकर्षण का कोलाहल है।

निश्चय ही ऐसा है। बादशाह ने कुछ अजूबा दृश्य दिखाने का आदेश किया है–हिप्पोड्रोम में कोई असिक्रीड़ा-प्रदर्शन हो–या शायद सीथियाई कैदियों का कत्लेआम हो–या अपने नवीन महल में आग लगा देने की बात हो–या किसी सुन्दर मन्दिर को तोड़कर गिरा देना हो,–या फिर कुछ यहूदियों को जीते जला देने का दृश्य हो; कुछ ऐसी ही बात होगी। कोलाहल बढ़ता जा रहा है। लोगों का

अट्टहास आकाश छू रहा है। वायु प्रधान वाद्यों के कारण वातावरण बेसुरा और लाखों लोगों की कण्ठध्वनि से भयानक हो रहा है। आइए, तमाशे के लिए उतरकर नीचे चलें, और देखें कि क्या हो रहा है। इधर से आइए, ज़रा सावधानी के साथ। अब हम मुख्य मार्ग पर हैं जिसे निमार्कस मार्ग कहा जाता है। जन-समुद्र इधर ही उमड़ा आ रहा है और हमें उनकी बाढ़ से बचना मुश्किल होगा। वे हेराक्लिट्स की गली से चले आ रहे हैं, जो राजमहल से सीधे आती है। इसलिए बहुत सम्भवतः बादशाह भी इस भेड़ियाधसान में होगा। हां, देखो पूर्व की अलंकृत शैली में प्रतिहारियों द्वारा उसके आगमन की घोषणा मुझे सुनाई पड़ रही है। जब वह अशीमा के मन्दिर के निकट से गुजरेगा तो हमें उसके शरीर की झांकी मिल जाएगी। आइए, हम मन्दिर के गलियारे में चलकर खड़े हो जाएं। वह इधर से ज़रूर गुज़रेगा। तब तक हम इस प्रतिमा के दर्शन कर लें। क्या है यह? ओह, यह सशरीर देवता अशीमा है। परन्तु आप देख सकते हैं कि वह न तो भेड़ है, न बकरी है, न कोई वनमानुष है–न आर्केडियनों के ग्रामदेवता से ही इसकी शक्ल ज़्यादा मिलती है। फिर भी ये सब शक्लें उसे दी गई हैं–या क्षमा कीजिए, सीरियाइयों के अशीमा को भविष्य के विद्वानों-पुरातत्वज्ञों द्वारा प्रदान की जाएंगी। ज़रा चश्मा लगा लीजिए, और मुझे बताइए

कि यह क्या है। क्या है यह?

या खुदा, यह तो पुच्छहीन वानर है!

सच कहते हैं–बबून (बड़ा अफ्रीकी बन्दर) है, किन्तु इस कारण उसका देवत्व कम नहीं हो जाता। इसके नाम की व्युत्पत्ति यूनानी सीमिया से हुई है–कितने बड़े मूर्ख होते हैं पुरातत्वविद्। किन्तु देखिए!–देखिए! वहां चिथड़ों में लिपटा छोटा बालक क्यों भागा जा रहा है? कहां जा रहा है वह? क्या चिल्ला रहा है वह? क्या कह रहा है? ओह वह कह रहा है कि विजयमुद्रा में बादशाह आ रहा है; वह शाही पोशाक में है; और अभी-अभी उसने हाथ से हज़ार शृंखलाबद्ध यहूदी कैदियो को मौत के घाट उतार दिया है और इसी के लिए वह चिरकुटधारी उसको आसमान में उठाए दे रहा है। सुनो! इसी प्रकार का एक सैन्यदल चला आ रहा है। उन्होंने बादशाह की वीरता में एक लातीनी गान की रचना की है और उसे गाते हुए चले आ रहे हैं–

Mille, mille, mille
Mille, mille, mille
Decollavimus, Unus homo !
Mille, mille, mille, O, mille, decollavimus !
Mille, mille, mille !

Vivat qui mille mille Occidit!
Tantum Vini hanbet nemo
Ouantum sanguinis effudit![1]

जिसका अनुवाद यों किया जा सकता है–

हज़ार, हज़ार, हज़ार
हज़ार, हज़ार, हज़ार,
हमारे एक सूरमा ने मार दिए हैं।
हज़ार, हज़ार, हज़ार, एक हज़ार।
हज़ार, बार गाओ, फिर गाओ।
ओहो! आओ हम मिल गाएं।
राजा हमारे चिरजीवन पाएं।
राजा, जिसने हज़ार शत्रु मारे।
आओ, हम शोर मचाएं
उसने हमें रक्त दिया है इतना
सब सीरिया न जुटा सकता जितना
द्राक्षारस मदिर सुहाना।

1. फ्लेवियस वोपिस्कस कहता है कि यहां जो गान दिया है, वह पहली बार सरमेटिक युद्ध में, आरेलियन की सफलता पर उस समय जनसमूह-द्वारा गाया गया था जब उसने अपने हाथों से शत्रु के 950 सैनिक मौत के घाट उतार दिए थे।

हज़ार, हज़ार, हज़ार।
मारे हैं हमारे सूरमा ने।
हज़ार, हज़ार, हज़ार।।

आप सुन रहे है तुरहियों का नाद?

हां–बादशाह आ रहे हैं। देखिए!–लोग प्रशंसा से मतवाले हो रहे हैं और अपनी आंखें श्रद्धा से ऊपर उठा रहे हैं। वह आता है–वहां आ रहा है–वहां रहा वह!

कौन?–कहां?–बादशाह? मुझे तो दिखाई नहीं देता–मैं तो नहीं कह सकता कि उसे देख रहा हूं।

तब आप निश्चय ही अन्धे होंगे।

हो सकता है। फिर भी मैं सनकियों और पागलों की तूफानी भीड़ के सिवा और कुछ नहीं देख पा रहा हूं–ये सब लोग एक वृहदाकार ज़िराफ के आगे दण्डवत् कर रहे हैं लोट रहे हैं और फिर उस जानवर के खुरों का चुम्बन लेने का प्रयत्न कर रहे हैं। देखिए! जानवर ने हेय समूह के एक आदमी को लात की ठोकर लगा दी है। फिर एक और को–एक और को–पुनः एक और को। वाह, जानवर अपने पगों का जैसा अच्छा उपयोग कर रहा है; उसकी प्रशंसा किए बिना मैं नहीं रह सकता।

हेय समूह!–क्यों ये तो एपीदाफने के श्रेष्ठ एवं स्वतन्त्र नागरिक

हैं। और आपने राजा को पशु कहा? सावधान होकर बोलो, कहीं कोई सुन न ले। क्या आप देख नहीं रहे हैं कि पशु की सूरत-शक्ल मनुष्य-जैसी है? अरे मेरे प्यारे मित्र, वह ज़िराफ एन्तिओकस एपीफेनिस,–सीरिया नरेश एन्तिओकस पूर्व के सबसे शक्तिमान निरंकुश शासक के सिवा और कोई नहीं है। यह सच है कि कभी-कभी उसे एन्तिओकस एपीफेनिस–पागल एन्तिओकस के नाम से पुकारा जाता है परन्तु यह तो केवल इसलिए है कि सब लोग उसकी योग्यता को समझने में अक्षम हैं। यह भी सच है कि इस समय वह जानवर की खाल ओढ़े हुए है किन्तु ऐसा सम्राट के रूप में उसकी मर्यादा की रक्षा के लिए ही किया गया है। फिर सम्राट बहुत लम्बे हैं, इसलिए यह परिच्छेद उनके लिए बहुत बड़ा या अशोभन नहीं है। हां, इतना मान ले सकते हैं कि कोई विशेष स्थिति न होती तो वह इसे धारण न करते। आप मानेंगे कि हज़ार यहूदियों का कत्लेआम ऐसी ही एक स्थिति है। अपने चारों पगों पर किस उच्च गरिमा के साथ सम्राट आन्दोलित हो रहे हैं। आप देखते हैं कि पूंछ उनकी दो प्रमुख रखेलों–इलायन तथा आर्गेलाइस ने ऊपर उठा रखी है, और यदि उनकी आंखे बाहर की ओर न निकल रही होतीं (जो उनके सिर से बाहर चली जाएंगी) या उनके मुख का ऐसा अनोखा रंग न होता तो उनकी शक्ल बहुत अधिक आकर्षक होती।

पर उन्होंने इतनी अधिक मात्रा में शराब पी रखी है कि आंखों एवं चेहरे का यह हाल हो रहा है। आइए, क्रीडांगन में चलें, जहां वह जा रहे हैं, और जो विजय-गान वह आरम्भ कर रहे हैं उसे सुनें–

कौन राजा है एपीफेनिस सिवा?
बोल दो, उसको अगर तुम जानते हो।
कौन राजा है एपीफेनिस सिवा?
धन्य हूं मैं धन्य, कुछ पहिचानते हो?
है नहीं कोई एपीफेनिस सिवा,
है नहीं राजा कोई उसके सिवा।
इसलिए तुम मन्दिरें को ध्वस्त कर दो,
और सूरज को बुझा दो, पस्त कर दो।
कौन है राजा एपीफेनिस सिवा?
बोल दो, उसको अगर तुम जानते हो,
कौन राजा है भले मेरे सिवा?
धन्य हूं, मैं धन्य, तुम पहिचानते हो?

यह अच्छा, श्रमपूर्वक गाया गान। जनता कविराज, प्राच्यकीर्ति, विश्वानन्द तथा जिराफ-शिरोमणि आदि उपाधियों द्वारा उनका अभिनन्दन कर रही है। उसने उनको भावार्द्र कर दिया है। आप सुन रहे हैं? वह फिर उसे गा रहे हैं। क्रीडांगन में पहुंचने पर

आगामी ओलम्पिक में विजय-सम्भावना के कारण उन्हें माला पहिनाई जाएगी।

किन्तु हे भगवान!–हमारे पीछे की भीड़ को क्या हो गया है?

क्या कहा आपने, हमारे पीछे? ओह, आह! मैं देख रहा हूं। मेरे मित्र, अच्छा किया आपने जो मुझे समय पर बता दिया। हमें जल्दी से जल्दी किसी सुरक्षित स्थान में पहुंच जाना चाहिए। बस, यहां! आइए, हम इस जलसेतु के तोरण में छिप जाएं। अब मैं आपको इस भगदड़ का कारण बताता हूं। वही हुआ जिसका मुझे भय था। शहर में जो जंगली जानवर पालतू बना लिए गये थे वे मनुष्य के सिर वाले ज़िराफ का अनोखा रूप देखकर भड़क उठे। परिणाम हुआ विद्रोह, और जैसा कि ऐसे अवसरों पर होता है उनकी भीड़ को हटाने में सम्पूर्ण मानवीय प्रयत्न विफल होंगे। कई सीरियाई अब तक निगले जा चुके हैं–किन्तु चतुष्पाद देशभक्तों का सामान्य चीत्कार है ज़िराफ को खाने के लिए। इसलिए कविराज अपने पिछले पैरों पर खड़े हो गए और अब अपनी जान बचाने को भाग खड़े हुए हैं। उनके दरबारी उनको संकट में छोड़कर चले गए; उनकी रखेलों ने उनकी पूंछ को गिर जाने दिया। विश्वानन्द, इस समय तुम दुःखद स्थिति में हो। प्राच्यकीर्ति, इस समय चबा लिए जाने का खतरा तुम्हारे सामने है। इसलिए इस समय ऐसी करुणाजनक

दृष्टि से अपनी पूंछ की ओर न देखो–निश्चय ही वह कीचड़ में घसीट ली जाएगी। इससे बचने का कोई उपाय नहीं है। इसलिए अपने पीछे, और अनिवार्य अप्रतिष्ठा की ओर न देखो, बल्कि हिम्मत करो–अपने चरणों को गतिमान करो और क्रीड़ांगन में भाग जाओ। याद करो कि तुम एन्तिओकस एपीफेनिस हो–एन्तिओकस महान हो,–कविराज, प्राच्यकीर्ति, विश्वानन्द तथा जिराफ–शिरोमणि हो। हे भगवान्! गति की क्या शक्ति तुम प्रदर्शित कर रहे हो! हां, दौड़ो, राजा! शाबास एपीफेनिस! क्या खूब, ज़िराफ! महिमामय एन्तिओकस! वह दौड़ता है; वह चलता है; वह उड़ता है। गुलेल से निकली गोली के समान वह क्रीड़ांगन की ओर जा रहा है। वह उछलता है।–वह चीखता है।–वह वहां पहुंच गया। अच्छा हुआ, प्राच्यकीर्ति! यदि तुम्हें सर्कस या क्रीडांगन के द्वार तक पहुंचने में आधे सेकेण्ड की देर हो जाती तो एपीदाफने में रीछ का एक भी शावक ऐसा न बचता जिसने तुम्हारी लाश के लोथड़े का स्वाद न लिया होता। अब हम भाग चलें; यहां से चल दें। क्योंकि सम्राट के पलायन का जो समारोह आरम्भ होने वाला है उसमें जो भयानक शोर मचेगा उसे सहन करने में हमारे आधुनिक नाजुक कान असमर्थ होंगे। सुनिए। वह शुरू भी हो मया। देखिए! सारा नगर उलट-पलट हो रहा है।

निश्चय ही, यह पूर्व का सबसे जनाकीर्ण नगर है। लोगों का कैसा हुजूम है! सब श्रेणियों एवं युगों का कैसा मिश्रण है! सम्प्रदायों एवं राष्ट्रों का कैसा बहुत्व है! पोशाकों की कैसी विविधता है! भाषाओं का कैसा हंगामा है! खूंखार पशुओं की क्या चीख है! वाद्ययंत्रों की क्या झंकार है। तत्वज्ञानियों का कैसा जमघट है!

आइए, हम दूर भागें।

पर, एक क्षण रुक जाइए। सर्कस के क्रीड़ांगन से कैसा कोलाहल उठ रहा है? इसका क्या मतलब है, कृपा कर बताइए।

वह? वह कुछ नहीं है। एपीदाफने के श्रेष्ठ एवं स्वतन्त्र नागरिक घोषणा कर रहे हैं कि वे अपने सम्राट की निष्ठा, शौर्य, विवेक तथा देवत्व से पूर्ण सन्तुष्ठ हैं, इसके अलावा उसकी अतिमानुषी गति के आंखों-देखे गवाह होने के कारण इसे अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि काव्य-मुकुट के साथ ही इस चरण-धावन प्रतियोगिता में विजय पाने की जयमाला भी उसके सिर पर पहिना दें। अगली ओलम्पिक प्रतियोगिता में तो उसे विजय मिलेगी ही; वे पेशगी उसका अभिनन्दन कर रहे हैं।

दैत्य-कथा

(मनोवैज्ञानिक आत्मकथाओं की शैली पर)

दैत्य ने अपना हाथ मेरे सिर पर रखते हुए कहा—"मेरी बात सुनो। इस अभिशप्त पृथ्वी पर एक ऐसा स्थान है जिसे तुमने अभी तक नहीं देखा होगा। और यदि किसी संयोग से तुमने देखा भी है तो किसी ऐसे प्रबल स्वप्न के बीच देखा होगा जो निद्रित मानव के मस्तिष्क में एक तूफान, एक आंधी की भांति आते हैं—उस निद्रित मानव के मस्तिष्क में जो निषिद्ध सूर्यरश्मियों के बीच सोया पड़ा हो। मैं यहां उन सूर्यरश्मियों की ओर इशारा कर रहा हूं जो निर्जन प्रान्त के उदासी-भरे मन्दिरों के शान्त स्तम्भों से फिसलती आती हैं। मैं जिस निर्जन प्रदेश की बात कह रहा हूं वह लीबिया का एक उजाड़ प्रदेश है और ज़ायर नदी के तीर पर फैला हुआ है। वहां कोई शान्ति नहीं है; कोई मौन नहीं है।

"नदी का पानी केसरिया और बीमार रंग लिए हुए है; उसकी

धारा समुद्र की ओर बहती बल्कि सूर्य की लाल-लाल आंखों के नीचे, तुमुल मरोड़भरी गति में सदा-सदा के लिए स्पन्दित होती रहती है। नदी के दोनों क्षरणशील किनारों पर भीमाकृति जल-नालियों का पीताभ जंगल फैला हुआ है। उस निर्जन में वे एक दूसरी की ओर देखती निश्वास लिया करती हैं और अपनी लम्बी भयावनी गर्दन आकाश की ओर उठाए हुए जब-तब अपना शाश्वत सिर हिलाती रहती हैं। उनके बीच से एक अस्पष्ट ध्वनि आती रहती है जो धरती के गर्भ में बहनेवाली जलधारा की गति जैसी होती है। और बस, वे एक दूसरे की ओर देखती निश्वास लेती रहती है।

"किन्तु उनके इस राज्य की भी एक सीमा है–तिमिराच्छन्न, भयानक, ऊंचे जंगल की सीमा। वहां हेब्राइड्स की तरंगों की भांति, लघु दुम निरन्तर हिलते रहते हैं किन्तु (आश्चर्य यह है कि) समस्त आकाश में कहीं कोई वायु नहीं है। लम्बे-लम्बे पुरातन वृक्ष तीव्र एवं प्रबल रव करते हुए निरन्तर इधर-उधर आन्दोलित होते रहते हैं। जंगल के ऊपर, सरसराहट की तेज़ आवाज़ के साथ, भूरे बादल सदा पश्चिम दिगन्त की ओर तब तक भागते चले जाते हैं जब तक कि वे अन्तरिक्ष की अग्निमयी दीवार पर झड़ के रूप में नहीं बदल जाते। किन्तु (आश्चर्य यही है कि) आकाश में कहीं कोई वायु नहीं। और ज़ायर नदी के तटों पर न कहीं शान्ति है, न मौन है।

"उस समय रात थी और पानी बरस रहा था। जब तक बरसता था वह पानी रहता था, किन्तु बरस चुकने पर, नीचे गिरकर, वह खून बन जाता था। मैं उन लम्बी नलिनियों के बीच, दलदल में, खड़ा था और वर्षा मेरे सिर पर गिर रही थी। और वे नलिनियां, अपनी विजनता की गम्भीरता में एक दूसरे की ओर देखती निश्वास फेंकती थीं।

"एकाएक क्षीण भयावने धुंध के बीच चांद उग आया। वह लाल रंग का था। मेरी निगाह नदी-तट पर खड़ी भीमकार भूरी चट्टान पर पड़ी जो चांद की रोशनी से प्रकाशित हो उठी थी। चट्टान भूरी थी, भयानक थी, ऊंची थी। इसके सामने की ओर पत्थर पर कुछ अक्षर खुदे थे; मैं जलनलनियों के दलदल में से होता हुआ उस ओर बढ़ा और इस इच्छा से तट के पास पहुंचा कि मैं पत्थर पर खुदे उन अक्षरों को पढ़ूं। किन्तु मैं उन अक्षरों को पढ़ नहीं सका। मैं फिर दलदल की ओर लौटने लगा। इसी समय चांद और अधिक लालिमा के साथ चमक उठा; मैं घूम पड़ा, और फिर चट्टान की ओर, अक्षरों की ओर नज़र डाली। लिखा था–

'अकेलापन।'

"मैंने ऊपर की ओर देखा। चट्टान के शिखर पर एक आदमी खड़ा था। मैंने अपने को जल-नलिनियों के बीच छिपा लिया कि वह

आदमी क्या करता है, यह देख सकूं। आदमी लम्बा, और आकार-प्रकार में शानदार था और कंधे से चरणों तक पुरातन रोम का लबादा पहिने हुए था। उसकी आकृति तो अस्पष्ट थी किन्तु उसकी सूरत-शक्ल देवता की-सी लगती थी, क्योंकि रात के आवरण, धुंध, चांद और ओस ने उसके मुखड़े को खुला रख छोड़ा था। उसकी भवें विचार में ऊपर उठीं हुई थीं; उसकी आंखें चिन्ता से डरावनी हो रही थीं और उसके गालों पर जो चन्द झुर्रियां पड़ीं थीं उनमें मैंने देखा कि शोक, और थकान और मानव के प्रति असन्तोष तथा एकान्त की कामना की कहानियां भरी हुई हैं।

"वह आदमी चट्टान पर बैठ गया, और अपने हाथ पर सिर झुका लिया, और निर्जनता की ओर देखने लगा। उसने नीचे लघु अशान्त झाड़ियों की ओर देखा, ऊपर लम्बे पुरातन वृक्षों को देखा, और ऊपर सरसराते आकाश को देखा, और लाल-लाल चांद को देखा। मैं नलिनियों में छिपा उस आदमी की कार्रवाइयां देखता रहा। और वह आदमी एकान्त में कांप उठा–किन्तु रात ढलती रही और वह चट्टान पर बैठा रहा।

"फिर आदमी ने अपना ध्यान आकाश से हटा लिया और नज़र उदासी भरी ज़ायर नदी पर, भयावने पीत जल प्रवाह पर और नलिनियों के विवर्ण प्रान्त पर लगा दी। वह नलिनियों के विश्वास

को, और उनके बीच से आती क्षीण ध्वनि को सुनने लगा। मैं अपने प्रच्छन्न स्थान में बैठा रहा और उस आदमी की कारगुजारियां देखता रहा। आदमी एकान्त में कांप उठा–किन्तु रात ढलती रही और वह चट्टान पर बैठा रहा।

"फिर मैं दलदल की खोहों में उतर पड़ा, और नलिनियों के जंगल में दूर तक चला गया, और दलदल की धसानों में रहनेवाले दरियाई घोड़ों को आवाज़ दी। दरियाई घोड़ों ने मेरी आवाज़ सुनी और वेहेमथों (एक बड़ा जानवर) को साथ लिए, चट्टान के नीचे तक आए और चांद के नीचे ज़ोर-ज़ोर से और भयानकता के साथ गर्जते रहे। और मैं आकर अपने गुप्त स्थान पर बैठ गया और उस आदमी की करतूतें देखता रहा। और वह आदमी एकान्त में कांप उठा–किन्तु रात ढलती गई और वह चट्टान पर बैठा रहा।

"तब मैंने कोलाहल का शाप देकर प्रकृति-तत्वों को अभिशप्त कर दिया। आकाश में भयावना तूफान घिर आया, जबकि इसके पूर्व वहां वायु का नाम-निशान भी न था। और तूफान के आघात से आकाश क्रुद्ध हो उठा, और (उस) आदमी के सिर पर बारिश पड़ने लगी; नदी में बाढ़ आगई; नदी घूर्णित होकर फेनिल हो उठी; नलिनियां अपनी क्यारियों में चीखने लगीं; आंधी में वृक्ष टूटकर गिरने लगे; बादल गर्जा और बिजली गिरी; चट्टान नींव से हिल उठी।

मै अपने गुप्त स्थान में बैठा उस आदमी की कार्रवाइयां देखता रहा। आदमी एकान्त में कांप उठा, किन्तु रात ढलती गई और वह चट्टान पर बैठा रहा।

"तब मैं और क्रुद्ध हो उठा और मौन के शाप से, नदी, नलिनी-दल वायु, जंगल, आकाश, बिजली और नलिनियों के निश्वास को अभिशप्त कर दिया। वे अभिशप्त होकर निस्पन्द हो गये। आकाश के उच्च मार्ग पर उठते हुए चांद का चलना बन्द हो गया; गर्ज शान्त हो गई; बिजली का चमकना बन्द हो गया; बादल निश्चेष्ट लटके रहे; जल अपने स्तर पर आकर शान्त हो गया; पेड़ों का हिलना बन्द हो गया और जल-नलिनियों के निश्वास समाप्त हो गए। अब उनके बीच से कोई ध्वनि नहीं आती; यहां तक कि उस विस्तृत, असीम मरुस्थल में कहीं किसी ध्वनि की छाया या नाम भी नहीं रह गया। मैंने चट्टान के लेख की ओर निगाह डाली; वे बदल गए थे और अक्षर मौन बन गए हैं।

"और मेरी निगाहें उस आदमी के चेहरे-मोहरे पर पड़ीं; उसकी मुखाकृति भय से विवर्ण हो गई थी। उसने जल्दी से हाथ से अपना सिर ऊपर उठाया, चट्टान पर खड़ा हो गया और सुनने लगा। किन्तु उस विस्तृत सीमारहित मरु में कहीं कोई आवाज़ नहीं थी और चट्टान के अक्षर मौन बन गए। वह आदमी कांप उठा, अपना मुंह

उधर से फिरा लिया और दूर, बहुत दूर भाग गया मैंने फिर उसे नहीं देखा।"

मागी[1] के ग्रन्थों में—मागी के लौहबन्ध शोकवह ग्रन्थों में अनेक सुन्दर कहानियां हैं। मैं कहता हूं कि उनमें आकाश और पृथ्वी और शक्तिमान सागर के भव्य इतिहास हैं—और सागर, पृथ्वी तथा उच्च आकाश पर शासन करनेवाले जिन्नों की कथाएं हैं। साइबिल्स की सूक्तियों में भी बड़ा ज्ञान भरा पड़ा है, और डोडोना के इर्दगिर्द के धुंधले पत्तों के कम्पन में पवित्र-पवित्र बातें सुनाई पड़ती हैं, किन्तु अल्लाह को हाज़िर जानकर मैं कहता हूं कि मकबरे की छाया तले मेरे पास बैठकर दैत्य ने जो गाथा सुनाई थी, उसे मैं इन सबसे अद्भुत मानता हूं। और जैसे ही दैत्य ने यह किस्सा खत्म किया, वह मकबरे की गुफा में चला गया और ज़ोर से हंस पड़ा। मैं उसके साथ हंसी में शरीक न हो सका और चूंकि मैं हंस नहीं सका, उसने मुझे शाप दिया। और जो बनबिलाव मकबरे में सदा रहता है, वह उससे बाहर निकल आया और दैत्य के चरणों में पड़ गया और इस प्रकार पड़ा हुआ उसके मुंह पर आंखे गड़ाए देखने लगा।

1. मागी—प्राचीन फारसियों के पुजारी या जादूगर, जिनका उल्लेख बाइबिल में भी है।

चन्द्रलोक की यात्रा[1]

राटर्डम से जो अन्तिम समाचार प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार वह नगर गहरी दार्शनिक उत्तेजना की स्थिति में है। इसमें सन्देह नहीं कि जो घटना वहां घटित हुई है वह ऐसी आशातीत है, इतनी अनोखी है, पूर्वप्रचलित धारणाओं से इतनी भिन्न है कि बहुत जल्द सारे यूरोप में तहलका मच जाएगा, सम्पूर्ण भौतिकी विचलित हो उठेगी; सम्पूर्ण गतिविज्ञान एवं ज्योतिष दंग रह जाएगा।

1. यह कथा इस फाल शीर्षक से पो ने लिखी थी। ऐसी ही एक कहानी श्री लाक ने चन्द्रकथा (मून स्टोरी) के नाम से उसी समय के लगभग छपवाई थी। किसने किससे कहानी चुरा ली है, इसे लेकर समाचारपत्रों में एक वावेला मच गया था। सच पूछा जाए तो दोनों कथाओं की प्रकृति भिन्न है। एक व्यंग-कथा के रूप में है, दूसरी सहज कहानी है। पो ने अपनी सफाई देते हुए कहा था कि उसकी रचना 'सर्दन लिटरेरी मेसेंजर' पत्र में लाक की रचना प्रकाशित होने के तीन सप्ताह पूर्व ही छप चुकी थीं।

बात यह है कि.....साल के......दिन (तिथि के बारे में मैं निश्चित नहीं हूं) आदमियों की बहुत बड़ी भीड़, जिसके उद्देश्य का वर्णन समाचार में नहीं प्रकट किया गया है, सुव्यवस्थित राटर्डम[2] नगर के बड़े मैदान में इकट्ठी हुई थी। दिन गरम था, यद्यपि उस मौसम में आम तौर पर ऐसा होता नहीं, और हवा बिल्कुल बन्द थी किन्तु इसके कारण लोगों में कोई कुढ़न नहीं थी क्योंकि बीच-बीच में, ज़रा-ज़रा-सी देर के लिए, हलकी-सी सुखद फुहार पड़ जाया करती थी। ये फुहारें वृहत्श्वेत मेघपुंज से, जो नीलाकाश पर फैले हुए थे, गिरती थीं। लगभग दोपहर के समय भीड़ में उत्तेजना फैल गई; दस हज़ार जिह्वाएं चहक उठीं, और क्षणभर में दस हज़ार मुख आकाश की ओर उठ गए; साथ ही दस हज़ार तम्बाकू-नलिकाएं (पाइप) दस हज़ार मुखों के कोनों से नीचे आ गईं और राटर्डम का समस्त वातावरण एक लम्बे, ऊंचे एवं भयानक शोर से, जिसकी उपमा केवल नियाग्रा प्रपात शोर से की जा सकती है, प्रतिध्वनित हो उठा।

इस कोलाहल के कारण का शीघ्र ही पता चल गया। बात यह थी कि पूर्वोक्त मेघ-पुंज के पीछे से मुक्त नीलाकाश-खण्ड पर एक विलक्षण, बहुजातीय, परन्तु ठोस चीज़ उदित होती दिखाई पड़ी।

2. हालैण्ड का एक नगर।

उसकी आकृति ऐसी विचित्र थी, विविधि भाग ऐसे सनक-भरे ढंग पर जुड़े हुए थे कि नीचे खड़े दबंग नागरिकों की समझ में कुछ न आया। वे मुंह बाये उसे देखते रह गए। यह क्या चीज़ हो सकती है? यह किस शकुन का संकेत करती है? कोई नहीं जानता, कोई कल्पना नहीं कर सकता, नगराधिपति माइनहीर सुपर्बस बॉन अण्डरडक तक की समझ में नहीं आता कि किस प्रकार इस रहस्य का उद्‌घाटन किया जा सकता है। चूंकि कोई और समझदारी की बात सम्भव न थी, सबने अपने पाइप पुनः अपने-अपने मुंह के बाएं कोने में दबा लिए। वे दाहिनी आंख उस अनोखी वस्तु पर लगाए हुए कश लेते, फिर रुक जाते, फिर कश लेते, चहलकदमी करते, आकाश की ओर देखते, रुक जाते और फिर कश लगा लेते। यही क्रम चल रहा था।

इस बीच वह पदार्थ, जो इतनी उत्कण्ठा और धूम्रपान का कारण था, नगर की दिशा में नीचे और नीचे उतरता आ रहा था। थोड़ी ही देर में वह इतने नीचे आ गया कि उसे ठीक तरह से देखा-पहिचाना जा सकता था। लगता था—लगता क्या था, था ही—वह एक गुब्बारा है, लेकिन जिस ढंग का गुब्बारा वह था, वैसा राटर्डम में पहले कभी देखा नहीं गया। ज़रा मैं पूछूं तो कि केवल गन्दे अखबारों के द्वारा बने हुए गुब्बारे की बात किसी ने सुनी भी है?

हालैण्ड में तो लोगों की नाक के नीचे या ऊपर ही सही, किसी नेऐसी सामग्री का ऐसे काम के लिए उपयोग होते सुना नहीं है। यह तो राटर्डम के अधिवासियों के ज्ञान का भयंकर अपमान था। जहां तक उस पदार्थ की आकृति का सवाल है, वह भी घृणाजनक थी; लगता था मानो मस्खरे का कोई टोप उलटकर रख दिया गया हो। जब वह पदार्थ कुछ और निकट आ गया तब भी देखने पर यह उपमा उसपर कुछ कम नहीं फबती थी, क्योंकि उसके शीर्षभाग से एक झब्बा लटक रहा था और शंकु के आधार-भाग से लघुवाद्यों का, जो भेड़ों के गले में पहिनाई जाने वाली घण्टियों से लगते थे, एक गोलक बंधा हुआ था। इन वाद्यों से निरन्तर झंकार हो रही थी। इससे भी भद्‌दा यह लगता था कि इस अद्‌भुत मशीन के छोर की नीली काष्ट-पट्‌टिकाओं से कार के समान एक वृहदाकार छज्जेदार हैट लटक रहा था जिसका कण्ठभाग (ब्रिम) अत्यधिक चौड़ा था और जिसके अर्द्धगोलाकार शीर्ष में काला फीता और रजत् बक्सुआ लगा हुआ था। परन्तु यहां यह बात उल्लेखनीय है कि राटर्डम के अनेक नागरिक कसम खाने लगे कि यह हैट उनका पहले कई बार देखा हुआ लगता है, बल्कि सारे जनसमूह को वह परिचित-सा लग रहा था। श्रीमती ग्रेटिलफाल तो उसे देखते ही प्रसन्नता से चिल्ला उठीं और कहा कि यह तो हमारे ही पति के हैट के समान लग रहा है।

यह एक ऐसी परिस्थिति थी जिसपर और ज़्यादा विचार करने की आवश्यकता थी, क्योंकि फाल सचमुच ही, अपने तीन साथियों-सहित, लगभग पांच साल पहले राटर्डम से अकस्मात् और अकारण, गायब हो गया था और इस घटना के दिन तक, लाख प्रयत्न करने पर भी, उसका कुछ पता नहीं लगा था। कुछ ही दिन पहले राटर्डम के पूर्व की ओर एक निर्जन स्थान पर कूड़े-कर्कट के बीच कुछ हड्डियां मिलीं थीं जो देखने में आदमी की हड्डियों के समान लगती थीं। कुछ लोग तो यहां तक कल्पना करने लगे थे कि उस जगह कोई न कोई घृणित हत्या हुई अवश्य है और बहुत सम्भवतः जिनकी हत्या हुई है वे हंस फाल और उसके साथी ही रहे होंगे।

जब तक वह गुब्बारा, और निस्संदेह वह गुब्बारा ही था, धरती से सौ फुट की ऊंचाई तक आ गया था और नीचे के लोग उसमें बैठे व्यक्ति को काफी साफ रूप में देख सकते थे। वह कोई विलक्षण लघु व्यक्ति मालूम होता था। वह दो फुट से ज़्यादा ऊंचा न रहा होगा, किन्तु यदि एक गोलाकार रिम, जो गुब्बारे की रस्सियों से बंधी हुई थी, उसके सीने तक के भाग को दबाकर स्थिर न रखे होती तो बहुत कम होने पर भी यह ऊंचाई उसका संतुलन नष्ट कर देने और उसे लघुकार (गाड़ी) के छोर पर गिरा देने को पर्याप्त थी। उस आदमी का शरीर अनुपात से ज़्यादा चौड़ा था, जिससे सारी

आकृति बहुत भद्दे ढंग की और गोल-मटोल हो गई थी। उसके पांव तो दिखाई ही न पड़ते थे, यद्यपि कार के तल-भाग या ज़्यादा ठीक यह कहना होगा कि हैट के शीर्षभाग, के एक छिद्र से कभी-कभी सींग जैसी कोई संदेहजनक चीज़ निकलती दिखाई पड़ जाती थी। उसके हाथ बहुत ज़्यादा लम्बे थे। उसके केश बहुत भूरे थे और सिर के पिछले भाग में जूड़े की भांति एकत्र कर दिए थे। उसकी नाक अत्यधिक लम्बी, टेढ़ी और फूली हुई थी। आंखें बड़ी-बड़ी और चमकदार थीं; आयु के अनुसार झुर्रियां पड़ जाने पर भी उसका चिबुक और उसके कपोल चौड़े, स्थूल तथा दोहरे थे, किन्तु सिर के किसी भाग में कहीं किसी प्रकार के कान के कोई चिन्ह न थे। वह अनोखा लघु मानव नीले आकाशी रंग का ढीला-ढाला ओवरकोट तथा उससे मैच करता एक चुस्त विरजिस (ब्रिचेज़) या पायजामा पहिने था। पायजामे में घुटने के पास रजत् बक्सुए बंधे थे। अन्तर्वस्त्र किसी पीत चमकीले कपड़े का बना था, सिर के एक छोर पर सफेद रेशमी टोपी थी। खून की भांति लाल रंग का एक रेशमी रुमाल उसके कण्ठ में लपेटा हुआ था। जिसका सिरा खूबसूरती के साथ उसके सीने पर लटक रहा था और जिसमें बहुत बड़ी एक गांठ पड़ी हुई थी।

जैसा मैं पहले कह चुका हूं, पृथ्वी से लगभग एक सौ फुट ऊपर

तक उतर जाने के बाद हमें लगा कि वह लघु आदमी एकाएक भयग्रस्त हो गया है और धरती पर उतरने को किसी तरह तैयार नहीं है। उसने बड़ी कठिनाई से कनवास का एक बैग उठाया और उससे बहुत-सी रेत नीचे फेंक दी क्षण-भर में वह स्थिर हो गया। इसके बाद उसने जल्दीबाज़ी और उत्तेजना के साथ अपने ओवरकोट की बगली जेब से एक बड़ी चर्ममण्डित पाकेटबुक़ निकाली। उसे अजीब तरीक से अपने हाथ में लेकर आश्चर्य-भरी आंखो से देखता रहा। उसे उसके भार पर आश्चर्य हो रहा था। आखिरकार उसने उसे खोला और उसमें से एक बहुत बड़ा पत्र बाहर निकाला, जिसपर लाल चमड़े की मुहर लगी हुई थी और जो लाल फीते से बंधा हुआ था। उसने उसे इस तरह फेंका कि वह ठीक नगराधिकारी सुपर्बस वॉन अण्डरडक के चरणों पर आकर गिरा। इधर श्रीमन् सुपर्बस उस पत्र को उठाने के लिए झुके, उधर वह आदमी उसी प्रकार असंतुष्ट और अपने ज़्यादा ठहरने का कोई काम न देख वहां से विदा हो जाने की तैयारी करने लगा। पुनः ऊपर उठने के लिए भार कम करना ज़रूरी था, इसलिए उसने एक पर एक आधे दर्जन रेत से भरे बैग उन्हें खोलकर रेत गिराने की जगह सीधे ही लुढ़काने शुरू कर दिए। दुर्भाग्यवश ये बैग झुके हुए नगराधिकारी की पीठ पर आकर गिरते रहे और उस बेचारे को राटर्डम के हर

एक अधिवासी के सामने ही बार-बार पृथ्वी पर दण्डवत् करते देखा गया। अण्डरडक ने इस अपमान को शान्ति के साथ सहन नहीं किया और उस आदमी की धृष्टता के उत्तर में हर बार दण्डवत् करते हुए वह पाइप से फूत्कार छोड़ता रहा– पाइप जिसे वह इस दुर्दशा के बीच भी अपना सारा ज़ोर लगाकर पकड़े रहा, और जिसे वह मृत्यु के दिन तक पकड़े रहने का इच्छुक था।

इसी बीच गुब्बारा, लवा पक्षी की भांति, आकाश में उठा, और नगर के बहुत ऊपर उड़ता हुआ अन्त में उन बादलों के पीछे जा छिपा जिनके बीच से निकलकर आया था, और इस प्रकार राटर्डम के निवासियों के आश्चर्यमग्न नयनों से सदा के लिए दूर हो गया। अब सबका ध्यान उस पत्र की ओर गया जिसको उठाने में श्रीमान् नगराधिकारी माइनहीन सुपर्बस वान अण्डरडक के शरीर एवं मर्यादा दोनों को इतनी क्षति पहुंची थी। सब कुछ होते हुए भी उक्त पदाधिकारी महोदय ने उस लिफ़ाफ़े पर नज़र डालकर यह देख लिया था कि वह उपयुक्त हाथों में आया है क्योंकि वह राटर्डम ज्यौतिष-महाविद्यालय के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में उनके और प्रौफेसर रब-ए-डब के नाम भेजा गया था। इसलिए वह इन उपाधिधारियों-द्वारा वहीं खोल लिया गया। लिफ़ाफ़े से निम्नलिखित असाधारण एवं बहुत गम्भीर पत्र निकला :-

श्रीमन् मानवीय वान अण्डरडक एवं रब-ए-डब
अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष राजकीय ज्यौतिष-महाविद्यालय
राटर्डम की सेवा में,

श्रीमानों को कदाचित् याद होगा कि हंस फाल नाम का धौंकनी (भाथी) की मरम्मत का पेशा करनेवाला, एक मिस्त्री, लगभग पांच साल पहले, तीन और आदमियों के साथ, ऐसी परिस्थिति में गायब हो गया था, जिसे सभी लोगों ने आकस्मिक और अकारण समझा होगा। यदि आप लोग विश्वास करें तो मैं कहूंगा कि इस पत्र का लेखक खुद वही हंस फाल है। मेरे अधिकांश नगरबन्धु जानते हैं कि 40 साल की लम्बी अवधि से मैं सायरक्रात बीथी के छोर पर वर्गाकार ईंटेवाली इमारत में रह रहा था और गायब होने के समय भी वहीं था। न जाने कब से मेरे पूर्वज भी वहीं रहते आये थे। हम लोग धौंकनी की मरम्मत करने का सम्मानित एवं लाभजनक पेशा करते थे। सच तो यह है कि जबतक सब लोगों के दिमाग संकटों से और राजनीति से अस्थिर नहीं हुए थे, अर्थात कुछ समय पहले तक मेरे पेशे से अच्छे किसी पेशे की राटर्डम के निवासी न तो कल्पना करते थे और न उसके योग्य थे। साख अच्छी थी, काम की कमी नहीं थी, और सबके पास पैसा था, शुभाकांक्षा थी। किन्तु जैसा कि मैं कह रहा था, बहुत जल्द हमें स्वतंत्रता एवं लम्बे भाषणों,

उग्रवाद तथा इसी प्रकार की बातों के भयानक प्रभाव का अनुभव होने लगा। जो लोग दुनिया में सबसे अच्छे ग्राहक थे, उनके पास अब हमारा ख़्याल करने के लिए समय ही नहीं रहा। वे कहते थे कि अब उन्हें क्रान्तियों के बारे में पढ़ने, बुद्धि की यात्रा तथा युग की भावना को प्रगतिशील रखने में ही अधिक से अधिक समय लगाना है। अगर आग फैलानी हो तो वह अखबार के ज़रिये आसानी के साथ फैलाई जा सकती है। मैं बिना किसी संशय के कह सकता हूं कि सरकार ज्यों-ज्यों दुर्बल होती गई, त्यों-त्यों, उसी अनुपात में, चमड़े और लोहे का टिकाऊपन बढ़ता गया, क्योंकि शीध्र ही वह समय आ गया जब राटर्डम में किसी भी धौंकनी में टांके लगाने या उसे हथौड़े से पीटकर ठीक करने की ज़रूरत ही नहीं रह गई। इस स्थिति को सहन करना असम्भव था; शीघ्र ही मेरी दशा चूहे-सी छीन-हीन हो गई। मेरे बाल-बच्चे भी थे, औरत भी थी इसलिए मेरा भार असहनीय हो गया। मैं दिन-रात यही सोचा करता था कि अपना जीवन समाप्त कर देने का सबसे शीघ्रता का और सबसे सुविधा जनक उपाय क्या हो सकता है किन्तु ऋणदाताओं के मारे विचार करने का अवकाश ही नहीं मिलता था। वे सुबह से रात तक मेरे घर पर घेरा डाले रहते थे इसलिए उस पिंजरबद्ध बाघ के समान जो अपने कठघरे की छड़ों पर गुस्सा निकालता है, मैं

गर्जने और फूत्कार छोड़ने लगा। इन ऋणदाताओं में तीन आदमी खासतौर पर ऐसे थे जिनके मारे मेरा नाक में दम था; वे सदा मेरे घर पर पहरा देते थे और क़ानून के सहारे मुझे कठोर दण्ड की धमकी देते रहते थे। मैने मन ही मन यह कसम खाई कि यदि कभी इन्हें अपने चंगुल में पाया गया तो इनसे बहुत बुरा बदला लूंगा। बदले के सुखलाभ की कल्पना के कारण ही मैंने बन्दूक से अपना सिर उड़ाकर तुरन्त आत्महत्या कर लेने की योजना को स्थगित कर दिया। मैंने अपने क्रोध को तब तक छिपाकर और उन्हें वादों तथा मीठी-मीठी बातों में भुलाकर रखना ठीक समझा, जबतक सौभाग्य-वश मुझे बदला लेने के लिए अवसर न प्राप्त हो जाए।

एक दिन की बात है कि अपने ऋणदाताओं की आंख बचाकर, और दिनों से कहीं ज़्यादा निराशा में डूबा, मैं बाहर निकल गया और बड़ी देर तक निरुद्देश्य अज्ञात गलियों में घूमता रहा। योंही घूमता-फिरता मैं एक पुस्तक-विक्रेता की दुकान से जा टकराया। वहां ग्राहकों के उपयोग के लिए एक कुर्सी रखी हुई थी। मैं बड़ी रुखाई के साथ उस पर बैठ गया और मेरे हाथ में जो पहली किताब लगी उसे खोलकर देखने लगा। संयोग से यह अनुमानात्मक ज्यौतिष पर लिखी लघु पुस्तिका निकली। उसे या तो बर्लिन के प्रोफेसर इनके ने, या समान नाम के किसी फ्रांसीसी ने, लिखा था। इस प्रकार के

विषयों की मुझे थोड़ी जानकारी थी, इसलिए मैं पुस्तक पढ़ने में अधिकाधिक तल्लीन होता गया—और जब मैंने यह देखने के लिए सिर उठाया कि मेरे इर्द-गिर्द क्या हो रहा है तो मैं उसे आदि से अन्त तक दो बार पढ़ चुका था। अब तक अंधेरा होने लगा था, इसलिए मैं घर की ओर चल पड़ा। किन्तु उस किताब की अमिट छाप मेरे मन पर पड़ चुकी थी और धुंधली गलियों से गुज़रते हुए, उसके लेखक के आश्चर्यजनक एवं अस्पष्ट तर्कों को मैं अपनी स्मृति में उलटता-पलटता रहा। कुछ विशिष्ट वाक्यों ने मेरी कल्पना को असामान्य रूप में प्रभावित कर दिया था। मैं उनपर जितना ही विचार करता, मेरे अन्दर जगी हुई उत्कण्ठा उतनी ही बढ़ती जाती थी। मैंने सामान्य शिक्षा भी बहुत कम पाई थी, फिर प्रकृति-विज्ञान-सम्बन्धी विषयों में तो विशेषरूप से अज्ञान था किन्तु जो कुछ मैंने पढ़ा था उसे समझने की अपनी अयोग्यता से निराश हो जाने या उसके कारण जो अनेक अस्पष्ट सवाल मन में उठ खड़े हुए थे उन पर अविश्वास करके बैठ जाने की जगह, उलटे मेरी कल्पना और प्रखर उठी। मैंने यह शंका करने की धृष्टता की कि अनुशासन-विहीन मस्तिष्कों में उठनेवाली अनगढ़ धारणाएं देखने में भले ठीक लगती हों किन्तु उनमें प्रायः प्रेरणा या अन्तर्दृष्टि का सहज गुण या बल नहीं होता। मैं एक पग और आगे जाकर शंका करने

लगा कि विशुद्ध अनुमानात्मक प्रकृति के मामलों में गूढ़ता कहीं खुद ही तो असत्य एवं भ्रांति का स्त्रोत नहीं है। दूसरे शब्दों में मैं यह विश्वास करने लग गया, और अब भी विश्वास करता हूं, कि स्वयं अपने अन्दर सत्य दिखाऊं या छिछला पदार्थ है, और अधिकांश मामलों में गहराई वस्तुतः खाइयों में, गारों में, जिनमें हम उसकी खोज करते हैं, उससे कहीं अधिक होती है। जितनी उन वास्तविक स्थितियों में होती है जिनमें उसे प्राप्त किया जाता है। स्वयं प्रकृति मेरे इन विचारों का समर्थन करती प्रतीत होती थी। आकाशस्थ नक्षत्रों का दर्शन करते हुए मेरे मन में ज़ोरों से यह विचार उठा कि जब मैं अपनी आंखें एक तारे पर सीधे केन्द्रित कर देता हूं तो उतनी अच्छी तरह उसे ठीक-ठीक देखने में असमर्थ रह जाता हूं जितनी मैं तब देख पाता हूं जब मैं उसपर नहीं, उसके आसपास निगाह डालता हूं। उस समय मुझे मालूम नहीं था कि इस विरोधाभास का कारण यह है कि चाक्षुष क्षेत्र का केन्द्र स्थल प्रकाश की दुर्बल छापों को चक्षुपटल के बाह्य अंशों की अपेक्षा कम सफलता से ग्रहण करता है। यह तथा इस तरह की दूसरी जानकारियां तो मुझे अपने आगे के घटनापूर्ण पंचवर्षीय जीवन में प्राप्त हुई। इस अवधि में मैंने अपने पूर्व जीवन की शुद्र स्थितियों के साथ लगी धारणाओं को दूर कर दिया और बहुत ही भिन्न प्रकार के पेशों में लग जाने के कारण

धौंकनी की मरम्मत करनेवाले को भूल गया हूं किन्तु जिस समय की बात मैं कह रहा हूं उस समय नक्षत्र-दर्शन से निकाले उक्त निष्कर्ष ने जैसे मेरे पहले के विचारों की पुष्टि कर दी हो, मैंने उस रास्ते पर जाने का मन में निश्चय कर लिया जिसका अनुसरण बाद में करता रहा हूं।

जब मैं घर पहुंचा तो देर हो चुकी थी, इसलिए मैं तुरन्त सोने चला गया। किन्तु मन में इतने विचार भरे थे कि नींद की गुंजाइश ही न थी और मैं सारी रात ध्यान में खोया रहा। दूसरे दिन सुबह बहुत जल्दी उठ गया और ऋणदाताओं से पिण्ड छुड़ाने के ख़्याल से फिर पुस्तकविक्रेता की दुकान की ओर चल पड़ा। मेरे पास थोड़ी-बहुत जो नकदी बची थी उससे मैंने यांत्रिकी एवं व्यवहारिक ज्यौतिष की कुछ किताबें खरीद लीं। उन्हें लेकर मैं चुपचाप घर लौट आया और फुर्सत का एक-एक क्षण मैंने उन्हें पढ़ने में लगाया। शीघ्र ही मैंने इस प्रकार के अध्ययन में इतनी कुशलता प्राप्त कर ली जो मेरी योजना की पूर्ति के लिए पर्याप्त थी। इस अवधि के अन्दर मैं अपने उन तीन ऋणदाताओं को हर तरह से अपने अनुकूल बनाने की कोशिश भी करता रहा, जिन्होंने मुझे इतनी तकलीफ दी थी। अन्त में अपने इस प्रयत्न में मुझे सफलता हुई। मैंने घर का फर्नीचर बेचकर उनके ऋण का कुछ हिस्सा चुका दिया और इस बात पर

उन्हें राज़ी कर लिया कि जिस लघुयोजना की बात मै सोच रहा हूं उसके पूरा हो जाने पर शेष ऋण भी मैं चुका दूंगा। मैंने उस योजना में सहायक होने का अनुरोध भी उनसे किया। वे मूर्ख थे, इसलिए अपने काम में उनका उपयोग कर लेने में मुझे ज़्यादा कठिनाई नहीं हुई।

उनसे निबटकर मैने आगे की बातों पर ध्यान दिया। पहले मैंने अपनी पत्नी को मिलाया और उसकी मदद से जो भी ज़ायदाद मेरे पास बच गई थी, उसे अत्यन्त सावधानतापूर्वक और गोपनीय रीति से, थोड़ा-थोड़ा करके, विविध बहानेबाज़ियों के साथ, गिरवी रखना शुरू कर दिया। उस समय मैंने इस विचार को भी मन से हटा दिया था कि भविष्य में इनका भुगतान किस प्रकार किया जाएगा। इस तरह मैंने काफी नकदी इकट्ठी कर ली। अब मैंने बीच-बीच में 12-12 गज़ के टुकड़ों में बढ़िया मलमल, वार्निश, मोटा बंटा सूत खरीदना शुरू किया; फिर आर्डर देकर एक गहरा खपच्चियों का एक टोकरा बनवाया। मतलब एक बहुत बड़े गुब्बारे के लिए जो भी सामान ज़रूरी थे, उन्हें खरीद लिया। अब मैंने अपनी पत्नी को गुब्बारा बनाने का आदेश किया और उसे हर तरह की जानकारी और सहायता देता रहा। मोटे बंटे सूत से मैंने एक बड़ा जाल तैयार किया, उसे एक चक्र में बांधा; उसमें रस्सियां लगा दीं। फिर कोणमापक पादयंत्र, कम्पास, दूरबीन,

बैरोमीटर तथा ज्योतिष-सम्बन्धी दो यंत्र, जिन्हें सामान्यतः लोग नहीं जानते, खरीदे। अब मैंने अपने प्रयोगों के लिए राटर्डम नगर के बाहर पूर्व की ओर एक निर्जन स्थान खोज निकाला और वहां लोहे की पट्टियों से कसे हुए कुछ पीपे पहुंचा दिए। इनमें से हर एक में लगभग पचास गैलन द्रव आ सकता था। एक और भी पीपा ले गया जो इनसे बड़े आकार का था। टिन की बनी 10 फुट लम्बी तीन इंच घेरे की छः नलिकाएं भी लीं। इनके अलावा एक विशेष प्रकार का धात्विक या अर्ध-धात्विक पदार्थ भी, जिसका नाम मैं नहीं बताऊंगा, वहां पहुंचा दिया। एक सामान्य एसिड (अम्ल) की बारह संकरे गलेवाली बोतलें भी ले गया। यह सारा सामान धीरे-धीरे करके रात के अंधियारे में वहां पहुंचाया जाता रहा। अन्तिम पदार्थों के सहारे जो गैस बनानी थी वह मेरे पहले और किसी ने न बनाई थी। इसका रहस्य प्रकाशित करने में मुझे कोई कठिनाई नहीं है किन्तु उस पर अधिकार वस्तुतः नांज़ (फ्रांस) के एक नागरिक का है जिसने कुछ शर्तों पर उसकी जानकारी मुझे दी थी। उसी ने, मेरे इरादों की जानकारी के बिना ही, एक जन्तु की झिल्ली से मुझे ऐसे गुब्बारे बनाने की विधि बताई जिससे किसी गैस का निकल जाना लगभग असम्भव था। किन्तु मैंने देखा कि उसका बनाना बड़ा व्ययसाध्य है। मुझे यह विश्वास नहीं था कि मलमल के ऊपर कच्चे रबर के घोल का पलस्तर लगाकर भी वैसी

ही चीज़ बनाई जा सकती है। मैं इस स्थिति का वर्णन इसलिए कर रहा हूं कि इसकी सम्भावना है कि आगे वह व्यक्ति नये प्रकार की गैस से ऐसे गुब्बारे को उड़ाने का प्रयत्न करे और मैं उसे एक अनोखे आविष्कार का श्रेय लेने के अवसर से वंचित नहीं करना चाहता।

गुब्बारे में गैस भरने के समय जिन छोटे कनस्तरों से काम लेने की बात थी उनके लिए मैने दो फुट गहरा गड्ढा अपने हाथ से खोदा। गड्ढे का घेरा लगभग पच्चीस फुट रहा होगा। इस घेरे के बीच में मैंने बड़े पीपे को रखने के लिए तीन फुट गहरा गड्ढा खोदा। पांच छोटे गड्ढों में मैने एक-एक करके पचास गैलनवाले कनस्तर रख दिए और बड़े गड्ढे में डेढ़ सौ पौण्ड बारूद से भरकर बड़ा पीपा रख दिया। इन सबको ढकी हुई सुरंगों या नलिकाओं से जोड़ दिया। फिर एक छोटे पीपे या कनस्तर में चार-फुट लम्बी धीमी-दियासलाई (स्लोमैच जो बारूद में धीरे-धीरे आग लगाने के काम आती है) का सिरा डाल दिया और गड्ढे को ढक कर उसपर एक पीपा इस तरह रख दिया कि दियासलाई का दूसरा सिरा ज़रा-ज़रा उसके बाहर निकला रहे, और बाहर से दिखाई भी न पड़े। अब मैने शेष गड्ढों को भी भर दिया और पीपों को ठीक ढंग से अपने-अपने स्थान पर रख दिया।

इस सब चीज़ों के अलावा वायुमण्डलीय वायु (एटमोस्फेरिक

एयर) को सघन करनेवाला जो सुधरा यंत्र मोशिये ग्रिम ने बनाया था उसे भी लेजाकर वहीं छिपा दिया। मैं जिस कार्य में उसका उपयोग करना चाहता था उसकी दृष्टि से मुझे उसमें काफी परिवर्तन करने पड़े। किन्तु घोर अध्यवसाय और लगन से मैंने अपनी सब तैयारी पूरी कर लेने में सफलता प्राप्त की। शीघ्र ही मेरा गुब्बारा भी तैयार हो गया। उसमें चालीस हज़ार घनफुट गैस भरने की गुंजाइश थी। तब वह मेरे सम्पूर्ण यंत्रों के साथ मुझे ऊपर ले जाएगा और साथ ही एक सौ पछत्तर पौन्ड भार-सामग्री (बैलेस्ट) भी ले जा सकेगा। मैंने उसपर तीन-चार बार वार्निश कर दी थी और इस तरह सूती मलमल भी काफी मज़बूत, टिकाऊ और काम के लायक बन गई थी।

जब सब तैयारी हो गई तब मैंनें अपनी पत्नी को कसम दिलाकर प्रतिज्ञा कराई कि पुस्तक-विक्रेता के यहां पहली बार जाने से लेकर अब तक की हमारी सब कार्रवाई वह गुप्त रखेगी। अपनी ओर से मैंने वादा किया कि जितनी जल्दी लौटना सम्भव होगा मैं लौट जाऊंगा। मेरे पास जो कुछ भी धन शेष था, वह सब मैंने उसे दे दिया और उससे विदा ली। उसकी ओर से मुझे कुछ भय भी न था। वह काफी चतुर थी और दुनिया में मेरी सहायता बिना भी अपना काम चला लेने में समर्थ थी। सच पूछिए तो वह मुझे सदा

ही निठल्ला, घर पर बोझ, और ख्याली पुलाव पकाने वाला समझती रही। इसलिए मुझसे मुक्ति पाकर खुश ही हुई। घोर अंधेरी रात थी जब मैंने उससे विदा ली और अपने उन्हीं तीन ऋणदाताओं की सहायता से, टेढ़े-मेढे रास्ते से, गुब्बारे को भी उस स्थान पर पहुंचाया जहां और सब चीजें छिपाकर रखी गई थीं।

पहली एप्रिल थी। जैसाकि मैं पहले कह चुका हूं, बड़ी काली अंधेरी रात थी। आकाश में एक भी तारा नहीं दिखाई पड़ता था। बीच-बीच में हलकी फुहार पड़ जाती थी जिससे हम लोगों का कष्ट बढ़ जाता था किन्तु मुझे सबसे ज़्यादा चिन्ता तो गुब्बारे की थी क्योंकि वार्निश के कारण सुरक्षित होने पर भी नमी के कारण उसका बोझ बढ़ता जा रहा था, बारूद के भी खराब हो जाने का डर था। इसलिए मैंने तीनों ऋणदाताओं को तुरन्त काम में लगा दिया। वे काम करते जाते थे और पूछते भी जाते थे कि इन सब यन्त्रों से मैं क्या करना चाहता हूं। इतनी मेहनत करने पर वे असन्तोष भी प्रकट करते जा रहे थे और कहते जाते थे कि इस तरह तराबोर होकर खटने में उन्हें तो कोई फायदा दिखाई नहीं देता। मैं व्याकुल हो रहा था और सारी शक्ति से काम कर रहा था क्योंकि मेरे अनुमान में अब उन सब को शुबहा होने लगा था कि मैंने शैतान के साथ कुछ सांठ-गांठ कर रखी है। मुझे बड़ा भय लग रहा था

कि कहीं वे सब मुझे अकेला छोड़कर चले न जाएं। मैंने यह कहकर उन्हें शान्त किया कि यह काम पूरा होते ही मैं उनके पैसे चुका दूंगा। मेरी बातों से वे इतना समझने लगे थे कि जो कुछ मैं कर रहा हूं उससे मुझे गहरा माल हाथ लगने वाला है। मैं उनका कर्ज़ चुका दूं तथा कुछ और भी उन्हें दे दूं, इसके सिवा मेरा क्या होता है, मैं मरता हूं या जीता हूं, इसकी उन्हें कोई चिन्ता न थी।

लगभग साढ़े चार घण्टे के परिश्रम के बाद गुब्बारा काफी फूल गया। मैंने कार को उससे बांध दिया और सारे औज़ार कार में रख दिए। गैस या वायु को सघन करनेवाला यन्त्र, पर्याप्त जल तथा अपेक्षाकृत कम वज़न रखने पर भी ज़्यादा पोषण देनेवाली खाद्य-सामग्री रखना भी नहीं भूला। कार में मैंने एक जोड़ी कबूतर तथा एक बिल्ली भी रख ली। अब दिन होनेवाला था इसलिए मैंने सोच लिया कि मेरे विदा हो जाने का समय आ गया है। मैंने जान बूझकर जलता हुआ सिगार ज़मीन पर गिरा दिया, और उसे उठाने के बहाने बिना उन सबके देखे, चुपके से, धीमी-दियासलाई को उस छोर से छुआ दिया जो पीपे से ज़रा-ज़रा बाहर निकला हुआ था। बस, झट मैं कार में कूदकर बैठ गया और उस रस्सी को काट दिया जो उसे ज़मीन से बांधे हुए थी। मैं यह देखकर खुश हुआ कि तुरन्त मैं ऊपर उठने लगा हूं और मेरे साथ 175 पौण्ड का वह सब बैलस्ट

भी उठता जा रहा है। लगता था कि उससे ज़्यादा बोझ होता तो भी आसानी से उठ जाता।

परन्तु मैं मुश्किल से पचास गज़ ऊपर गया हूंगा कि भयंकर विस्फोट हुआ और तुफानी एवं भयावनी गति से धुवां, गंधक, पैर, हाथ, कंकर, पत्थर, जलती लकड़ियों एवं उत्तप्त धातुओं को लिए आग का ऐसा तूफान शोर करता मेरे पीछे दौड़ पड़ा कि मेरा कलेजा बैठ गया और असीम भय से कांपता हुआ मैं कार के पेंदे में गिर पड़ा। मैं अब समझ रहा था कि मैंने विस्फोट स्थान पर ज़रूरत से ज्यादा मात्रा में सामग्री का संकलन कर दिया है और अभी इससे भी भयानक धक्के का अनुभव होना बाकी है। क्षणभर भी न बीता होगा कि मुझे अनुभव होने लगा, मानो शरीर का रक्त कनपटियों की ओर दौड़ा चला जा रहा है। इसके बाद एक भयानक कंप रात के अंधकार में फट पड़ा। ऐसा लगता था मानो उसने आकाश को ही फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो। बाद में जब मुझे कुछ सोचने का मौका मिला तो विस्फोट के इस भयानक आघात का ठीक कारण समझ में आ गया। बात यह थी कि मेरी स्थिति विस्फोट स्थान के ठीक ऊपर थी और उसकी सर्वोच्च शक्ति के बिल्कुल सीध में थी। किन्तु उस समय तो मुझे किसी तरह अपनी जान बचाने की चिन्ता थी। पहले तो गुब्बारा पिचक गया, फिर बड़ी तेज़ी से फूल उठा और

भयानक वेग से (ऊपर जाने की जगह) एक वर्त्तुल में घूमने लगा और अन्त में, नशे में धुत शराबी की भांति, चक्कर खाते और लड़खड़ाते हुए, बड़े ज़ोर से मुझे कार की रिम पर फेंक दिया। उस भयावनी ऊंचाई पर, नीचे की ओर सिर किए मैं तीन फुट लम्बी एक पतली रस्सी में लटक गया, जो संयोग से टोकरे के पेंदे की छेद से बाहर निकलकर झूल रही थी और जिसमें गिरते हुए मेरा बायां पैर सौभाग्य-वश उलझ गया था। जिस स्थिति में था उसके भय एवं खतरे की कल्पना करना असम्भव,–बिल्कुल असम्भव है। मैं सांस लेने में ऐंठ-ऐंठ गया और मेरे शरीर की प्रत्येक शिरा एवं पेशी इस तरह कांपने लगी जैसे जूड़ी बुखार में कांपता है। ऐसा लग रहा था मानो आंखें अपने गड्ढे से बाहर निकली जा रही हैं। फिर मुझे ज़ोरों की उबकाई आई और मैं बेहोश हो गया।

यह बताना असम्भव है कि मैं उस स्थिति में कितनी देर तक रहा। फिर भी काफी देर तक रहा हूंगा। क्योंकि जब मुझे कुछ-कुछ होश आया तो सूर्योदय हो रहा था। गुब्बारा आकाश में बहुत ऊंचाई पर पहुंच गया था और विस्तृत सागर पर उड़ रहा था। दूर क्षितिज में जहां तक दृष्टि जाती, कहीं कोई ज़मीन का टुकड़ा नहीं नज़र आता था। किन्तु होश आने पर मुझे उस व्यथा का अनुभव नहीं हुआ जिसकी कल्पना ऐसी स्थिति में की जाएगी। जिस शान्ति के

साथ मैं अपनी स्थिति का सर्वेक्षण कर रहा था उसमें पागलपन का बहुत अंश था। मैंने अपने हाथ आंखों तक ले जाकर देखा तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि न जाने किस घटना के कारण शिराएं फूल गई थीं और उंगलियों के नाखून काले पड़ गए थे। उसके बाद मैंने बड़ी सावधानी के साथ अपने सिर की परीक्षा की, बार-बार उसे झटका देता रहा, सूक्ष्म दृष्टि से देखता रहा और अन्त में इस नतीजे पर पहुंचा कि मुझे जो सन्देह था वह ठीक नहीं है और मेरा सिर गुब्बारे से ज्यादा बड़ा नहीं हो गया है। फिर मैंने अपने बिरजिस (ब्रीचेज़) की जेब में हाथ डालकर देखा कि वहां से कुछ टिकियों एवं दंत-खोदनी की डिब्बियां गायब हैं। मैं उनके गायब होने के कारण के बारे में सोचता रहा, पर कुछ ठीक पता न लगने पर मुझे बड़ी परेशानी मालूम हुई। अब मुझे लगा कि मेरे बाएं घुटने की जोड़ों में दर्द हो रहा है, तब अपनी परिस्थिति की तरह हल्की चेतना मेरे मानस-पट पर उदय हुई। परन्तु यह कथन कुछ विचित्र सा लगेगा कि मैं न तो चकित था, न भयभीत था। बल्कि मैं जिस चतुराई के साथ अपने को इस गोरखधन्धे से मुक्त करने जा रहा था उसपर मुझे हर्षयुक्त संतोष था और एक क्षण के लिए भी मेरे मन में अपनी सुरक्षितता के प्रति शंका नहीं आई। चंद मिनटों तक मैं गहरे ध्यान में डूबा रहा। मुझे अच्छी तरह याद है कि कभी मैं

अपने ओंठ बन्द कर लेता, तर्जनी को नाक के पास ले जाता और इस प्रकार मुंह बनाता जैसे आरामकुर्सियों पर आराम के साथ लेटे हुए लोग किसी महत्व के या घनिष्ट विषय पर विचार किया करते हैं। जब मेरी बुद्धि कुछ स्थिर हुई तो मैंने बड़ी सावधानी और विचार के साथ अपने हाथ पीछे पीठ की ओर मोड़े और उस बड़े लोहे के बक्सुए को खोल दिया जो मेरे पाजामे की कमरपेटी में लगा हुआ था। इस बक्सुए में तीन दांते थे, जो जंग लग जाने के कारण, अपने अक्ष पर बड़ी कठिनाई के बाद घुमाए जा सके। किन्तु मैं बड़ी कठिनाई के बाद उन्हें बक्सुए के समकोण बना सका और यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई कि वे उस स्थिति में ही दृढ़ हैं। इस प्रकार मिली हुई चीज़ मैंने दातों में दबा ली, और अपने गुलूबंद की गांठ खोलने में लग गया। उसे खोलने में सफल होने तक मुझे कई बार सुस्ताना पड़ा। किन्तु अन्त में मुझे सफलता मिल ही गई। अब गुलूबंद के एक सिरे पर मैंने बक्सुए को लगाया और दूसरा सिरा और अधिक सुरक्षा के ख्याल से, अपनी कमर के चारों ओर कसकर बांध दिया। जब जोरों से पैशिक बल लगाकर मैने अपना शरीर ऊपर की ओर उछाला और पहले ही प्रयत्न में बक्सुए को कार तक फेंकने में सफल हो गया। जैसा कि मैंने सोचा था वह टोकरे के गोल रिम (मेडरे) में जाकर फंस गया।

इस समय मेरा शरीर कार की दिशा में पैंतालीस अंश का कोण बना रहा था किन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिए कि लम्बमापक से मैं केवल पैंतालीस अंश नीचे था। इसके विपरीत, मैं अब भी क्षितिज-स्तर के लगभग बराबर था, क्योंकि जिस नई परिस्थिति में मैं था उसने कार के पेंदे को मेरे पास से आगे की ओर धकेल दिया था, और यही सबसे बड़ा और सांघातिक संकट था। फिर भी याद रखने की बात है कि जब मैं कार से गिरा था तब यदि मेरा चेहरा गुब्बारे से बाहर की ओर न होकर कहीं उसकी ओर होता या जिस रस्सी के सहारे मैं लटका हुआ था वहीं कार के पेंदे के छेद में से नीचे आने की जगह ऊपरी कोर पर लटकती होती, तो इन दोनों कल्पित दशाओं में मैं उतना भी न कर पाता जो मैं कर पाया हूं और हंस फाल की दुस्साहसिक यात्रा का वर्णन सदा के लिए नष्ट हो गया होता। इसलिए मुझे तो भगवान के प्रति कृतज्ञता ही प्रकट करनी चाहिए थी, यद्यपि मैं अब भी इतना मूर्ख था कि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया और आगे कुछ भी प्रयत्न किए बिना, सनकभरी प्रसन्नता की अनोखी शान्त मनः स्थिति में लगभग चौथाई घण्टे तक वैसा ही पड़ा रहा। फिर यह मनोभाव तेज़ी के साथ मिटने लगा और उसकी जगह भय, निराशा और निपट विवशता एवं विनाश का जड़ बना देनेवाला भाव आ गया। अभी तक जो खून मेरे सिर एवं कण्ठ

की धमनियों में एवं शिराओं में एकत्र हो गया था और जिसने मुझे उन्माद एवं मूर्छना की स्थिति में रख छोड़ा था, वह अपने-अपने स्थान की ओर प्रत्यावर्तित होने लगा और इस प्रकार उसने खतरे का मेरा भय और बढ़ा दिया तथा उस खतरे का सामना करने के जिस साहस एवं आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता थी, वह भी मुझसे छीन लिया। किन्तु मेरे लिए भाग्य की बात यही थी कि यह स्थिति बहुत देर तक न रही। ठीक समय पर विवशताजन्य दुस्साहस की भावना मेरी रक्षा के लिए आ गई और चीखते एवं छटपटाते हुए मैंने अपने को ऊपर उछाला और अभिलषित रिम से जोंक की भांति चिपट गया। फिर धीरे-धीरे सारे शरीर को उसके ऊपर उठाया और कांपता हुआ, सिर के बल, कार के अन्दर जा गिरा।

काफी देर के बाद मुझे इतनी चेतना आई कि गुब्बारे की मामूली बातों की ओर ध्यान दूं। अब मैंने सावधानी से उसकी परीक्षा की और यह देखकर मुझे बड़ी सान्त्वना मिली कि उसे कोई आघात नहीं पहुंचा है। मेरे सब औज़ार सुरक्षित थे और बड़े सौभाग्य की बात थी कि खाद्य-सामग्री तथा बैलेस्ट सब अपनी जगह पर मौजूद थे। मैंने उन्हें इस तरह बांध दिया था कि उनके गिरने या नष्ट होने की कोई सम्भावना न थी। मैंने अपनी घड़ी की तरफ देखा; छः बजे थे। हम तेज़ी से ऊपर उठते जा रहे थे और बैरोमीटर देखने से

मालूम हुआ कि इस समय धरती से पौने चार मील की ऊंचाई पर हैं। हमारे ठीक नीचे महासागर पर एक छोटा काला आयताकार-सा पदार्थ दिखाई पड़ रहा था और देखने में बच्चों के खेल वाले उस पुतले से मिलता-जुलता था जिसे डोमियो कहा जाता था। मैंने दूरबीन लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि वह एक ब्रिटिश रणपोत है जिसपर तोपें लगी हुई है। इसके अलावा कहीं कुछ दिखाई नहीं पड़ता था—बस महासागर, आकाश और सूर्य, जो अब काफी उग गया था, मात्र दिखाई पड़ रहे थे।

अब समय आ गया है कि मैं आपको अपनी इस खतरनाक यात्रा का उद्देश्य भी बता दूं। आप लोगों को याद होगा कि राटर्डम में जो संकटग्रस्त अवस्था पैदा हो गई थी उसमें मैंने विवश होकर आत्महत्या का निश्चय कर लिया था। उसका कारण यह नहीं था कि मुझे जीवन के प्रति विरक्ति थी, वरं यह था कि जिन कष्टों और कठिनाइयों का मैं शिकार था, वे मेरी सहन-शक्ति के बाहर थीं। उस मनः स्थिति में, जब मेरे अन्दर एक ओर जीने की इच्छा थी और दूसरी ओर मैं जीवन से ऊब भी उठा था, पुस्तक-विक्रेता के यहां मिली पुस्तक ने मेरी कल्पना को पंख दे दिए। तब मैंने एक निश्चय कर लिया। मैंने निश्चय किया कि यह दुनिया छोड़ दूंगा, फिर भी जीवित रहूंगा। मैंने यह भी तय किया कि चाहे जो कुछ हो जाए मैं

चन्द्रलोक तक जाने का रास्ता निकालूंगा। जितना पागल मैं हूं उससे ज़्यादा पागल न समझ लिया जाऊं, इसलिए मैं उन बातों का वर्णन करूंगा जिनके कारण मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इस प्रकार का कार्य बहुत कठिन और खतरों से भरा होते हुए भी साहसी मनुष्य के लिए सम्भावनाओं के परे नहीं है।

मेरे लिए सबसे पहले यह जान लेना ज़रूरी था कि पृथ्वी से चन्द्रमा की वास्तविक दूरी क्या है। दोनों ग्रहों के केन्द्रों के बीच का औसत अन्तर पृथिवी की विषुवत् रेखा का 59.9643 गुना अर्थात् लगभग 237000 मील है। मैं औसत अन्तर की बात कह रहा हूं। किन्तु चूंकि चन्द्रमा का ग्रहपथ (आर्बिट) घटने-बढ़ने वाला दीर्घवृत (इलिप्स) है और यह अन्तर स्वयं दीर्घवृत्त के प्रमुख अर्धव्यास के 0.05484 गुने से कम नहीं होता इसलिए जब पृथिवी का केन्द्र उसके फोक्स में हो, सीध में हो और मैं उस समय चन्द्र के भूसमीपक (पेरीगी) बिन्दु पर उतरने का कोई उपाय कर सकूं तो उपर्युक्त दूरी कम हो जाएगी। अभी इसकी सम्भावना के विषय में कुछ न कहकर मैं यह बताना चाहता हूं कि इस निकटतम बिन्दु पर दूरी में से पृथिवी के अर्धव्यास के 4000 और चन्द्रमा के अर्धव्यास के 1080 मील अर्थात् कुल 5080 मील कम हो जाएंगे। तब 231920 मील ही पार करने को बच जाएंगे। मेरे विचार से यह कोई असाधारण दूरी

नहीं थी। ज़मीन को 30 मील प्रति घण्टे की चाल से तो बार-बार पार किया गया है। इसलिए हम तो इससे कहीं ज़्यादा तेज गति की कल्पना कर सकते हैं। किन्तु इस गति के हिसाब से भी मुझे चन्द्र-तल पर पहुंचने में 322 दिनों से अधिक का समय नहीं लगेगा। ऐसे बहुत से लक्षण थे जिनसे मुझे विश्वास हो गया था कि हमारी औसत चाल तीस मील प्रति घण्टे से कहीं ज़्यादा होगी और उनकी गहरी छाप मेरे तन पर अंकित हो गई। आगे मैं उनका विस्तारपूर्वक वर्णन करूंगा।

विचार करने की दूसरी बात इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण थी। बैरोमीटर के संकेतों से हमें यह जानकारी प्राप्त हुई है कि पृथ्वी-तल से ऊपर जाने में 1000 फुट की ऊंचाई पर हम वायुमण्डलीय वायु-पुंज का तीसवां भाग नीचे छोड़ देते हैं और 18000 फुट की ऊंचाई पर पृथ्वीमंडल को आवृत करनेवाली वायुसमूह का कम-से-कम आधा भाग नीचे छूट जाता है। हिसाब लगाकर यह भी देखा गया है कि पृथिवी के व्यास के सौंवे भाग–अर्थात 80 मील–की ऊंचाई के ऊपर हवा की सूक्ष्मता इतनी बढ़ जाती है कि कोई प्राणी जी नहीं सकता और वायुपरीक्षण के जो भी सूक्ष्म से सूक्ष्म यंत्र हमें उपलब्ध हैं उनसे ठीक-ठीक इस बात का पता लगा लेना कठिन ही जान पड़ता है कि वहां वायु का अस्तित्व है या

नहीं। किन्तु मुझे यह भी मालूम था कि हिसाब-किताब वायु-तत्वों के हमारे प्रायोगिक ज्ञान तथा पृथ्वी के आस-पास प्राप्त वायु का प्रसरण एवं संकुचन करनेवाली यांत्रिक विधियों पर निर्भर है। इसके साथ ही हम यह भी मान बैठे हैं कि पृथिवी-तल से किसी निश्चित अप्राप्य अन्तर पर जाकर प्राणि-जीवन अपने में परिवर्तन करने की शक्ति ही खो देता है। ये सब तर्क और तथ्य एक-दूसरे के अनुरूप ही हैं। तब तक आदमी अधिक से अधिक 25000 फुट की ऊंचाई तक पहुंच सका था। वातावरण के अस्सी मील के विस्तार की दृष्टि से भी यह दूरी बहुत कम है। इसलिए मैं इस विचार से विरत् नहीं हो सका कि इस विषय में सन्देह की काफी गुंजाइश है और कल्पना के लिए बहुत सम्भावनाएं हैं।

किन्तु ऊपर की उड़ान में ज्यों-ज्यों हम ऊंचे उठते हैं, ऐसा नहीं होता कि वायु का घनत्व ऊंचाई के अनुपात में ही कम हो (ऊपर के उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है)। एक निश्चित ऊंचाई से और ऊपर की ऊंचाई तक जाने में कमी का यह अनुपात घटता जाता है। इसलिए चाहे हम जितने ऊपर जाएं, ऐसी कोई सीमा-रेखा नहीं हो सकती जिसके पार वायुमण्डल का अस्तित्व ही न हो। मैंने मन में तर्क किया कि उसका अस्तित्व (ऊंचे से ऊंचे स्थान पर भी) होना ही चाहिए–भले वह अत्यन्त सूक्ष्म हो।

दूसरी ओर मैं यह भी जानता था कि ऐसे तर्कों का अभाव नहीं है जिनके द्वारा वायुमण्डल के अस्तित्व की एक निश्चित और यथार्थ सीमा-रेखा प्रमाणित की गई है और बताया गया है कि उस सीमा-रेखा के आगे किसी प्रकार की वायु का अस्तित्व नहीं है। किन्तु जो लोग इस प्रकार का विचार रखते हैं वे परिस्थिति की एकाध बात का विस्मरण कर देते हैं। मुझे लगता था कि यद्यपि उनके विचारों का निश्चित रूप से खण्डन करना तो सम्भव नहीं है परन्तु इस विषय में गम्भीर अनुसन्धान की आवश्यकता अवश्य है। अपने सूर्यसमीपक वा अनुसूर्य बिन्दु (पेरीहोलियोन) पर एक धूमकेतु के क्रमिक आगमन के बीच के अन्तर की तुलना करने और तुलना में ग्रहों की आकर्षणजन्य बाधाओं के लिए छूट देने पर मालूम पड़ता है कि ये अवधियां धीरे-धीरे घटती जा रही हैं। इसका अर्थ यह है कि धूमकेतु के दीर्घवृत्त का मुख्य अक्ष (ऐक्सिस) धीमी गति से परन्तु निरन्तर छोटा होता जा रहा है। अपने परिक्रमा-पथ के क्षेत्रों में व्याप्त अत्यन्त दुर्लभ वायविक माध्यम से धूमकेतु को जो प्रतिरोध प्राप्त होता है उसे देखते हुए तो ऐसा ही होना भी चाहिए। इससे स्पष्ट है कि उसकी गति को घटाने में ऐसा माध्यम उसके अपकेन्द्री बल (सेंट्रीफ्यूगल फोर्स) को दुर्बल कर देता है और अभिकेन्द्री बल (सेंट्रीपेटल फोर्स) में वृद्धि कर देता है। इसी को

दूसरे शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि सूर्य का आकर्षण निरन्तर अधिकाधिक शक्तिमान होता जाएगा और प्रत्येक चक्कर में धूमकेतु निकट खिंचता जाएगा। जो अन्तर होते हैं उन्हें और किसी तरह से नहीं समझाया जा सकता। किन्तु इसके साथ एक बात और है। उसी धूमकेतु की नीहारमयता का वास्तविक व्यास सूर्योन्मुख होने पर तीव्रगति से संकुचित होता हुआ और सूर्योच्च बिन्दु (एफेलियन) की ओर जाने पर उसी तेज़ी के साथ बढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है। तब क्या मेशिये वाल्ज़ सहित मेरा यह कल्पना कर लेना उचित नहीं था कि आयतन (वोल्यूम) के इस बाह्य घनीकरण का उद्‌गम उसी वायवीय माध्यम का संपीड़न या दबाव (काम्प्रेशन) है जिसका उल्लेख मैं पहले कर चुका हूं, और जो सूर्य से अपनी निकटता के अनुपात में ही सघन होता है? अब मसूराकार उस प्रपंच पर भी ध्यान देने की आवश्यकता थी जिसे राशिचक्रीय प्रकाश (जोडिकल लाइट) कहा जाता है। यह प्रकाश, जो उष्णकटिबन्धीय देशों में बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ता है और जिसे किसी उल्का का प्रकाश होने का भ्रम नहीं हो सकता, क्षितिज से ऊपर की ओर तिरछे फैला रहता है और सामान्यतः सूर्य की विषुवत् रेखा का अनुसरण करता है। इन बातों का विचार करने पर मुझे ऐसा लगा कि किसी न किसी प्रकार का सूक्ष्म वायुमण्डल सूर्य से बाहर की ओर कम से कम शुक्र के

परिक्रमा-पथ तक, तो फैला ही है। मुझे तो विश्वास था कि वह उसके परे भी सीमातीत दूरी तक होगा। मैं यह कल्पना नहीं कर पाता था कि यह (वायु-मण्डल का) माध्यम धूमकेतु के दीर्घवृत्त या सूर्य के आस-पास तक सीमित है। इसके विपरीत मेरे लिए यह कल्पना कर लेना सरल था कि वह समस्त सौर मण्डल में व्याप्त है।

इस दृष्टिकोण को ग्रहण कर लेने के बाद, मुझे कोई और हिचकिचाहट नहीं रह गई। मैंने मान लिया कि मुझे अपनी यात्रा के तत्वतः वही वायुमण्डल प्राप्त होगा जो पृथ्वी-तल पर प्राप्त है और मोशिये ग्रिम के विचित्र यन्त्र की सहायता से मैं श्वास लेने के उपयुक्त सघनता किसी भी प्रकार की वायु को प्रदान कर सकूंगा। इससे चन्द्रलोक की यात्रा की एक प्रमुख कठिनाई दूर हो जाएगी। उस यंत्र को अपने विशेष तात्पर्य के लिए उपयोगी बनाने में मैंने कुछ धन लगाया था और घोर परिश्रम किया था और यदि किसी तरह मैं विवेक-सम्मत अवधि में अपनी यात्रा पूरी कर सकूं तो उसका सफल उपयोग कर लेने का मुझे विश्वास था। इससे उसी यात्रा की गति के सवाल पर मैं फिर पहुंच गया।

यह सत्य है कि पृथ्वी से अपनी उड़ान की प्रथम अवस्था में गुब्बारे काफी वेग से ऊपर उठते हैं। यह ऊपर उठने की शक्ति गुब्बारे में भरी गैस के विशेष हल्केपन के कारण होती है। अन्दर

की गैस बाहर वातावरण की हवा के मुकाबले बहुत हल्की होती है। इसलिए जब वह ऊपर जाता है और ऊपर के वायुमण्डल की सघनता घटती जाती है तो उसके मूलवेग में वृद्धि की कल्पना करना उचित नहीं जान पड़ता। दूसरी ओर उड़ान के लिखित विवरणों में मुझे कोई ऐसी बात नहीं मिली जिससे ऊपर जाने की गति के कम हो जाने का प्रमाण मिलता हो, यद्यपि होना ऐसा चाहिए, क्योंकि यदि और कोई बात न भी हो तो सामान्य गुब्बारों की बनावट के कारण अन्दर की कुछ न कुछ गैस तो निकलती ही जाती है। इसलिए गैस की इस निकासी के कारण कोई गति बढ़ानेवाली शक्ति हो भी तो उसका सन्तुलन हो जाता है। अब मैं यह सोचने लगा कि मान लो जिस वायवीय माध्यम की मैंने कल्पना की है वह मुझे यात्रा पथ में मिलता गया और वह तत्वतः उस वायु के समान ही रहा जिसे हम वायुमण्डलीय वायु (ऐटमास्फैरिक एयर) कहते हैं, तो फिर वह चाहे जैसी विरलता या सूक्ष्मता की स्थिति में हो उससे मेरी ऊपर जाने की शक्ति में कोई विशेष रुकावट नहीं आएगी क्योंकि गुब्बारे की गैस उस अवस्था में भी केवल ओषजन (आक्सिजन) एवं नेत्रजन (नाइट्रोजन) के किसी मिश्रण की अपेक्षा हल्की ही रहेगी। फिर ज्यों-ज्यों हम ऊपर जाएंगे, (पृथ्वी की) गुरुत्वाकर्षण शक्ति कम होती जाएगी, इससे गुब्बारे का वेग तीव्र गति से बढ़ता ही जाएगा,

और मैं अन्त में उन सुदूर क्षेत्रों में पहुंच जाऊंगा जहां पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का स्थान चंद्रमा की आकर्षण शक्ति ले लेगी। इस सब बातों पर विचार करके मैंने चालीस दिन से अधिक खाद्य सामग्री रखना ठीक नहीं समझा।

किन्तु अभी एक और कठिनाई ऐसी रह गई थी जिसके कारण मेरे मन में कुछ परेशानी थी। यह देखा गया था कि बहुत ज़्यादा ऊंचाई पर गुब्बारे की उड़ान में श्वास-क्रिया में तो तकलीफ होती ही है। किन्तु शरीर एवं सिर में भी बड़ी बेकली का अनुभव होता है। प्रायः नाक से खून भी गिरने लगता है और दूसरे भी चिन्ताजनक लक्षण दिखाई पड़ते हैं। ज्यों-ज्यों हम अधिकाधिक ऊंचे होते जाते हैं, यह कठिनाई बढ़ती जाती है। यह एक चौंकानेवाली बात थी। तब क्या यह सम्भव नहीं है कि ये लक्षण अनिश्चित सीमा तक बढ़ते जाएं, यहां तक की मृत्यु में उनका अन्त हो? विचार के बाद, अन्त में मैं इस निश्चय पर पहुंचा कि ऐसा नहीं हो सकता। जिन लक्षणों का ऊपर वर्णन किया गया है वे तो इसलिए पैदा होते हैं कि शरीर-तल जिस वायुमण्डलीय दबाव के हम अभ्यस्त होते हैं वह क्रमशः दूर होता जाता है जिसके फलस्वरूप बाह्य रक्तवाहिनियां फूल उठती हैं। वे इसलिए नहीं पैदा होते कि हमारी जीवन-प्रणाली का कोई निश्चित विघटन हो जाता है। जैसे श्वासक्रिया में जो कठिनाई

होती है उसका कारण यह है कि वायवीय घनत्व हृदय-प्रकोष्ठ के रक्त को नवीन बनाने में रासायनिक रूप से अपर्याप्त होता है। जब तक नवीन रक्त लेने वाली यह स्थिति पैदा न हो तब तक मैं नहीं समझता कि रिक्त या वातशून्य स्थान में भी जीवन क्यों सम्भव नहीं है, क्योंकि सीने का प्रसरण और संकुचन, जिसे सामान्यतः सांस लेना कहा जाता है, एक शुद्ध पैशिक क्रिया है, और यह श्वसन-क्रिया का कारण है, परिणाम नहीं। एक शब्द में यों कह सकते हैं कि मैंने सोचा कि ज्यों-ज्यों शरीर वायवीय दबाव का अभ्यस्त होता जाएगा त्यों-त्यों वेदना की ये अनुभूतियां कम होती जाएंगी। अपने शरीर की लौहोपम दृढ़ता के कारण भी मुझे विश्वास था कि मैं उन कठिनाइयों को सहन कर लूंगा।

इस प्रकार मैंने श्रीमानों के सामने सब नहीं तो कुछ ऐसी बातें रख दीं हैं जिनके कारण मैंने चन्द्रलोक की यात्रा करने की योजना बनाई थी। अब मैं यह बताऊंगा कि मैंने अपने देखने में सनक-से लगनेवाले विचारों के अनुसार जो प्रयत्न किया और जो मानव जाति की गाथाओं में अतुलनीय हैं उसका परिणाम क्या हुआ।

जब मैं पौने चार मील की उस ऊंचाई पर पहुंच गया, जिसका जिक्र पहले कर चुका हूं, तो मैंने कार में रखे हुए कुछ पंख बाहर फेंक दिए और उससे मुझे मालूम हुआ कि मैं अब भी काफी तेज़ी

से ऊपर जा रहा हूं, इसलिए बैलेस्ट (अतिरिक्त भार) को फेंकने या कम करने की कोई आवश्यकता न थी। इस जानकारी से मुझे खुशी हुई क्योंकि मैं अपने साथ अधिक से अधिक बोझ ले जाना चाहता था जिसका कारण आगे बताया जाएगा। मुझे अभी तक किसी प्रकार की शारीरिक असुविधा का अनुभव नहीं हो रहा था; मैं बड़ी स्वतन्त्रता के साथ सांस ले रहा था और मेरे सिर में भी किसी प्रकार की पीड़ा नहीं थी। बिल्ली बड़े शान्त-भाव से मेरे कोट पर, जिसे मैंने निकालकर रख दिया था, लेटी हुई थी और स्थिरता के साथ कबूतरों को देख रही थी। इन कबूतरों के पैर मैंने इसलिए बांध रखे थे कि वे उड़ न जाएं। वे चावल के दाने, जिन्हें मैंने कार के पेंदे पर फैला दिया था, चुंगन में व्यस्त थे।

छः बजकर बीस मिनट हुए थे जब बैरोमीटर से मालूम हुआ कि मैं 26,400 फुट अर्थात् ठीक-ठीक पांच मील की ऊंचाई पर हूं। मेरे सामने असीम सम्भावनाओं के द्वार खुल गए थे। मुझे सम्पूर्ण पृथ्वी-तल का सौलहसौंवां भाग दिखाई पड़ रहा था। सागर दर्पण की भांति स्थिर लगता था, यद्यपि दूरबीन लगा कर देखने पर मालूम हुआ कि वह अत्यन्त विक्षुब्ध अवस्था में हैं। पूर्व की ओर चले जाने के कारण अब वह जहाज़ भी दृष्टि से ओझल हो गया था। अब बीच-बीच में मेरे सिर, विशेषतः कनपटियों में, उग्र पीड़ा का

अनुभव होने लगा, किन्तु अब भी काफी स्वतंत्रतापूर्वक मैं सांस ले रहा था, बिल्ली और कबूतरों को कोई असुविधा होती नहीं जान पड़ती थी।

जब सात बजने में बीस मिनट बाकी थे, गुब्बारे ने सघन घनमाला के बीच प्रवेश किया। इससे मुझे बड़े संकट का सामना करना पड़ा क्योंकि मेरा सघनकारी यंत्र क्षतिग्रस्त हो गया और मैं बुरी तरह भीग गया। यह एक अनोखी टक्कर थी, क्योंकि मुझे यह सम्भावना नहीं थी कि इतनी अधिक ऊंचाई पर इस प्रकार के बादल स्थिर रह सकते हैं। मैंने अधिभार (बैलेस्ट) के पांच पौण्ड वाले दो थैले फेंक दिए। अब भी मेरे पास एक सौ पैंसठ पौण्ड भार था। ऐसा करते ही मेरी कठिनाई दूर हो गई, क्योंकि मैंने तुरन्त देखा कि मेरी उठान की गति में काफी वृद्धि हो गई है। बादलों को छोड़ने के कुछ ही देर बाद एक छोर से दूसरे छोर तक बिजली तड़क उठी और उस विस्तृत नभ में जलते और दहकते हुए अंगारपुंज की भांति तीव्र-प्रकाशधारा फैल गई। याद रखना चाहिए कि यह घटना दिन के अच्छे-खासे प्रकाश के बीच हुई। यदि ऐसा ही दृश्य रात के अन्धकार में दिखाई पड़ा होता तो उसके गाम्भीर्य की कल्पना भी न की जा सकती। शायद उनमें नरक को अपनी योग्य प्रति-मूर्ति के दर्शन हो जाते। दिन की इस घटना के समय, भी, जब मैं नीचे

की मुंहफाड़ी रिक्तता में झांक रहा था और उस भयानक अगम्य अग्नि की भयावनी कन्दराओं एवं खाइयों में मेरी कल्पना छुपती फिरती थी, मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं बाल-बाल बच गया था। यदि गुब्बारा और थोड़ी देर तक बादलों में रहा होता, यानी भीग जाने पर यदि मुझे कुछ भार फेंक देने की बात न सूझी होती या मैंने उसमें विलम्ब किया होता तो हमारा विनाश अनिवार्य था। यद्यपि ऐसे संकटों पर लोग बहुत ही कम विचार करते हैं किन्तु यही शायद सबसे बड़े संकट हैं जिनका सामना गुब्बारों को करना पड़ता है। जो भी हो, अब तक मैं इतनी ज़्यादा ऊंचाई पर पहुंच गया था कि इस विषय में चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं थी।

अब मैं बड़ी तेज़ी के साथ ऊपर उठ रहा था, और सात बजे तक बैरोमीटर ने बताया कि हम साढ़े नौ मील की ऊंचाई पर पहुंच गए हैं। अब सांस लेने में मुझे बड़ी तकलीफ होने लगी। सिर में भी बहुत दर्द था। गालों पर मुझे कुछ आर्द्रता का अनुभव हुआ; बाद में पता चला कि वह खून है और कर्णपटह से तेज़ी के साथ स्त्रवित हो रहा है। आंखों में भी बड़ी बैचेनी का अनुभव हो रहा था। उनपर अपने हाथ फेरकर मैंने जाना किवे नेत्र-गह्वर से काफी बाहर निकल आई हैं। कार के सब पदार्थ, यहां तक कि गुब्बारा भी, मेरी दृष्टि में विकृत नज़र आ रहे थे। मैंने इन लक्षणों की कल्पना

भी न की थी, इसलिए मुझे कुछ घबराहट होने लगी। इस समय, मैंने मूर्खता-वश और बिना कुछ विचार किए बेलेस्ट या अधिभार से पांच-पांच पौंण्डवाले तीन थैले कार से बाहर फेंक दिए। इससे उड़ान की गति इतनी बढ़ गई कि गुब्बारा शीघ्र ही वायुमण्डल के बड़े ही बिरल स्तर पर जा पहुंचा। परिणाम मेरे अभियान के लिए लगभग सांघातिक हुआ। एकाएक मुझमें ऐंठन होने लगी जो पांच मिनट से ज़्यादा समय तक रही और जब वह कुछ-कुछ कम हुई तब भी मैं लम्बे अंतरालों के बाद सांस ले पाता था, और वैसा करते हुए भी मेरा दम फूलता था। मेरे नाक और कानों से बराबर काफी खून निकल रहा था। आंखों में भी ज़रा-ज़रा सा खून झिरता था। कबूतर भी बड़ी तकलीफ में मालूम पड़ते थे और निकल भागने के लिए छटपटा रहे थे। बिल्ली बड़े करुण स्वर में म्याऊं-म्याऊं करती थी; उसकी जीभ मुंह के बाहर निकली पड़ती थी और वह कार में इधर से उधर लड़खड़ाती फिर रही थी जैसे उसपर किसी विष का प्रभाव हो। अब इतने विलम्ब से मैंने समझा कि अधिभार को फेंकने में मैंने बड़े उतावलेपन का अपराध कर डाला है। इससे मेरी घबराहट और बढ़ गई। अब मैंने समझ लिया कि मौत के सिवा और कुछ होना-जाना नहीं है और मेरी मृत्यु बस चन्द मिनटों में हो जाएगी। जो शारीरिक पीड़ा मुझे हो रही थी उसने मुझे अपने

जीवन की रक्षा के लिए कोई प्रयत्न करने के अयोग्य बना दिया था। अब मुझमें चिन्तन शक्ति लगभग समाप्त हो चुकी थी और मेरी शिरोवेदना की तड़क बढ़ती ही जाती थी। मुझे लग रहा था कि थोड़ी ही देर में मेरे होश-हवाश जवाब दे जाएंगे। यहां तक कि नीचे उतरने के विचार से मैंने एक कपाट-रज्जु (किवाड़ में लगी रस्सी) को पकड़ लिया। किन्तु इसी समय मैंने अपने तीन ऋणदाताओं के साथ जो करतूत की थी उसकी याद आ गई। राटर्डम लौटने पर मेरी जो गत होगी, उसका ख़्याल कर मैं उस समय रुक गया। मैं कार के अधोभाग में लेटा हुआ अपनी शक्तियों को एकत्र करने की चेष्टा करने लगा। मैंने निश्चय किया कि अपना कुछ खून निकाल देना चाहिए। नश्तर के लिए कोई कुन्तिका पास में न होने के कारण मैंने अपने कलमतराश के फल-धार से अपनी दाहिनी भुजा की एक शिरा काट दी। खून निकलना शुरू होते ही मुझे राहत मालूम होने लगी, और आधा कटोरा खून निकलने तक तो अधिकांश निकृष्ट लक्षण बिल्कुल दूर हो गए। फिर भी मुझे तुरन्त अपने पैरों पर उठ खड़ा होना ठीक नहीं लगा। अपनी भुजा पर पट्टी बांधकर में लगभग पंद्रह मिनट तक चुपचाप पड़ा रहा। इसके बाद मैं उठा तो देखा कि मैंने अपनी उड़ान के पिछले सवा घण्टे में जो वेदना व्यथा भोगी थी, उससे मैं मुक्त हो गया हूं। किन्तु सांस लेने की कठिनाई बहुत

थोड़ी मात्रा में ही कम हुई। इसलिए में समझ गया कि शीघ्र ही मुझे अपने संघनक (कण्डेंसर) के उपयोग की आवश्यकता पड़ेगी। इस बीच जो बिल्ली पर मेरी नज़र गई तो मैंने देखा कि वह फिर सुरक्षित रूप से मेरे कोट पर लेटी है। मैंने असीम आश्चर्य के साथ यह भी देखा कि मेरी बीमारी के अवसर का लाभ उठाकर उसने तीन छोटे-छोटे बच्चों को जन्म दिया है। यात्रियों की यह वृद्धि मेरे लिए बिल्कुल अप्रत्याशित थी, किन्तु इससे मुझे खुशी ही हुई। इससे एक ऐसी कल्पना के सत्य की जांच का अवसर मुझे मिलेगा जिसके कारण इस उड़ान की चेष्टा के लिए मैं सबसे ज़्यादा प्रभावित हुआ था। मैंने कल्पना की थी कि पृथ्वी-तल पर जो वायवीय दबाव पाया जाता है उसे सहने में अभ्यस्त हो जाने के कारण ही तल के ऊपर ज़्यादा दूरी पर प्राणी को वेदना का अनुभव करना पड़ता है। यदि बिल्ली के बच्चों को भी अपनी मां के जितनी ही तकलीफ़ होती है तब तो मेरा सिद्धान्त गलत हो जाएगा किन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो मैं उसे अपने विचार का प्रबल समर्थन मानूंगा।

आठ बजे तक मैं पृथ्वी-तल से सचमुच ही सत्रह मील की ऊंचाई पर पहुंच चुका था। इससे स्पष्ट हो गया कि मेरी उड़ान की गति न केवल बढ़ती पर है बल्कि यह भी कि यदि मैं अधिभार का कुछ अंश फेंक न देता तो भी कुछ-न-कुछ अंश में वृद्धि बनी रहती।

थोड़े-थोड़े अन्तर पर मेरे सिर और कान का दर्द, शिद्दत के साथ, लौट आता था, और नाक से भी बीच-बीच में खून बहने लगता था, किन्तु सब मिलाकर मुझे उससे कहीं कम कष्ट था, जितने की आशा की जाती थी। किन्तु क्षण-क्षण सांस लेना अधिकाधिक कठिन होता जा रहा था और हर बार अन्दर सांस खींचने पर छाती में कष्टप्रद ऐंठन होने लगती थी। अब मैंने संघनक यन्त्र का बण्डल खोल डाला और तुरन्त उसे उपयोग करने के लिए तैयार कर लिया। उस समय पृथ्वी का दृश्य बड़ा सुन्दर लग रहा था। पश्चिम-उत्तर और दक्षिण की ओर जहां तक मेरी दृष्टि जाती थी बाहर देखने में प्रशान्त सागर का सीमातीत विस्तार फैला हुआ था, जो क्षण-क्षण अधिकाधिक नीलवर्ण तथा किंचित, उन्नतोदर होता जा रहा था। पूर्व में बहुत दूर, यद्यपि पूर्णतः दृश्य, ग्रेट ब्रिटेन के द्वीपसमूह फैले हुए थे। उस ओर फ्रांस एवं स्पेन का समस्त तट-भाग तथा अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी भाग का एक अंश भी दिखाई पड़ रहा था। व्यक्तिगत भवनों का कोई चिन्ह तक नहीं था, और मानव की अत्यन्त गौरवशालिनी नगरियां पृथ्वी-तल से बिल्कुल अदृश्य हो गई थीं। जिब्राल्टर की पहाड़ी से, जो एक धुंधले बिन्दु के समान मालूम पड़ती थी, कृष्ण भूमध्यसागर पूर्व की ओर जहां तक मेरी दृष्टि जा सकती थी वहां तक फैला हुआ था और अन्त में उसका समस्त जल जाकर मानो

क्षितिज के गर्भ में गिर पड़ता था। सागर के बीच में जगह-जगह चमकते हुए द्वीप ऐसे लगते थे जैसे आकाश में तारे छिटके हुए हों। मैंने तो उकडूं होकर प्रबल महाप्रपात की प्रतिध्वनि सुनने को अपने कान भी लगा दिए। ऊपर आकाश बिल्कुल काला हो रहा था और उसमें तारे चमकते हुए दिखाई पड़ते थे।

इस समय तक कबूतरों को ज़्यादा तकलीफ होने लगी थी। मैंने निश्चय कर लिया कि उन्हें मुक्त कर देना चाहिए। पहले मैंने एक को खोला, वह छींटदार धूसर रंग का बड़ा कपोत था। उसे टोकरे के रिम पर रख दिया। वह बहुत परेशान दीख पड़ा, अपने चारों ओर उत्कण्ठित भाव से देखता रहा, अपने डैने भी फड़फड़ाए, किन्तु कार से जाने को तैयार नहीं हुआ। अन्त में मैंने उसे हाथ से पकड़कर गुब्बारे से 5-6 गज़ की दूरी पर फेंक दिया। मेरी आशा के अनुरूप उसने नीचे जाने का कोई प्रयत्न नहीं किया, बल्कि लौट आने के लिए प्रबल चेष्टा करने लगा। वह अत्यन्त करुण-ध्वनि से चीख भी रहा था। फिर उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया और वह मरा हुआ कार में गिर पड़ा। दूसरा इतना अभागा नहीं निकला। प्रत्यावर्त्तन के लिए वह अपने साथी का अनुकरण न करने पाए, इसलिए मैंने उसे अपनी सारी शक्ति के साथ नीचे की ओर फेंका, और मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि

वह अप्रने पंखों का स्वाभाविक रूप से उपयोग करता हुआ बड़ी तीव्र गति से नीचे की ओर जा रहा है। थोड़ी ही देर मे वह आंखों से ओझल हो गया और मुझे कोई सन्देह नहीं है कि वह सुरक्षित घर पहुंच गया होगा। बिल्ली अब तक अपनी बीमारी से बहुत-कुछ मुक्त हो चुकी थी। उसने उस मृत कबूतर पर डटकर हाथ साफ किया और बड़े सन्तोषपूर्वक सो गई। उसके बच्चे बड़े चंचल थे और अभी तक उनमें किसी प्रकार की विकलता नहीं दिखाई पड़ती थी।

सवा आठ बजे तक मेरी यह हालत हो गई कि मैं असह्य वेदना का अनुभव किए बिना सांस भी नहीं ले पाता था। तुरन्त ही मैंने संघनक यंत्र (कनडेंसर) को कार में फिट किया। आप लोगों को याद होगा कि इस यंत्र को लगाने में मेरा पहला उद्देश्य तो यह था कि उस सूक्ष्म या विरल वायुमण्डल से मैं बिल्कुल सुरक्षित और अलग रहूं जिसमें मैं इस समय यात्रा कर रहा था और मेरे तथा कार के चतुर्दिक एक ऐसा आवरण पैदा हो जाए जिसमें बाहर की हवा अन्दर न आ सके और जब मैं चाहूं भी अपने श्वास लेने योग्य बाहरी वायु को सघन करके अन्दर ले सकूं। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने एक बहुत ही सुदृढ़, एयरटाइट–वायुरुद्ध–परन्तु प्रसरणशील बैग तैयार किया था। यह बैग वृहदाकार था और इसी

में सम्पूर्ण कार रखी हुई थी। मतलब यह कि हमारे चारों ओर वह बैग फैला हुआ था।

इस थैले में मोटे पर साफ शीशे के तीन फलक लगे हुए थे, जिनके द्वारा प्रत्येक क्षैतिज दिशा में मैं बिना कठिनाई के देख सकता था। अधोभाग में भी इस तरह की एक चौथी खिड़की थी, जो कार के पेंदे के छिद्र के सामने बनी हुई थी। इससे मैं लम्बवत् नीचे भी दृष्टि डाल सकता था। हां, ऊपर की ओर मैं कोई ऐसी व्यवस्था नहीं कर पाया था क्योंकि वहां उस खोल की तहें बांधी गई थीं। इसलिए मैं शीर्षबिन्दु की ओर कुछ देख नहीं सकता था परन्तु यदि मैंने वहां कोई खिड़की बनाई भी होती तो उस गुब्बारे के कारण, जिससे हम लटके हुए थे, ऊपर की ओर कुछ यों भी न दिखाई पड़ता।

इनमें से एक पार्श्व–वातायन के लगभग एक फुट नीचे आठ इंच व्यास का एक गोल छिद्र था; इसमें पीतल की एक रिम लगाकर अन्दर की ओर पेंच से कस दी गई थी। इस रिम वायुसंघनक (कण्डेंसर) का लम्बा ट्यूब पेंच पर लगा हुआ था; यंत्र का मुख्य भाग थैले या खोल के अन्दर ही था। इस ट्यूब के सहारे बहार की विरल वायु संघनक यंत्र के रिक्त अंश (वैकुअम) में आती थी और वहां सघन होकर, हमारे श्वास लेने के योग्य बनकर अन्दर प्रवेश

करती थी। और हमारे कक्ष में वर्तमान वायु में मिल जाती थी। किन्तु ऐसे बन्द स्थान में हवा का फेंफड़ों से बार-बार सम्पर्क होने के कारण थोड़ी देर में दूषित हो जाना स्वाभाविक था। इसलिए कार के अधोभाग से उसे बाहर निकाल देने की व्यवस्था भी थी। अन्दर की हवा एकदम न निकल जाए, और निर्वातता की स्थिति न पैदा हो जाए, इस भय से दूषित हवा को बाहर निकालने की क्रिया बहुत धीरे-धीरे करनी पड़ती थी। हम वाल्ब को कुछ ही क्षणों के लिए खोलते थे, और फिर उसे बन्द कर देते थे। उधर संघनक से उसी परिमाण वायु को अन्दर लेते रहते थे।

जब मैं यह सब व्यवस्था कर चुका और कक्ष को उपर्युक्त रीति से वायुपूर्ण कर चुका तो नौ बजने में केवल दस मिनट रह गए थे। उपर्युक्त व्यवस्था करते समय सांस लेने में मुझे महान कष्ट का सामना करना पड़ा और मुझे बड़ा पश्चाताप हो रहा था कि ऐसे महत्वपूर्ण विषय को अंतिम क्षण तक मैं टालता क्यों रहा। किन्तु अन्त में सब व्यवस्था हो गई और शीघ्र ही मैं अपने आविष्कार का लाभ उठाने लगा। एक बार फिर मैंने स्वतन्त्रता और सरलतापूर्वक सांस ली, और क्यों न लेता? मुझे यह देखकर भी हर्षयुक्त आश्चर्य हुआ कि अभी तक जिन भयंकर वेदनाओं से मैं पीड़ित था, वे बहुत-कुछ दूर हो गई हैं। अब सिर्फ सिर में हल्का-हल्का दर्द भर

रह गया था; इसी प्रकार कलाइयों, टखनों एवं गले में ज़रा-ज़रा सी सूजन भर रह गई। पिछले दो घण्टों में जो कष्ट मैं सहन करता रहा था वह केवल त्रुटिपूर्ण श्वासक्रिया का प्रभाव था।

जब नौ बजने में बीस मिनट बाकी थे—"मतलब संघनक लगाने और कक्ष का मुंह बन्द करने के कुछ देर पहले बैरोमीटर का पारा अपनी छोर तक पहुंच गया था। उसे देखने से यह पता चला कि मैं 1,32,000 फुट अर्थात् पच्चीस मील की ऊंचाई पर उड़ रहा हूं। उस समय मुझे कुछ पृथ्वी मंडल का तीन सौ बीसवां भाग दिखाई पड़ रहा था। नौ बजे पूर्व दिशा में स्थित सारी भूमि मेरी दृष्टि से ओझल हो गई। उसी समय मुझे यह भी पता चला कि गुब्बारा उत्तर-पश्चिम की ओर तेज़ी से जा रहा है। यद्यपि मेरी दृष्टि के सामने बार-बार इधर-उधर तैरते फिरने वाले बादलों के कारण बाधाएं आ जाती थीं, फिर भी महासागर की उन्नतोदर स्थिति बिल्कुल स्पष्ट थी। मुझे अब पर्यवेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि हल्के-से-हल्का वाष्पपिण्ड भी समुद्र-तल से दस मील के ऊपर नहीं उठ सकता।

साढ़े नौ बजे मैंने वाल्व से मुट्ठी-भर पंख बाहर फेंकने का प्रयोग किया। मेरी आशा के अनुरूप वे तिरे नहीं, बल्कि बंदूक की गोली की भांति सीधे नीचे चले गए। वे एक साथ तीव्र गति से नीचे

जा रहे थे और कुछ ही सेकण्डों में वे दृष्टि से ओझल हो गए। पहले तो मैं समझ ही न सका कि इस असाधारण दृश्य से क्या निष्कर्ष निकालूं—यह विश्वास करता तो मेरे लिए कठिन था कि मेरी उड़ान की गति अकस्मात् बहुत अधिक बढ़ गई है। किन्तु शीघ्र मुझे पता चल गया कि अब वायुमण्डल बहुत ही विरल और सूक्ष्म हो गया और वह पंखों का बोझ संभालने में भी अक्षम है और वे सचमुच ही तीव्र गति से नीचे चले जा रहे हैं। मुझे उनके अवरोहण तथा अपने आरोहण के संयुक्त वेग पर महान आश्चर्य हो रहा था।

दस बजे तक मुझे मालूम होने लगा कि तुरन्त ध्यान देने योग्य कोई काम मेरे पास नहीं है। सब कुछ सरलता-पूर्वक अपने-आप हो रहा था। मेरा विश्वास था कि गुब्बारा प्रतिक्षण बढ़ती हुई गति से ऊपर जा रहा है, यद्यपि इस वृद्धि का पता लगाने का कोई साधन मेरे पास नहीं था (बैरोमीटर का पारद-संकेतांक बहुत पहले अपनी सीमा पर पहुंच चुका था)। मुझे किसी प्रकार की वेदना या विकलता नहीं थी और राटर्डम से विदा होने के बाद से इस समय मेरी तबीयत जितनी खुश थी उतनी पहले कभी न थी। अब मैंने यह देखने के लिए अपने विविध यन्त्रों-औज़ारों का परीक्षण आरम्भ किया कि वे किस स्थिति में हैं। फिर अपने कक्ष की वायु ताज़ा करने के प्रयत्न में लग गया। चाहे इतनी जल्दी-जल्दी हवा बदलना नितान्त

आवश्यक इन भी हो पर मैंने अपने स्वास्थ के विचार से हर चालीस मिनट बाद उसे बदलकर ताज़ा हवा कक्ष में भरने का निश्चय कर लिया। बीच-बीच में मैं ख्याली पुलाव भी पकाता जाता था। चन्द्रमा के निर्जन एवं स्वप्निल प्रदेशों में मेरी कल्पना कुलेल कर रही थी। अपने को मुक्त अनुभव करने के बाद वह एक छायामय एवं चंचल जगत् के नित्य-परिवर्तनशील आश्चर्यों के बीच थिरकती फिर रही थी। कहीं उसे गौरवशाली, कलादृत वन दिखाई पड़ते; कहीं विषम कगार नज़र आते; कहीं घोर रव के साथ अपार गर्त में गिरते प्रपात दृष्टि-पथ पर छा जाते थे। फिर अकस्मात् मैं उस प्रशान्त मध्यान्ह-एकान्त में पहुंच गया जहां आकाश की किसी वायु का प्रवेश नहीं था, और जहां अहिपुष्पों की विस्तृत हरियालियां और नाजुक कमलिनियां थकानभरी दूरियों पर फैली हुई थीं—सब शाश्वत् रूप से शान्त एवं निस्पन्द। फिर मैं यात्रा करके एक ऐसे देश में पहुंच गया जहां एक धुंधली और स्पष्ट झील फैली थी—झील जिसकी सीमा मेघों से बांधी गई थी। इस उदास झील पर स्वप्नों के मरुस्थल के समान लम्बे प्राच्य पादपों का एक विशाल वन खड़ा था। मैं यह भी अनुभव कर रहा था कि झील पर पड़नेवाली वृक्षों की छायाएं जिस सतह पर पड़ती हैं उसपर नहीं रहतीं, बल्कि धीरे-धीरे पर बराबर नीचे प्रवेश करती जाती हैं एवं तरंगों में निमग्न हो जाती हैं और

अब तरुओं के तनों से दूसरी छायाएं निरंतर उतरकर उनका स्थान ग्रहण करती रहती हैं। मैंने विचारमग्न होकर कहा–यही कारण है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता है झील का पानी काला, अधिकाधिक काला, होता जाता है, और ज्यों-ज्यों घण्टे पर घण्टे बीतते जाते हैं उसकी उदासी बढ़ती जाती है। किन्तु केवल इस तरह की कल्पनाएं ही मेरे दिमाग में नहीं उठ रही थीं। बीच-बीच में अत्यंत भयावने संत्रास की सम्भावना की कल्पना मात्र से मेरी आत्मा की अन्तरतम गहराइयां कांप उठती थीं। परन्तु इस प्रकार के विचारों की पीड़ा अधिक देर तक ठहर नहीं पाती थी, क्योंकि यात्रा के वास्तविक एवं भयावह खतरे मेरा अविभक्त ध्यान अपनी ओर खींच लेते थे।

5 बजे शाम को, जब मैं कमरे के वायुमण्डल को फिर से ताज़ा करने में लगा हुआ था, मैंने वाल्व से बिल्लियों और बच्चों पर नज़र डाली। मुझे प्रतीत हुआ कि बिल्ली फिर बड़ी तकलीफ में है। मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के समझ लिया कि सांस लेने की कठिनाई के कारण ही उसकी यह अवस्था है; किन्तु बच्चों के प्रयोग का परिणाम आश्चर्यजनक था। मै समझता था उन्हें भी कुछ न कुछ पीड़ा होगी, भले ही मां से कम हो। उतने से ही मेरे इस सिद्धान्त की पुष्टि हो जाती कि वायवीय दबाव का सहन अभ्यासगत हैं। मैं उन्हें स्वास्थ्य की इतनी अच्छी अवस्था में, पूर्ण नियमितता और

सरलता के साथ सांस लेते और किसी प्रकार की बैचेनी न अनुभव करते हुए देखने के लिए तैयार नहीं था। इस दृश्य से मेरे ही सिद्धान्त की पुष्टि हुई। मालूम हुआ कि चतुर्दिक की सूक्ष्मवायु उस प्राणी के जीवन के लिए रासायनिक रूप से इतनी अपर्याप्त नहीं है जो उसी के बीच पैदा हुआ है। ऐसे जीव को शायद श्वासक्रिया में होने वाली कठिनाई का पता न लगेगा, बल्कि उल्टे सघन वायुमण्डल में प्रवेश करने पर उसे वे वेदनाएं-व्यथाएं अनुभव होंगी जो मुझे विरल वातावरण में कुछ समय पूर्व अनुभव हो रही थीं। तब से मुझे इस बात से बड़ा दुःख होता रहा है कि इसी समय एक ऐसी भद्दी घटना हो गई जिससे मेरा बिल्ली परिवार नष्ट हो गया और मैं उस लाभ से भी वंचित हो गया जो उनको लेकर आगे जारी रहनेवाले प्रयोग से मुझे होता। बात यह थी कि जिस टोकरी में वे सब थे वह एक बटन में फंसी हुई लटक रही थी। मैने जब वाल्व में से पानी का प्याला उनके लिए टोकरी की ओर बढ़ाया तो मेरी कमीज़ की आस्तीन टोकरी के फंदे में उलझ गई जिससे खिंचकर टोकरी बटन से अलग हो गई। इसमें सेकेण्ड का दसवां भाग भी न लगा होगा परन्तु इतनी देर में टोकरी अपनी सम्पूर्ण सामग्री के साथ आंख से ओझल हो गई। मेरी शुभाकांक्षाओं ने पृथ्वी तक इन प्राणियों को अनुसरण किया किन्तु मुझे इस बात की कोई आशा नहीं

रही कि बिल्ली या उसके बच्चों में से कोई अपने दुर्भाग्य की कहानी कहने के लिए बच रहेगा।

छः बजे मैंने देखा कि पूर्व दिशा में पृथ्वी के दृश्य भाग पर एक घनी छाया घिरती जा रही है। वह छाया तेज़ी से आगे बढ़ती जा रही थी, यहां तक कि सात बजने में पांच मिनट पहले सम्पूर्ण दृश्य पृथ्वी-मण्डल रात के अंधकार में डूब गया। किन्तु इसके बहुत देर बाद तक अस्तंगत सूर्य की किरणें गुब्बारे को आलोकित करती रहीं। यद्यपि मुझे पहले से ही इसका अनुमान था किन्तु इस बात से मुझे अपार खुशी हुई। यह स्पष्ट हो गया कि उदीयमान सूर्य का मैं उससे कई घण्टे पहले दर्शन करूंगा जब राटर्डम-निवासी पूर्व दिशा में स्थित होते हुए भी उसको देख पाएंगे। दिन-दिन मैं जितना ही ऊपर उठता जाऊंगा उतने ही अधिकाधिक समय तक मुझे सूर्य-प्रकाश का लाभ मिलता जाएगा। अब मैंने अपनी यात्रा का विवरण लिखने का निश्चय कर लिया। यह भी निश्चय किया कि एक से लगातार चौबीस घण्टे तक मैं एक दिन गिनूंगा, भले ही बीच में अन्धकार आए।

दस बजे रात मुझे नींद आने लगी, तब मैंने शेष रात के लिए लेटने का निश्चय किया, किन्तु फिर एक कठिनाई आ खड़ी हुई। बात साधारण थी किन्तु उस क्षण तक उसकी ओर मैंने ध्यान ही

न दिया था। प्रश्न यह था कि यदि मैं सो जाता हूं तो बीच-बीच में कक्ष में ताज़ी हवा भरना कैसे सम्भव होगा? एक ही हवा में एक घण्टे से ज़्यादा समय तक सांस लेना असम्भव था, यदि उसे सवा घण्टे भी किया गया तो परिणाम विनाशकारी हो सकते थे। इस पहेली पर विचार करते हुए काफी घबराहट होने लगी, और मैं जिन खतरों और कष्टों के बीच से गुज़र चुका था उनको देखते हुए यह स्वाभाविक ही था कि मैं उसपर गम्भीरता से विचार करता। घबराहट यहां तक हुई कि ऊपर न जाकर नीचे उतरने की आवश्यकता महसूस होने लगी। किन्तु यह हिचकिचाहट क्षणिक थी। मैंने सोचा कि मनुष्य तो प्रथाओं और आदतों का गुलाम है। जीवन के दैनिक क्रम में उसे बहुत-सी बातें अनिवार्यतः महत्वपूर्ण मालूम पड़ती हैं, किन्तु वस्तुतः वे इसलिए वैसी लगती हैं कि उसको उनकी आदत पड़ गई है। यह तो निश्चय ही था कि बिना सोये मेरा काम चल नहीं सकता किन्तु निद्राकाल में यदि घण्टे-घण्टे भर बाद मैं जग जाने का प्रबन्ध कर लूं तो मुझे कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए। कक्षा में ताज़ी हवा भरने में मुश्किल से पांच मिनट लगते थे। सारी कठिनाई इस बात को लेकर थी कि ठीक समय नींद खुलने या उठजाने का कोई उपाय होना चाहिए। इस समस्या को हल करने में मुझे काफी परेशानी उठानी पड़ी। मैंने एक ऐसे छात्र की कहानी सुनी थी जो

पढ़ाई के समय सो जाने से बचने के लिए अपने हाथ में तांबे का एक गोला रखता था। अपनी कुर्सी के नीचे उसने तांबे का एक बड़ा पात्र रख लिया था। जब वह ऊंघने लगता, गोला हाथ से उस पात्र में गिरता और उसकी आवाज़ से वह खड़बड़ाकर उठ जाता था। परन्तु मेरी स्थिति दूसरी थी और वैसी कोई तरकीब करना मेरे लिए सम्भव न था। अन्त में बड़े सोच-विचार के बाद मैंने एक उपाय खोज निकाला। भले वह देखने में साधारण लगे किन्तु उस समय तो मुझे यही प्रतीत हुआ कि मैने खुर्दबीन, वाष्प-इंजिन या मुद्रण यंत्र-जैसा एक महत्वपूर्ण आविष्कार कर लिया है।

इस समय गुब्बारा जिस ऊंचाई पर उड़ रहा था उसमें उसकी ऊर्ध्वगति अविराम और सीधी थी और कार उसमें इतनी अच्छी तरह बंधी हुई थी कि ज़रा भी इधर-उधर नहीं हो रही थी। यह स्थिति मेरी योजना के लिए अनुकूल थी। मेरे साथ जो पानी था वह पांच-पांच गैलन के पीपों में भरा कार के अन्तर्भाग में क्रमबद्ध, सुरक्षित एवं बंधा हुआ रखा था। मैंने इनमें से एक को निकाल लिया, फिर दो रस्सियां लेकर टोकरी के मेड़रे के दोनों ओर बांध दिया (जैसा झूले में बांधते हैं) उसके बीच में खूब जमाकर पानीवाला पीपा रखा। उसके कुछ नीचे काठ के तख्ते का पटरा रखा, जिसके बीच में और पहले पीपे के ठीक नीचे एक मिट्टी की एक

मटकी रख दी। अब पहले पीपे की पेंदी में हिसाब से ऐसा छेद किया कि उससे टपकते हुए जल से वह मटकी ठीक साठ मिनट में भर जाय। मैंने अपना बिछौना कार की फर्श पर इस तरह बिछाया कि लेटने पर मेरा सिर उस मटकी के बिल्कुल नीचे रहे। सोचा यह कि जब घण्टे-भर में मटकी भर जाएगी और मैं न जागूंगा तो पानी मेरे मुंह पर गिरने लगेगा जिससे मैं तुरन्त उठ जाऊंगा चाहे मेरी नींद कितनी ही गहरी हो।

इन सब बातों की व्यवस्था पूर्ण करने में ग्यारह बज गए। इसके बाद अपने आविष्कार की कुशलता में विश्वास लिए मैं तुरन्त बिस्तरे पर पड़ गया। इस मामले में मुझे निराशा भी नहीं हुई। प्रत्येक साठ मिनट पर मेरा कालमापक (क्रोनोमीटर) मुझे जगा देता और मैं कक्ष में ताज़ी हवा भरने के बाद पुनः बिस्तर पर जा लेटता। नींद में इस प्रकार की नियमित बाधाओं के कारण मुझे उससे कम ही कष्ट हुआ, जितना मैंने ख्याल किया था और जब मैं दिन में उठा तो उस समय सात बजे थे और सूर्य मेरी क्षितिज-रेखा पर कई अंश ऊपर चढ़ गया था।

एप्रिल 3 :

मैंने गुब्बारे को बहुत अधिक ऊंचाई पर पाया। पृथ्वी की

उन्नतोदरता बहुत बढ़ी हुई थी। मेरे नीचे महासागर में काले धब्बे दिखाई दे रहे थे। निश्चय ही ये सब टापू थे। उत्तर दिशा में बहुत दूर क्षितिज पर मुझे मान लेने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि यह ध्रुव सागर की हिमानियों का दक्षिणी किनारा है। मेरी उत्सुकता बहुत बढ़ गई क्योंकि मुझे इसके आगे सुदूर उत्तर से गुज़रने की आशा थी–बल्कि कभी-कभी यह कल्पना भी होती थी कि मैं ठीक ध्रुवप्रदेश के ऊपर से ही गुजरूंगा। मुझे दुखः हुआ कि अधिक ऊंचाई के कारण मैं उसका उतना अच्छा सर्वेक्षण न कर पाऊंगा जितना मैं करना चाहता था। फिर भी बहुत सी बातों का पता चलेगा। आज कोई और असाधारण बात नहीं हुई। मेरे सब यन्त्र ठीक काम करते रहे और गुब्बारा अपनी गति से उड़ता रहा। हां, सर्दी बहुत थी और मैंने ओवरकोट से अपने को अच्छी तरह ढक लिया। जब पृथ्वी पर अन्धकार छा गया तब मैंने बिस्तरे की शरण ली, यद्यपि हमारे चारों ओर अब भी कई घण्टों तक दिन का प्रकाश फैला रहा। जलघड़ी उसी प्रकार अपने कर्त्तव्य का पालन करती रही और अगले प्रभात तक मैं सर्वाधिक बाधाओं के साथ भी भलीभांति सोया।

एप्रिल 4 :

अच्छे स्वास्थ्य एवं स्फूर्ति के साथ उठा किन्तु सागर के रूप

में जो विलक्षण परिवर्तन हो गया था उसे देखकर विस्मय हुआ। अभी तक उसका जो गहरा नीला रंग था, वह बदलकर भूरापन लिए सफेद हो गया था और उसमें ऐसी चमक थी कि आंखें चौंधिया जाती थीं। द्वीप भी अब दिखाई नहीं पड़ते थे। यह कहना मुश्किल था कि वे दक्षिणपूर्व की ओर क्षितिज के नीचे चले गए हैं या ऊंचाई की वृद्धि ने उन्हें मेरी आंखों से ओझल कर दिया है। मुझे पिछली बात पर ज़्यादा भरोसा था। उत्तर दिशा में हिम-गोलक अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा था। अब सर्दी उतनी ज़्यादा न थी। कोई खास बात नहीं हुई, और मैं अपने साथ जो किताबें लाया था, उन्हें सारा दिन पढ़ता रहा।

एप्रिल 5 :

यह विचित्र दृश्य देखा कि जब पृथ्वी-तल का सम्पूर्ण दृश्य भाग तमसाच्छन्न था तब हमारे सामने सूर्योदय हो रहा था। हां, कुछ समय बाद सब जगह प्रकाश फैल गया और उत्तर की ओर मुझे फिर हिम-रेखा के दर्शन हुए। अब वह बहुत स्पष्ट हो गई थी और महासागर के जल की अपेक्षा उसका रंग कहीं ज्यादा गहरा था। स्पष्ट था कि मैं बड़ी तीव्र गति से उधर ही जा रहा हूँ। ऐसा आभास हुआ कि पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं में मुझे किसी भी क्षेत्र की झलक

दिखाई पड़ रही है परन्तु निश्चित रूप से मैं कुछ नहीं कह सकता। मौसम समशीतोष्ण है। दिन में कोई खास बात नहीं हुई । जल्दी सोने चला गया ।

एप्रिल 6 :

हिम-गोलक को थोड़ी दूरी पर देखकर आश्चर्य हुआ। हिम-प्रदेश उत्तर की ओर क्षितिज पर दूर तक फैला हुआ था। इससे स्पष्ट हो गया कि यदि गुब्बारा अपने वर्तमान यात्रा-पथ में ही उड़ता है तो शीघ्र ही वह जमे हुए महासागर के ऊपर पहुंच जाएगा। अब मुझे जरा भी सन्देह नहीं रह गया कि मैं ध्रुव को देख सकूंगा। सारे दिन में हिम के निकटतर होता गया। रात में होते-होते मेरे क्षितिज की सीमा अकस्मात् बढ़ गई। निस्सन्देह इसका कारण यही था कि अब पृथ्वी नारंगी-समान चपटे सिरोंवाले अण्डे के आकार की हो गई थी और में आर्कटिक प्रदेश के चपटे भागों के ऊपर उड़ रहा था। जब मेरे चतुर्दिक अन्धकार छा गया तो मैं बड़ी दुश्चिन्ता के साथ सोने चला गया। दुश्चिन्ता यह थी कि जिसे देखने की इतनी उत्सुकता है कहीं वह रात के अंधेरे में ही गुजर न जाए और मैं फिर उसे देखने का मौका न पा सकूं।

एप्रिल 7 :

जल्दी उठा, और स्वयं उत्तरी ध्रुव को अपने सामने देखकर हर्षविभोर हो गया। यहां वह फैला हुआ था, हमारे पैरों के ठीक नीचे किन्तु दुःख की बात यह थी कि मैं इतनी ऊंचाई पर पहुंच गया था कि कुछ भी ठीक-ठीक नहीं दिखाई पड़ता था। मैंने बैरोमीटर के पिछले गतिमान के अनुसार हिसाब लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि एप्रिल 7 को चार बजे प्रातः मैं समुद्रतल से कम से कम 7254 मील की ऊंचाई पर हूं। वैसे यह ऊंचाई बहुत ज़्यादा मालूम पड़ती है परन्तु सम्भवतः यह वास्तविक ऊंचाई से कम ही जोड़ी गई है। जो हो, निस्सन्देह, मैं पृथ्वी के प्रमुख सम्पूर्ण व्यास को देख रहा था–सम्पूर्ण उत्तरी गोलार्द्ध मेरे नीचे अक्षरपट की भांति फैला हुआ था। स्वयं विषुवत् रेखा की महापरिधि मेरे क्षितिज की सीमा-रेखा बन गई थी। परन्तु श्रीमान-द्वय आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि आर्कटिक प्रदेश की अब तक अनाविष्कृत सीमाएं बिल्कुल मेरे नीचे होते हुए भी इतनी धूमिल हैं, दृष्टि-विन्दु से इतनी दूरी पर हैं कि उनकी बहुत ठीक परीक्षा सम्भव नहीं है। फिर भी जो कुछ दिखाई पड़ रहा था वह विलक्षण था। पहले जिस हिम-गोलक का उल्लेख किया जा चुका है, और जिसे मानवीय अनुसंधान की सीमा कहना चाहिए, वहां से उत्तर की ओर जहां तक दृष्टि जाती थी, हिम

की एक अखण्ड चादर फैली हुई थी। चंद डिग्रियों तक तो उसकी सतह चपटी थी, किन्तु बाद में झुककर फिर उन्नतोदर होती गोलकेन्द्र में ध्रुव से जा मिली थी; उसका धूसर रंग यद्यपि हर जगह एक-सा गहरा नहीं था, किन्तु दृश्य गोलार्द्ध के किसी भी स्थान से अधिक गहरा था, और कहीं-कहीं तो परिपूर्ण एवं अगम्य कालिमायुक्त था। इसके आगे कुछ विशेष दिखाई नहीं पड़ता था। 12 बजे तक गोल केन्द्र अपनी परिधि में काफी छोटा हो गया और 7 बजे शाम तक दृष्टि से बिल्कुल ओझल हो गया क्योंकि इस समय गुब्बारा हिम के पश्चिम अंचल से गुज़र रहा था, वह तेज़ी से विषुवत् रेखा की ओर बहा चला जा रहा था।

एप्रिल 8 :

देखा कि पृथ्वी के बाह्य व्यास में ह्रास होता जा रहा है। उसके सामान्य आकार एवं रंग में भी बड़ा परिवर्तन नज़र आ रहा था। सारा दृश्य-क्षेत्र हलके पीत रंग की विविध मात्राओं में रंग गया था और कुछ भागों में तो रंग की चमक इतनी तेज़ थी कि देखने में आंखों को तकलीफ होती थी। पृथ्वी की सतह के कुछ ऊपर घने बादल छाये हुए थे जिसके धुंधलके के कारण देखने में बड़ी बाधा पड़ती थी और बीच-बीच में ही पृथ्वी की झलक मिल पाती थी।

यों तो प्रत्यक्ष दर्शन में इस प्रकार का अवरोध न्यूनाधिक मात्रा में पिछले अड़तालीस घण्टों से मुझे कष्ट देता रहा है किन्तु वर्तमान ऊंचाई से ऐसा लगता था, मानो वाष्प के तिरते पिण्ड एकत्र हो गए हैं। इसलिए ज्यों-ज्यों मैं ऊपर उठता जाता था, यह असुविधा बढ़ती जाती थी। फिर भी इतना तो मैं आसानी से देख सकता था, कि गुब्बारा इस समय उत्तरी अमेरिका महाद्वीप की महती झीलों के क्षेत्र के ऊपर उड़ रहा है तथा दक्षिण की ओर जा रहा है और शीर्घ ही मैं उष्ण कटिबन्ध क्षेत्रों में पहुंच जाऊंगा। इससे मुझे हार्दिक सन्तोष हो रहा था और इसे मैंने अपनी अन्तिम सफलता के शुभ शकुन के रूप में ग्रहण किया। अभी तक मैं जिस दिशा में जा रहा था, उससे मेरे मन में बड़ी बेचैनी थी क्योंकि यह स्पष्ट था कि यदि उस दिशा में मैं और ज़्यादा देर तक उड़ता रहा तो चन्द्रमा पर मेरे पहुंचने की कोई संभावना ही न रह जाएगी क्योंकि उसका परिक्रमा-पथ रविमार्ग की ओर केवल 5°8'48" के लघुकोण में झुका हुआ है।

एप्रिल 9 :

आज पृथ्वी का व्यास बहुत कम हो गया और सतह का रंग हर घण्टे प्रगाढ़ पीत होता गया। गुब्बारा दक्षिण दिशा में अपने पथ

पर सीधे बढ़ता रहा और नौ बजे रात को मैक्ज़िकी खाड़ी की उत्तरीय छोर पर पहुंच गया।

एप्रिल 10 :

आज सुबह पांच बजे एक ऊंची, पड़पड़ाहट की भयानक आवाज़ से एकाएक मेरी नींद टूट गई। मैं समझ न पाया कि क्या बात है। आवाज़ बहुत थोड़ी देर रही किन्तु जबतक भी रही वैसी आवाज़ मैंने जीवन में कभी नहीं सुनी थी। यह कहना तो बाहुल्य मात्र है कि मैं अत्यधिक विकल हो उठा क्योंकि पहले मेरे ध्यान में यही आया कि गुब्बारा फट गया है। मैंने बड़ी सावधानी के साथ अपने सम्पूर्ण यंत्रों की परीक्षा की; मुझे कोई भी चीज़ अव्यवस्थित या विशृंखल नहीं दिखाई पड़ी। दिन के अधिकांश भाग में इसी असाधारण घटना पर विचार करता रहा, किन्तु उसके कारण का कुछ पता नहीं लगा। बड़ी विकल एवं उद्विग्न मनःस्थिति में तथा असन्तोष के साथ मैं सोने चला गया।

एप्रिल 11 :

पृथ्वी के व्यास में आश्चर्यजनक ह्रास दिखाई पड़ा; इसके साथ पहिली ही बार चन्द्रमा में बड़ी वृद्धि दिखाई पड़ी। उसे पूर्णाकार

ग्रहण करने में कुछ ही दिनों की देर थी। अब जीवन-धारणार्थ कक्ष की वायवीय वायु को सघन करने में देर तक और कठोर श्रम करना पड़ता है।

एप्रिल 12 :

गुब्बारे की दिशा में अनोखा परिवर्तन हो गया। यद्यपि इसकी आशा पहले से ही थी किन्तु इससे मुझे निर्मल आनन्द हुआ। अपने पहले यात्रा-पथ में दक्षिण आक्षांश के बीसवें समानान्तर तक पहुंच जाने के बाद वह अकस्मात पूर्व की ओर न्यूनकोण बनाता घूम गया, और इस प्रकार सारे दिन, यदि पूर्णतः नहीं तो अधिकाधिक, चान्द्र दीर्घवृत्त के यथार्थ स्तर पर चलता रहा। इस दिशा-परिवर्तन के कारण कार काफी हिलने लगी थी—और यह डगमगाहट थोड़ी-बहुत कई घण्टों तक बनी रही।

एप्रिल 13 :

10 तारीख को जो विस्फोटक भयावनी आवाज़ हुई थी, वह आज फिर सुनाई पड़ी। बड़ी देर तक उस विषय पर सोचता रहा किन्तु किसी सन्तोषजनक निष्कर्ष पर पहुंच नहीं सका। पृथ्वी के प्रतीयमान व्यास में अत्यधिक कमी हो गई। अब यह व्यास गुब्बारे

से बहुत-कुछ पच्चीस अंश के कोण पर था। मेरे शीर्षबिन्दु पर होने के कारण चन्द्रमा दिखाई नहीं पड़ा। अब भी मैं दीर्घवृत्त के क्षेत्र में चला जा रहा था किन्तु पूर्व की ओर बहुत कम बढ़ पाया।

एप्रिल 14 :

पृथ्वी के व्यास में तीव्र गति से ह्रास : आज मैं इस विचार से बहुत प्रभावित हुआ कि गुब्बारा वस्तुतः नीचांच्च रेखा (एपसाइड्स) पर भ्रसमीपक बिन्दु (पेरीगी) की ओर चला जा रहा है। दूसरे शब्दों में इस बात को यों भी कह सकते हैं वह ऐसे मार्ग का अनुसरण कर रहा है जो उसे चन्द्रमा के उस भाग में ले जाएगा जो पृथ्वी के निकटतम है। स्वयं चन्द्रमा हमारे सिर पर था, इसलिए मेरी आंखों से ओझल था। कक्ष के वायुमण्डल को घनीभूत करने में देर तक घोर श्रम करना पड़ा।

एप्रिल 15 :

अब महाद्वीपों एवं सागरों की रूपरेखाएं तक स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ती थीं। लगभग बारह बजे मुझे तीसरी बार वह अपार्थिव एवं भयानक आवाज़ सुनाई पड़ी जो मुझे पहले भी विस्मित कर चुकी थी। इस बार वह कुछ क्षणों तक जारी रही और भीषण रूप से प्रबल

होती गई। अन्त में जब मैं उसके कारण भयभीत और हक्काबक्का न जाने किस विनाश की प्रतीक्षा में खड़ा था, कार अत्यधिक प्रबलता से कांपने लगी और किसी ऐसे पदार्थ का, जिसे मैं पहिचान नहीं सका, भीमाकार प्रज्वलित पिण्ड, हज़ारों बिज़लियों की कड़क के साथ, गरजता और गड़गड़ाता गुब्बारे के पास से गुज़रा। जब मेरा भय एवं विस्मय कुछ अंशों में, शान्त हुआ तो मुझे यह कल्पना करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई कि जिस दुनिया की ओर मैं इतनी तेज़ी से चला जा रहा हूं यह उसी से उद्भूत कोई शक्तिमान ज्वालामुखीय खण्ड था–और बहुत संभवतः पदार्थों के उस विलक्षण वर्ग में से कोई था जो कभी-कभी धरती पर पाए जाते हैं और जिनको किसी अधिक उपयुक्त संज्ञा के अभाव में 'उल्काजात प्रस्तर' के नाम से पुकारा जाता है।

एप्रिल 16 :

जब मैं दोनों पार्श्व वातायनों से बारी-बारी ऊपर की ओर देख रहा था तो अत्यंत प्रसन्नता के साथ मैंने देखा कि गुब्बारे की वृहत परिधि के हर तरफ चन्द्रबिम्ब का एक लघु अंश फैला हुआ है। मेरी उत्तेजना सीमा पर पहुंच गई क्योंकि अब मुझे ज़रा भी संदेह नहीं रह गया कि शीघ्र ही मैं अपनी संकटापन्न यात्रा की मंज़िल तक

पहुंचने वाला हूं। वायु-संघनक के साथ किया जाने वाला श्रम अब उत्पीड़न की सीमा पर पहुंच गया था, और अब मुझे श्रम से कोई अवकाश कठिनाई से ही मिलता था। नींद का तो अब कोई सवाल ही नहीं था। मैं बड़ा अस्वस्थ हो गया और मेरा शरीर थकान से कांपने लगा। मानव-प्रकृति के लिए ज़्यादा देर ऐसी गहरी व्यथा सहन करना असंभव था। अन्धकार का जो लघु मध्यान्तर आया उसमें फिर उल्का-पिण्ड मेरे पास से गुज़र गया। बार-बार इस प्रकार की घटना होने के कारण मेरी भीति और चिन्ता बहुत बढ़ गई।

एप्रिल 17 :

यह प्रभात मेरी यात्रा में एक युग सिद्ध हुआ। यह बात याद होगी कि तेरह तारीख को पृथ्वी पच्चीस अंश का कोणिक विस्तार बना रही थी। चौदह को इसमें बहुत ह्रास हो गया। पन्द्रह को उसमें और भी कमी हो गई। सोलह की रात को सोने जाते समय देखा कि वह केवल सवासात अंश तक ही रह गया है इसलिए जब मैं आज सुबह थोड़ी देर की बाधित निद्रा के बाद उठा तो मेरे लिए यह देखकर चकित होना स्वभाविक ही था कि मेरे नीचे पृथ्वी की सतह अकस्मात् एवं आश्चर्यजनक रूप से आयतन में इतनी बढ़ गई है कि अपने प्रतीयमान कोणिक व्यास में उनतालीस अंश

बना रही है। मुझे लगा, जैसे बिजली मार गई हो। उस समय मेरे मन पर जो भय और विस्मय छा गया और उनसे जिस प्रकार मैं अभिभूत एवं वशीभूत हो गया उसे शब्दों में या किसी भी पार्थिव साधन से प्रकट नहीं किया जा सकता। मेरे घुटने बैठे जा रहे थे, मेरे दांत बज रहे थे, मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे। मेरे मन में पहला तूफानी विचार यही आया कि तब निश्चय ही गुब्बारा फट चुका है, निश्चय ही उसका विस्फोट हो चुका है। मैं गिर रहा हूं, गिर रहा हूं, प्रचण्ड तूफानी और अतुलनीय वेग से गिर रहा हूं। अत्यंत शीघ्रता के साथ जो असीम दूरी मैंने पार कर ली है उसके हिसाब से तो पृथ्वी-तल से टकराने और विनष्ट हो जाने में मुझे दस मिनट से ज़्यादा नहीं लगेंगे। किन्तु अन्त में विवेक ने मेरी रक्षा की। मैं रुक गया, मैंने विचार किया, और तब मुझे अपनी उक्त कल्पना में सन्देह होने लगा। ऐसा होना असंभव है। मैं हर्गिज़ इस तेज़ी से नीचे नहीं आ सकता। यद्यपि मैं अपने नीचे की सतह के पास पहुंच रहा हूं परंतु पहले जिस वेगवती गति की मैंने कल्पना की थी, वैसी गति नहीं हो सकती। इस विचार से मेरे मन की उद्विग्नता कुछ शान्त हुई और तब मैं उचित दृष्टिकोण से घटना पर विचार करने लगा। ऐसा लगा कि विस्मय के कारण मेरा होश ठिकाने न रहा होगा तभी तो मैं अपने नीचे की सतह और अपनी

धरती माता की सतह के बीच आकार-प्रकार में जो महान अन्तर था, उसे देख नहीं पाया? अब तो धरती की सतह मेरे सिर के ऊपर थी और गुब्बारे के कारण बिल्कुल छिपी हुई थी, जबकि चांद–हां खुद चांद अपनी सम्पूर्ण विभूति के साथ मेरे नीचे चरणों में पड़ा हुआ था।

घटनाओं की स्थिति के इस असामान्य परिवर्तन ने मेरे मन में जो मूर्छा और विस्मय उत्पन्न कर दिया वह भी दुस्साहस का ही ऐसा अंश था जिसकी व्याख्या संभव नहीं है। यह उलट पुलट अपने में न केवल प्राकृतिक एवं अनिवार्य थी बल्कि बहुत पहले से उसकी कल्पना की गई थी कि जब मैं अपनी यात्रा की आखरी मंज़िल पर पहुंचूंगा तो उपग्रह का आकर्षण ग्रह के आकर्षण को दबा लेगा या और स्पष्ट शब्दों में इसे यों कहेंगे कि वहां पृथ्वी के प्रति गुब्बारे का गुरुत्वाकर्षण चन्द्रमा के प्रति उसके गुरुत्वाकर्षण से कम हो जाएगा। इस प्रकार जब मैं गहरी नींद से उठा तो यह आश्चर्यजनक दृश्य देखकर मेरे होश-हवास गुम हो गए–ऐसा दृश्य जिसके देखने की आशा तो मुझे थी परंतु इतनी जल्द, इसी क्षण उसे देख पाऊंगा, यह आशा नहीं थी। यह आवर्त्तन हुआ तो सरल एवं क्रमिक ढंग से ही होगा। फिर इसी बात का क्या ठिकाना है कि घटना के समय यदि मैं जगता होता तो किसी विपर्यय या अपवर्तन के आन्तरिक

साक्ष्य से अर्थात् किसी शारीरिक असुविधा या मेरे यंत्र की किसी विशृंखलता से मुझे उसका पता चल ही जाता?

यह कहने की तो कोई आवश्यकता नहीं कि अपनी स्थिति का ठीक ज्ञान होने, और जिस आतंक ने मेरी आत्मा की सम्पूर्ण शक्ति को चूस लिया था उससे मुक्त होने पर मेरा समस्त ध्यान चन्द्रमा के सामान्य भौतिक रूप-दर्शन में लग गया। वह मेरे नीचे, एक चित्र की भांति, फैला हुआ था, और यद्यपि अब भी मेरी समझ से वह कुछ कम दूरी पर न था, उसकी सतह पर की गहरी दरारें अत्यन्त मोहक एवं अकथनीय विशिष्टताओं के साथ मेरी दृष्टि में स्पष्ट थीं। पहिली ही नज़र में मैंने देख लिया कि वहां महासागर या समुद्र, बल्कि किसी झील या नदी, या किसी प्रकार के जलाशय, का एकान्त अभाव है। वहां की भूतात्विक अवस्था में यह अत्यन्त असाधारण बात थी। फिर भी यह कहने में विचित्र-सा लगता है कि मैंने वहां जलोढ़ प्रकृति के विशाल समतल क्षेत्रों को देखा, यद्यपि गोलार्द्ध का जो भाग दिखलाई पड़ रहा था, उसका अधिकांश असंख्य ज्वालामुखीय पर्वतों से भरा था। वे पर्वत शुण्डाकार और देखने में प्राकृतिक की अपेक्षा कृत्रिम फुलाव-जैसे अधिक लगते थे। इनमें जो सबसे ऊंचे थे, उनकी आनुलम्बिक ऊंचाई पौने चार मील से अधिक नहीं थी। किन्तु कैम्पी फ्लैगराई के ज्वालामुखीय जनपदों का एक मानचित्र

आपको उनके सामान्य तल की उससे ज़्यादा अच्छी जानकारी देगा, जितना मैं अपने अयोग्य वर्णन में दे सकता हूं। इनका अधिकांश भाग अब भी विस्फोट की अवस्था में था और अपने गलतनाम से पुकारे जानेवाले तथा मेरे गुब्बारे के पास आ-आ कर गिरनेवाले उल्का-प्रस्तरों की बार-बार होती दहाड़ से अपने क्रोध एवं शक्ति का परिचय दे रहा था।

एप्रिल 18:

आज मैंने चन्द्रमा के बाह्यकार में बहुत ज़्यादा वृद्धि देखी। इसके साथ ही मेरे अवतरण का वेग इतना बढ़ गया कि मुझे भय और चिन्ता होने लगी। यह स्मरण रखने की बात है कि जब मैं चन्द्रलोक की यात्रा के विषय में आरम्भिक कल्पनाएं करने में लगा था तब मैं हिसाब लगाकर इस निष्कर्ष पर पहुंचा था कि उसके सन्निकट के वायुमण्डल का घनत्व ग्रह के आयतन के अनुपात में ही होगा, यद्यपि इसके प्रतिकूल अनेक मत थे और सामान्य विश्वास तो यही था कि चान्द्रायण वायुमण्डल जैसी किसी चीज़ का अस्तित्व ही नहीं है। किन्तु एंके-धूमकेतु तथा राशिचक्रीय प्रकाश के विषय में जो कुछ मैं पहले लिख चुका हूं, उसके अतिरिक्त लिलियेन्थल के श्री श्रोयतेर के कतिपय विचारों से भी मेरे विश्वास को प्रबल

समर्थन प्राप्त हुआ था। श्रोयतेर सूर्यास्त होने के बाद ही संध्याकाल में ढाई दिन के चन्द्र को कृष्णांश के दृश्य होने के पूर्व से तब तक देखा करते थे जब तक वह दिखलाई पड़ने लगता था। अपने धूमिल विस्तार में दो शीर्ष झुण्डाकार-से लगते थे और हरएक का सुदूरतम छोर सूर्य-किरणों के क्षीण आलोक से आलोकित रहता था। यह अवस्था काला गोलार्द्ध दिखलाई देने के पहले होती थी। इसके बाद शीघ्र ही सम्पूर्ण कृष्णांश आलोकित हो उठता था। गोलार्द्ध के भी परे शीर्षों का यह विलम्बीकरण मेरी राय में, चन्द्र के वायुमण्डल पर पड़नेवाली सूर्य-किरणों की वक्रता के कारण उत्पन्न होता है। मैंने यह हिसाब भी निकाला था कि वायुमण्डल की ऊंचाई 1356 पैरिसफुट होनी चाहिए क्योंकि इस ऊंचाई से कृष्ण गोलार्द्ध पर इतना वक्र प्रकाश फेंका जा सकता है कि संध्यालोक उस प्रकाश से अधिक दीप्त हो जो चन्द्र के 32° पर स्थित होने पर पृथ्वी-द्वारा प्रतिच्छायित होता या फेंका जाता है। मैंने यह भी अनुमान लगाया कि सूर्य-किरण को वक्र करनेवाली अधिक से अधिक ऊंचाई 5376 फुट हो सकती है। मेरे इन विचारों को दार्शनिक विवरणों की बयासीवीं जिल्द से भी बड़ा बल और समर्थन मिला था। इस जिल्द में यह विवरण मिला था कि गुरु के उपग्रहों के तारा-प्रच्छादन (अकल्टेशन) पर, तीसरा, 1" या 2" अंशों में

अस्पष्ट होने के बाद, विलुप्त हो गया और चौथा भी, छोर पर अदृश्य रह गया।[1]

अपने द्वारा कल्पित सघनता की दशा में स्थित वायुमण्डल का प्रतिरोध या ज़्यादा अच्छी तरह कहें तो साहाय्य पर ही मेरे अन्तिम अवतरण की धारणा निर्भर थी। इसलिए यदि मेरी धारणा गलत सिद्ध होती तो मेरे दुस्साहस का अन्तिम दृश्य यही होना था कि मैं उपग्रह की ऊबड़-खाबड़ सतह से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता। और सचमुच इस समय मेरे भीत होने के लिए हर तरह का कारण उपस्थित था। चन्द्रमा से मेरी दूरी तुलनात्मक दृष्टि से, बहुत नगण्य

1. हवेलियस लिखता है कि कई बार ऐसे पूर्णतः निर्मल आकाश में, जिसमें छठे एवं सातवें आकारमान (मैग्नीट्यूड) के तारे भी दिखाई पड़ते थे, मैंने पाया कि (चांद भी) उसी ऊंचाई पर, पृथ्वी से उतनी ही दूरी पर, उसी बढ़िया दूरबीन से देखने पर चन्द्र तथा उसके मैक्यूला (अंक) हर समय उतने हीं प्रकाशमान नहीं लगते है, न चन्द्रमा में है, न दर्शक की आंख में है बल्कि चन्द्रमा के निकटवर्ती और किसी वस्तु (वायुमण्डल) के अस्तित्व में है।

केसिनी ने कई बार यह पर्यवेक्षण किया कि शनि, गुरु एवं अन्य स्थिर तारे जब तारा-प्रच्छादन में चन्द्रमा के पास जाते हैं तो उनका गोलाकार अण्डाकार हो जाता है किन्तु अन्य तारा-प्रच्छादनों के समय उसे आकार में कोई परिवर्तन होता नहीं दिखाई पड़ा। इससे यह अनुमान किया जाता है कि कभी-कभी ऐसा समय आता है–सदा नहीं–जब चन्द्रमा के इर्द-गिर्द कोई सघन पदार्थ छा जाता है–ऐसा सघन पदार्थ जिसमें तारों की किरणें वक्र या तिरछी हो जाती हैं।

रह गई थी, फिर भी वायु-संघनक के उपयोग में मुझे जो घोर श्रम करना पड़ रहा था, उसमें कोई कमी नहीं आई थी और मुझे वायु की विरलता कम होने का कोई संकेत नहीं मिल रहा था।

एप्रिल 19:

आज सुबह नौ बजे मैं यह देखकर हर्ष-विभोर हो उठा कि चन्द्रमा की सतह भयावने रूप से निकट आ जाने और मेरे भय में वृद्धि हो जाने की दशा में ही वायुसंघनक का पम्प वायुमण्डल में परिवर्तन की सूचना दे रहा है। दस बजे तक मुझे यह विश्वास होने लगा कि सघनता में पर्याप्त वृद्धि हो चुकी है। ग्यारह बजे तक यन्त्र में नाममात्र का श्रम करने की आवश्यकता रह गई और बारह बजे कुछ हिचकिचाते हुए उस रक्तस्त्राव रोधक को मैंने खोलकर अलग रख दिया और वैसा करने पर भी जब किसी असुविधा का अनुभव नहीं हुआ तो मैंने कार के चतुर्दिक लगे उस खोल को हटा दिया। इसका जो परिणाम हो सकता था वही हुआ। ऐसे खतरनाक और जल्दबाज़ी-भरे-प्रयोग के कारण शरीर में ऐंठन और भयंकर शिरोवेदना होने लगी। किन्तु श्वासक्रिया-सम्बन्धी ये तथा अन्य कठिनाइयां इतनी अधिक तो नहीं थीं कि मेरे जीवन के लिए खतरनाक साबित होतीं और मैंने उन्हें इस आशा से सहन

करने का निश्चय कर लिया कि चन्द्रमा के पास के सघन वातावरण में पहुंचते ही उनसे मुझे मुक्ति मिल जाएगी। मेरा यह दृष्टिकोण भी जल्दबाज़ी से भरा था और यद्यपि मैंने इस आशा में धोखा नहीं खाया कि उपग्रह के भार के अनुपात में वायुमण्डल मिलेगा किन्तु मेरी यह कल्पना गलत थी कि यह सघनता, सतह पर भी, मेरे गुब्बारे के कार के महत् भार को सम्भालने के लिए पर्याप्त होगी। बात तो ऐसी होनी ही चाहिए थी, क्योंकि कल्पना यही है कि दोनों में से प्रत्येक ग्रह पर की वस्तुओं का वास्तविक गुरुत्व उनकी वायवीय सघनता के अनुपात में होता है। किन्तु मेरा खतरनाक अधःपात इस बात की पर्याप्त गवाही दे रहा था कि बात ऐसी थी नहीं। ऐसी क्यों नहीं थी, इसकी व्याख्या उन सम्भावित भूतात्विक उपद्रवों के सन्दर्भ में की जा सकती है जिनकी ओर पहले मैं इशारा कर चुका हूं। बात जो भी हो, इस समय तो तथ्य यही था कि मैं ग्रह के समीप था और अत्यन्त भयावनी गति से नीचे की ओर आ रहा था। मैंने ज़रा भी विलम्ब नहीं किया और झटपट पहले अधिभार (बैलेस्ट) के थैले फेंक दिए, फिर जल के पीपों को बाहर फेंका, फिर अपने संघनक यन्त्र और प्रसरणशील कक्ष को भी विदाई दी और अन्त में कार के अन्दर की एक-एक वस्तु के साथ भी वही व्यवहार किया। किन्तु इन सब बातों का कोई फल

नहीं निकला। अब भी मैं भयंकर तेज़ी के साथ गिर रहा था और अब सतह से आधा मील से ज़्यादा दूरी पर नहीं था। अंतिम उपाय के रूप में मैंने पहले अपना कोट, हैट, जूते फेंकने के बाद, स्वयं कार को जिनका बोझ काफी था, गुब्बारे की रस्सियों से खोल कर गिरा दिया और तब गुब्बारे के जाल की रस्स्यिों को ही पकड़कर लटक गया। थोड़ा-सा जो समय मुझे मिला उसमें जहां तक दृष्टि गई मैंने यही देखा कि सारा देश लघु गृहों से भरा हुआ है। मैं इतना ही देख पाया था कि एक आनबान वाले नगर के केन्द्रस्थान में सिर के बल गिरा। जहां मैं गिरा उसके चारों ओर छोटे कुरूप लोगों की भीड़ जमा थी परन्तु उनमें से किसी ने न तो एक शब्द कहा, न मुझे किसी प्रकार की सहायता देने का कष्ट उठाया। वे भद्दे ढंग से खीस निपोरे मूर्खों के झुण्ड की भांति खड़े रहे और कूल्हों पर हाथ धरे तथा केहुनियां बाहर निकाले मुझे तथा मेरे गुब्बारे को संशय की दृष्टि से देखते रहे। मैंने घृणापूर्वक उनकी ओर से अपनी नज़र ऊपर की ओर उठाई और उस पृथ्वी को देखने लगा जिसे पिछले दिनों छोड़ा आया था और शायद सदा के लिए छोड़ आया था। मेरी पृथ्वी एक ऐसे विराट, धुंधले ताम्रफलक-सी दिखाई पड़ रही थी जिसका व्यास लगभग 2° का रहा होगा और जो मेरे ऊपर अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से रखा हुआ था। उसके एक

छोर पर अत्यन्त प्रदीप्त स्वर्ण की अर्द्धचन्द्राकार झालर लगी हुई दिखाई दे रही थी। भूमि या जल का कहीं कोई आभास नहीं था। समस्त गोलक विविध धब्बों या चिन्हों से भरा था और उष्ण कटिबन्धीय तथा भूमध्य-रेखान्तरीय क्षेत्रों की मेखलाओं से पूर्ण था।

आप महामान्यों को विदित हो कि अनेक महती चिन्ताओं, अश्रुतपूर्व खतरों तथा अतुलनीय पलायनों से गुजरते हुए मैं राटर्डम से विदा होने के उन्नीसवें दिन एक ऐसी यात्रा की मंज़िल पर पहुंच गया जिसे निस्सन्देह पृथ्वी के किसी प्राणी द्वारा अब तक सोची या की हुई किसी भी यात्रा से असाधारण और महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। किन्तु अभी तो मुझे अपनी साहसिक कथा कहनी ही है। श्रीमन्-द्वय भली भांति कल्पना कर सकते हैं कि जो आदमी ऐसे ग्रह पर पांच साल रह चुका है जो न केवल अपनी विलक्षण प्रकृति के कारण उससे भी अधिक दिलचस्पी से भरा है, उसे राजकीय ज्योतिष महाविद्यालय को विशेष रूप से बताने योग्य कितनी बातों की जानकारी होगी–जानकारी जो आनन्दपूर्वक समाप्त इस यात्रा के अद्‌भुत विवरणों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। दरअसल, बात तो यही है। मेरे पास ऐसा बहुत कुछ है जिसे आप लोगों को सूचित करने में मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता होगी। ग्रह

की जलवायु; ताप एवं शीत के अद्‌भुत परिर्वतन; एक पक्ष में अप्रशमित एवं ज्वलनशील धूप तथा अगले पक्ष में ध्रुवीय शीत; सूर्य के नीचे एक बिन्दु से उसके सुदूर बिन्दु तक आर्द्रता का निरन्तर स्थानान्तरण; प्रवहमान जल का वैविध्यपूर्ण क्षेत्र; स्वयं यहां के निवासी, उनका आचरण, परम्पराएं एवं राजनीतिक संस्थाएं, उनकी विलक्षण शरीर रचना, उनकी कुरूपता, परिष्कृत वातावरण के लिए अनावश्यक होने के कारण उनकी कण-हीनता–फलतः वाणी के गुणों एवं प्रयोग के विषय में उनका अज्ञान; वाणी के स्थान पर अन्तःसंचारण की अनोखी प्रणाली; चन्द्रनिवासी विशिष्ट व्यक्ति का पृथ्वी निवासी विशिष्ट व्यक्ति के साथ अचिन्त्य सम्बन्ध–ठीक उसी प्रकार जैसे ग्रह एवं उपग्रह-गोलक में से प्रत्येक के निवासियों के जीवन एवं भाग्य दूसरे निवासियों के जीवन एवं भाग्य के अन्तर्ग्रथित हैं, फिर इन सबके ऊपर वे काले एवं भयावने रहस्य जो चन्द्रमा के बाह्य अंचलों के अन्दर छिपे पड़े हैं–उन अंचलों के अन्दर जो अपने ही अक्ष पर घूमते हुए भी मनुष्य की दूरबीन की पकड़ में न कभी आए हैं, न आएंगे–यह सब तथा इसके अतिरिक्त और बहुत-सी बातें हैं, जिन्हें मैं बड़ी खुशी से बता सकता हूं। किन्तु, संक्षेप में कहूं तो, मुझे अपना पुरस्कार भी चाहिए। मैं अपने कुटुम्ब और अपने घर को लौटने के लिए तरस

रहा हूं और भौतिक एवं आध्यात्मिक विज्ञानों की अनेक शाखाओं पर प्रकाश डालने की जो शक्ति मेरे अन्दर है उसके सम्बन्ध में और सूचनाएं देने के मूल्य के रूप में आपके सम्मानित माध्यम द्वारा मैं उस अपराध के लिए क्षमादान चाहता हूं जो राटर्डम से विदा होने के समय अपने तीन ऋणदाताओं की मृत्यु के रूप में मुझसे हो गया है। इस पत्र का यही उद्देश्य है। पत्रवाहक चन्द्रदेश का एक निवासी है जिसको मैंने पृथ्वी तक अपना सन्देश ले जाने के काम के लिए तैयार किया है। वह आप श्रीमानों की कृपा के लिए प्रतीक्षा करेगा और यदि किसी भी तरीके से क्षमादान प्राप्त हो सके तो उसे लेकर लौटेगा

मैं हूं श्रीमानों का दीन सेवक

हंस फाल

❑ ❑

इस अत्यन्त असामान्य दस्तावेज़ का पढ़ना समाप्त करके प्रोफेसर रब-ए-डब ने परम विस्मय की मुद्रा में अपना पाइप नीचे ज़मीन पर गिरा दिया, और माईनहीन सुपर्बस वॉन अण्डरडक ने अपना चश्मा उतारकर पोंछा, और उसे अपनी जेब में रख लिया, फिर अपने को और अपनी मर्यादा को इस कदर भूल गए कि आश्चर्य एवं प्रशंसा

की भावना में डूबे हुए तीन बार अपने चरणों पर घूम गए। मामले के विषय में कोई सन्देह नहीं था, क्षमादान तो प्राप्त किया जाना ही चाहिए। प्रोफेसर रब-ए-डब ने शपथपूर्वक प्रकट किया, और माननीय वान अण्डरडक ने अपने वैज्ञानिक बन्धु की भुजा पर हाथ रखते हुए कुछ ऐसा ही सोचा और कैसे क्या उपाय किया जाए, इसपर विचार के लिए चुपचाप अपने घर की ओर रवाना हो गए। जब दोनों नगराधिकारी के मकान पर पहुंचे तो प्रोफेसर ने सुझाया कि चूंकि सन्देशवाहक निश्चय ही राटर्डम के नागरिकों से भयंकर रूप में डरकर गायब हो गया है इसलिए क्षमादान का कोई विशेष उपयोग नहीं है क्योंकि सिवाय चन्द्र-निवासी के दूसरा कोई उसे लेकर इतनी भ्यानक दूरी की यात्रा नहीं कर सकता। इस विचार से नगराधिकारी भी सहमत हुए। इसलिए मामला यहीं खत्म हो गया। किन्तु अफवाहें और कल्पनाएं समाप्त नहीं हुईं। जब पत्र छप गया तो उसे लेकर तरह-तरह की गप्पें और सलाहें सामने आने लगीं। कुछ ने, जो ज़रूरत से ज़्यादा बुद्धिमान थे, यही कहकर अपने को हास्यास्पद बना लिया कि यह सारा मामला सिर्फ, एक धोखाधड़ी है। किन्तु ऐसे लोगों की बुद्धि में जो बात नहीं आती उन सबको वे धोखाधड़ी ही घोषित कर दिया करते हैं। मैं तो समझ नहीं पाता कि उनके पास क्या तथ्य हैं जिनपर वे ऐसी बात कह देते हैं। आइए देखें, वे क्या कहते हैं:

पहली बात–**राटर्डम** में कुछ ऐसे मसखरे हैं जिन्हें कुछ नगराधिकारियों और ज्योतिर्विन्दों से विशेष चिढ़ है।

वे कुछ समझते नहीं।

दूसरी बात–एक भद्दा छोटा वामन, जिसके दोनों कान, उसके सिर के पास से, किसी अपराध के लिए काट लिए गए थे, कई दिनों से पास के ब्रजेस नगर से गायब है।

तो फिर उससे क्या?

तीसरी बात–उस छोटे गुब्बारे में चारों ओर जो समाचारपत्र चिपकाये गये वे सब हालैण्ड के थे, इसलिए चन्द्रमा में तो उनका निर्माण हो नहीं सकता। वे गन्दे पत्र थे–बिल्कुल गन्दे और उनका मुद्रक ग्लुक बाईबिल हाथ में लेकर कसम खाने को तैयार हैं कि वे राटर्डम में ही छापे गए हैं।

वह भ्रम में हैं–निश्चित रूप से भ्रम में हैं।

चौथी बात–वह पियक्कड़ बदमाश हंसफाल खुद और तीन बेरोज़गार आदमी, जिन्हें वह अपना महाजन बताता है, अभी दो-तीन दिन पहले उपनगर के एक मद्यालय में देखे गए थे और सागर पार विदेश से यात्रा कर अपनी जेबें भरे हुए लौटे थे।

इस पर विश्वास न करो–इसके एक शब्द पर भी विश्वास न करो।

आखिरी बात–आम तौर से लोग यह राय प्रकट करते हैं, या उन्हें आम तौर से कहना चाहिए, कि राटर्डम नगर का ज्योतिष महाविद्यालय–तथा दुनिया के अन्य भागों के अन्य सब ज्योतिष विद्यालय भी–यदि सब विद्यालयों एवं ज्योतिषियों के बारे में वैसा न कहें तो भी–कम से कम उससे एक कण भी उत्तम, या महत्तर या बुद्धिमान नहीं हैं जितना उन्हें होना चाहिए।

•••